उर्दू शायरी का अपूर्व संकलन—

संपादक

कलीमउल्ला फारुकी 'कलीम'

शायर क्रम

उनको

जो

उर्दू लिपि न जानते हुये

भी

उर्दू साहित्य में रुचि रखते हैं

उर्दू परिचय

असद मुलतानी

जब पहले पहल अहले अरब हिन्द में आए।
इस देश को इस्लाम के आदाब सिखाए ॥
मुलतान पे क़ाबिज हुये और सिन्ध पे छाए।
और संस्कृत में अरबी लफ्ज मिलाए ॥

इस मेल से पैदा हुई एक ताजः ज़बां भी।
निकली जो दिलावेज भी, शीरीं भी खा भी ॥

रख्ते अबों सिन्ध पेगुजरीं कई सदिया।
रंगे अरबी इस में था पहले ही नुमायां ॥
वारिद हुए इस मुल्क में ईरानी ओ अफ़गा।
अब फ़ारसी अलफ़ाज हुये ज़ीनते दामा ॥

हिन्दी में बसी जब अबों फारस की खुशबू।
मुलतान की मिट्टी से उगा गुलबने उर्दू ॥

इस खाक से खुसरू को मिला तुहफ़ शीरीं।
इन फूलों से होने लगी आराइशों तजईं ॥
वह ले गया दिल्ली में ये गुलदस्तैं रंगीं।
काशानए दुर्वेश से ताकस्त्र सलातीं ॥

पैदा किया उर्दू ने मुहब्बत का वह गुलशन।
गुलगिश्त करें जिसमें बहम शैखों बरहमन ॥

मुलतान में पैदा हुई लाहौर चली ये।
दिल्ली में मगर हुस्न के साचे में ढली ये॥
गुजराती दक्खिन में बढ़ी और पली ये।
फिर लखनऊ के बाग़ में फूली ये फली ये॥
मरकज से ये हर चार, तुरफ हिन्द में फैली।
बंगाल, दक्नि, बम्बई और सिन्ध मे फैली॥
हर चन्द कि उर्दू मे मुहासिन हैं जवल्ली।
अग़यार से जो दाद उसे मिलनी थी वो मिल ली॥
क्या रंज की बात उससे अगर छुट गई दिल्ली।
है अब भी हमारे लिये सर्माये मिल्ली॥
अरबावे वतन हमदमो हमराज़ हैं इससे।
एक दिल है अगर दी से हम आवाज़ हैं इससे॥
गो हिन्द के हर गोशे में फूला चमन इसका।
गहवारह रही वादिए गंगो जमन इसका॥
गुजराती दक्नि में भी रहा है चलन इसका।
ये खितए पाक़ीज़ः है असली वतन इसका॥
वापिस वतन आई है मुसाफ़िर नही उर्दू।
इस मुल्क की मालिक है मुहाजिर नहीं उर्दू॥

वली दकनी

जन्म सन् १६६८ ई०   मृत्यु १७४४ ई०

किसी भी भाषा का निर्माण करने वाला या सुधार करने वाला उस भाषा के साहित्य मे अधिक सम्मान पाता है। वली का उर्दू शायरी से वही सम्बन्ध है जो चासर का अंग्रेज़ी के साथ और रूदकी का फारसी के साथ है। पहले लोगो का यह विचार था कि वली उर्दू का पहला साहेब दीवान है लेकिन नयी अन्वेषणा के अनुसार सुलतान मुहम्मद क़ुली क़ुतुब शाह (सन् १५८० से १६११ ई०) के सर पहले साहेब दीवान होने का सेहरा है मगर इससे वली की महानता मे कमी नही आती। आपके कारण उर्दू शायरी मे जान पड़ गई। आपकी उर्दू सेवा उर्दू साहित्य के इतिहास मे अजर अमर रहेगी। आप अपने समय के उस्ताद माने गये हैं।

आपके नाम मे मतभेद है मगर नये रिसर्च के अनुसार डाक्टर ज़हीर उद्दीन मदनी अपनी पुस्तक वली गुजराती मे मुहम्मद वली लिखते हैं इसी प्रकार जन्मस्थान और ख़ानदान के विषय मे भी मतभेद है। लेकिन ये वली दकनी के नाम से अधिक प्रसिद्ध हैं। जो लोग उन्हे गुजराती बताते हैं वह उनके शेर से सबूत देते हैं। औरंगाबाद मे बीस वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की इसके बाद अहमदाबाद गये जो इस समय विद्या का केन्द्र बना हुआ था। वही शाह वजीह उद्दीन के मदरसे मे दाख़िल हो गये और कुछ दिनों बाद उसी ख़ानदान मे मुरीद भी हो गये। कुछ दिनों बाद अपने वतन आकर शेरो शायरी आरम्भ की और प्रत्येक छन्द में कविता की जो कि लोगो को बहुत प्रिय हुईं। पुस्तकों मे मिलता है कि औरंगजेब के समय मे अर्थात सन् १७०० मे एक बार दिल्ली आये और शाह सादउल्ला गुलशन से मुला-

क़ात हुई जिन्होंने राय दी कि फ़ारसी की चीजें जो प्रयोग नहीं होती उसे उर्दू में प्रयोग करो लेकिन इससे उनका शागिर्द होना सिद्ध नहीं होता। दूसरी बार १७२२ई० में दिल्ली आये और उस बार अपना दीवान रेख़ता भी लाये जो बहुत लोकप्रिय हुआ और सन् १७२६ ई० में औरंगाबाद आये जहाँ शुहदाय कर्बला की शान में एक मसनवी लिखी। साहेब गुलशने हिन्द लिखते हैं कि वली का एक हिन्दी दीवान भी है। और मौलाना आजाद लिखते हैं और लेखक गुलेराना का कहना है कि वली ने दीवान के अतिरिक्त तसव्वुफ़ में एक रेसाला नूरुलमारफत लिखा है जो मिलता नहीं और अहमदाबाद में सन् ११५५ हिजरी तदानुसार १६४४ ई० में मृत्यु हुई और वहीं मदफ़ून हुए।

काव्य की विशेषता

आपकी कविता प्रारम्भिक तथा आसान और सरल होने के कारण अन्य कवियों ने हाथों-हाथ लिया और उन्हीं की शायरी के कारण उत्तरी भारत में शायरी की नींव दृढ़ हुई। कुछ नमूने उनके क्लाम के दिये जाते हैं जो कि देखने से मालूम होती है कि आजकल की शायरी है।

ग़ज़ल

(१)

याद करना हर घड़ी उस यार का, है वजीफा मुझ दिले बीमार का।
आरजूए चश्मए कौसर नहीं, तिश्नः लबहूँ शर्बते दीदार का।
आक़बत क्या होवेगा मालूम नहीं, दिल हुआ है मुबतला बीमार का।
क्या कहे तारीफ दिल है बे नजीर. हर्फ हर्फ उस मख़ज़ने असार का।
गर हुआ है तालिबे आजादगी बन्दः मत हो सिजओ जिन्नार का।
मसन्दे गुल मंजिले शबनम हुई देख रुतबा दीदए बेदार का।
ए "वली" होनासरी जिनपर निसार, मुद्दोआ है चश्मे गौहर बार का।

२

मै आशिकी तव सों अफ़सानः हो रहा हूँ
तेरी निग का जब सों दीवाना रहा हूँ।
ए आशना करम सों एकबार आओ रसदे
तुझ बाज सब जहाँ सों बेगाना हो रहा हूँ।
बाता लगन की मत पूछ एशभए व.ज्मे खूबी
मुद्दत सों तुझ झलक का पर्वाना हो रहा हूँ।
शायद वोगंजे खूबी आवे किसी तरफ़सों
इस वास्ते सरापा वीराना हो रहा हूँ।
सौदाय जुल्फ़ खूबा रखता हूँ दिल मे दाएम
जजीरे आशिकी का दीवाना हो रहा हूँ।
वरजाहे गर सुनूं नई नासह तेरी नसीहत
मैं जामे इश्क पीकर मस्ताना हो रहा हूँ।
किस सो 'वली' आपस का अहवाल जा कहूँ
सरता क़दम में ग़म सों ग़मखाना हो रहा हूँ।

३

खूबरू खूब काम करते हैं, एक निगाह में गुलाम करते हैं।
देख खूबा को वक्त मिलने के, किस अदा सों सलाम करते हैं।
क्या वफ़ादार है कि मिलने में, दिल सो सब राम-राम करते हैं।
कम निगाही सों देखते है वले, काम अपना तमाम करते हैं।
खोलते है जब अपनी .जुल्फाको, सुबहे आशिक़को शाम करते हैं।
साहबे लफज इसको कह सखिये, जिस सो खूबाकलाम करते हैं।
दिल लजाते हैं ए 'वली' मेरा, सर्व कदजब खराम करते हैं।

४

जिसे इश्क का तीर कारी लगे, उसे ज़िन्दगी क्यों न भारी लगे।
न छोड ए मुहब्बत दमे मर्ग लग, जिसे यार जानी सों यारी लगे।

न होवे उसे जग में हर्गिज़ करार, जिसे इश्क़ की बेकरारी लगे।
हरएक वक्त मुझ आशि़के पाक को, प्यारे तेरी बात प्यारी लगे।
'वली' कों कहे तू अगर एक वचन, रक़ीबाँके दिलमें कटारी लगे।

५

सरूदे ऐश गावें हम, अगर इश्वए साज आवे
बजावें तब्ल शादी के, अगर बेदिल नवाज आवे।
खुमारे हिज्रने जिसके दिया है दर्दे सर मुजकों
रहूँ नशः नमन अखियांमें गर वो मस्ते नाज़ आवे।
जुनूने इश्क में मुझकों नहीं जंजीर की हाजत
अगर मेरी खबर लेने को वो जुल्फे दराज आवे।
अदबके एहतमाम आगे न पावे बारवां हर्गिज़
तेरे साथ की पा बोसी को रंगे अयाज़ आवे।
जब नई गर गिलां दौडे पकड़ कर सूरते .क़ुमरी
अदा सों जब चमन भीतर वो सर्दे सरफराज आवे।
परस्तिश उसकी मेरे सरपे होवे सर सती लाजिम
सनम मेरा रक़ीबा के अगर मिलने से बाज़ आवे।
"वली" उस गौहरे काने हया की क्या कहूँ खूबी
मेरे घर इस तरह आता जों सीने में राज आवे।

६

सनम मेरा सुख़न सोंआशना है, मुझे फिक्रे सुखन करना वजा है।
चमन में वस्ल के हर जलवए यार, गुल रंगीं बहारे मुद्दोआ है
न बख्शे क्यों तेरा खत जिन्दगानी. कि मौजे चश्मए आवे बका है।
तग़ाफुल ने तेरे .ज़ख्मी किया मुझको, तेरी ये कम निगाही नीमचा है।
नहींबा आव अज ग़र आवे खंजर.शहादत गोह आशिक करबला है।
ग़नीमत वक्त मिलने को "वली" के, निगाहे पाक वाज़ा कीमया है।

मिर्ज़ा मुहम्मद रफी 'सौदा'

जन्म सन् १७१३ ई०　　　　　　　　मृत्यु १७ सन् १७८१ ई०

मिर्ज़ा मुहम्मद रफी नाम सौदा तख़ल्लुस सन् १७१३ई० में दिल्ली मे पैदा हुए और वहीं पालन-पोषण हुआ। आप के पितामह व्यापार के सिलसिले मे काबुल से भारत आये। आप शाह हातिम के शिष्य हैं और ऐसे शागिर्द हुये कि उस्ताद के लिये गर्व और सम्मान का कारण बने। आप की एक-एक बात और एक-एक शेर ने उस काल के लोगों पर उस्तादी का सिक्का बैठा दिया था। शाहे आलम बादशाह आप से अपनी कविता पर इस्लाह कराते थे। जब ख्याति दूर-दूर तक पहुँची तो नवाब शुजाबुद्दौला ने लखनऊ बुलाया परन्तु आप नहीं गये। मगर ज़माने के कारण जब कि दिल्ली के क़द्र करने वाले ज़मीन मे जा चुके तो आप ने लखनऊ के नवाब शुजाबुद्दौला की नौकरी कर ली। उनके बाद उनके पुत्र आसिफ़ुद्दौला ने ६ हज़ार रुपया बृति निर्धारित कर दिया और बहुत आदर-सत्कार के साथ रखा। लगभग ७०वर्ष की आयु में सन् १७८१ ई० मे देहान्त हो गया। दीवान और एक उर्दू कवियो की जीवनी स्मरण चिन्ह छोड़ा है।

काव्य की विशेषता

सौदा उर्दू के पूर्ण उस्ताद थे। उन्होने उर्दू काव्य के प्रत्येक क्षेत्र मे कविता लिखी है वह आज भी क़सीदे के सबसे बड़े उस्ताद माने जाते हैं। इनके क़सीदों मे फसाहत और बलागत का समुद्र ठाठे मारता है। वह इस मैदान मे फारसी के चोटी के कवियो से बराबर टक्कर लेते रहे और कही कहीं उनसे आगे भी निकल गये हैं। उनके कलाम का जोरो-शोर अनवरी और ख़ाक़ानी ऐसे फारसी के माने हुए उस्तादों को भी दबाता है और विषय की नज़ाकत मे अरफी और ज़हूरी को भी शरमाता है। मिर्ज़ा सौदा के विषय मे विद्वानो और आलोचकों का मत है कि वह ऐसी तबीयत लेकर आरे

थे जो कि शेरो-शायरी और इन्शा के अनुकूल थी। उनकी तबीयत हर घड़ी शोरिश से भरी और जोशो-ख़रोश से लबालब रही है। कुछ विशेषतायें हैं जिनसे इनका कलाम अन्य कवियों से श्रेष्ठ माना जाता है। कलाम के विषय की नज़ाकत के साथ ही साथ है बन्दिश में चुस्ती और तरकीब में दुरुस्ती और हृदय को अपनी ओर आकर्षित करने की दैवी शक्ति पाई जाती है। ख़यालात नाज़ुक और विषय नवीन होते हैं लेकिन फ़साहत का जौहर हाथ से नहीं जाने पाता। तशबीह इस्तेआरे इन के यहाँ है मगर इतना जितना दाल में नमक। ग़ज़ल में सोज़ो गुदाज़ है किन्तु क़सीदे के बादशाह हैं। सौदा एक जगह एक रुबाई में कहते हैं—

सौदा शुराअ में है बड़ाई तुझको।
तशरीफ़े सुख़न अर्श से आई तुझको॥
आलम तुझे इस फ़न में पैग़म्बर समझा।
पूजा जिहलाने व खुदाई मुझको॥

चूँकि सौदा क़सीदे के बादशाह कहे जाते थे, अतः उन्होंने ये शेर कहा है—

लोग कहते हैं कि सौदा का क़सीदा है ख़ूब।
उनकी खिदमत में लिये मैं ये ग़ज़ल जाऊँगा॥

इनके बारे में ये शेर प्रसिद्ध है—

सौदा की जो बालीं पर हुआ शोरे क़यामत।
खुद्दामे अदब बोले अभी आंख लगी है॥

१

क़ातिल का हाथ हरगिज हथियार तक न पहुँचा।
कारे शहादत अपना तलवार तक न पहुँचा॥
अफ़सोस कामे ग़म का इज़हार तक न पहुँचा।
यह लख़्ते दिल भी चश्मे ख़ूँबार तक न पहुँचा॥
तीरे सितम को तेरे कहता मैं नोश जां हूँ।
मुँह ज़ख्मे दिल का लेकिन सोफ़ार तक न पहुँचा॥

क्या गोश फह्म गर है आलम में अब के कोई।
खामोशी की हमारी गुफतार तक न पहुँचा ॥
इस मुर्गे नातवां की कुछ खबर है।
जो छूट कर क़फस से गुलजार तक न पहुँचा ॥
जूं गुंचा इस चमन में तेरे मोक्.इयदों का।
राजे खामोशीए दिल इजहार तक न पहुँचा ॥
ए बख्त ख्वाब तुझसे तुहफ़ा तरीक़ का है।
एक शब हमारी चश्मे बेदार तक न पहुँचा ॥
'सौदा' की शायरी का मुंकिर न मैंने देखा।
आखिर को काम जिसका एकरार तक न पहुँचा ॥

२

बुलबुल को क्या तड़पते में देखा चमन से दूर।
यारब न कीजियो तू किसी को वतन से दूर ॥
तुझ कुश्तगा के शोलै फानूस की तरह।
तन पर अगर कफन है तो तन है कफन से दूर ॥
पूछे भी वह तो हम न कहें आरज़ूए दिल।
वह बात क्यों कहें जो हो देहन से दूर ॥

३

मेरा लगता नहीं ए बाग़बा तेरे चमन में दिल।
लगे क्योंकर किसीका यार बिन सरूदो समनमें दिल ॥
जले हम शाम से तो सुब्ह हम बज्मों में यूं अपने।
जले हैं शमअ का जिस तरह तेरी अंजुमन में दिल ॥
कहा मत कर हमें हर्फोजिश्त ए यार तू हरदम।
नजर आया है अकसर टूट जाते हैं एक सुखन में दिल ॥

जो तू सैरे चमन में साथ होता है तो शादी से।
समाता वां नहीं चूं .ग़ुंचा मेरे पैरहन में दिल॥
नहीं "सौदा" जो वह मरने के बाद अभी।
तुझे भूले पड़ा तड़पेगा तेरी यादमें उसका कफ़नमें दिल॥

४

जाता है दिल तो जाइयों हुश्यार आज कल।
चलती हैं उसके-कूचे मे तलवार आज कल॥
ख़ंजर मिजाहे तीरे निगहे, तेग़े अबरुवा।
मजरूह किससे है यह दिले जार आज कल॥
कोई दवा नहीं है मुआफ़िक़ बेग़ैर वस्ल।
मरता है तेरे ग़म में ये बीमार आज कल॥
गर जमज़मह यही है हमारा तो हम सफीर।
होते हैं इस चमन में गिरिफ़तार आज कल॥
तसवीह गर यही है जो रखता है शैख़ शह।
ए यार हम तो पहनेंगे ज़िनार आज कल॥
अरसह समझ बहार का साक़ी पहुँच शताब।
जाती है इस चमन से गुलज़ार आज कल॥
गर है तेरा सलूक यही हमसे ए सनम।
बुत से करेगा ब्रह्मन इनकार आज कल॥
मत चल तू इस लटक से ज़ालिम कदम तले।
मल डालेगी जहां को यह रफ़तार आज कल॥
तेरी ज़ुबा से ओहदा बरआ क्यों हो कोई।
"सौदा" से है जो कुछ तेरी गुफ़तार आज कल॥

५

दिल मत टपक नजर से कि पाया न जायगा।
जूं अश्क फिर जमीं से उठाया न जायगा ॥

रुख़्सत है बाग़बां से कि टुक देख लें चमन।
जाते हैं वों जहा से फिर आया न जायगा ॥

पहुँचेंगे इस चमन में न हम दाद को कभी।
जूं गुल ये चाक जेब सिलाया न जायगा ॥

काबा अगरचे टूटा तो क्या जाय ग़म है शेख।
कुछ कस्रे दिल नहीं कि बनाया न जायगा ॥

अम्मामा को उतार के पढ़ियों नमाज शेख।
सिजदे से वरना सर को उठाया न जायगा ॥

ज़ालिम मै कह रहा था कि इस ख़ूं से दर गुजर।
"सौदा" का क़त्ल है ये छुपाया न जायगा ॥

दामाने दाग़े तेग़ जो धोया तो क्या हुआ।
आलम के दिल से दाग़ मिटाया न जायगा ॥

६

बदला तेरे सितम का कोई तुझसे क्या करे।
अपना ही तू फरेफतः होवे ख़ुदा करे ॥

क़ातिल हमारी नअश को तशहीर दे ज़रूर।
आइन्दा ता कोई न किसी से वफा करे ॥

फ़िक्रे मआश इश्क़े बुतां जिक्रे रफ्तगां।
इस जिंदिगी में अब कोई क्या क्या किया करे ॥

आलम के बीच फिर न रहे रस्मे आशि़की।
गर नीम लब कोई तेरे शिकवे अदा करे॥
तनहां न रोजे हिज्र है "सौदा" पे ये सितम।
परवाना सा वेसाल की हर शब जला करे॥

७

गुल फेकें हैं औरों की तरफ़ बल्कि समर भी।
ए खाना वरअन्दाज़े चमन कुछ तो इधर भी॥
क्या ज़िद है मेरे साथ ख़ुदा जोन वगरनः।
काफ़ी है तसल्ली को मेरे एक नजर भी॥
ए अब्र क़सम है तुझे रोने की हमारे।
तुझ चश्म से टपका हैं कभू लख़्ते जिगर भी॥
किस हस्तीये मौहूम पे नाजां है तू ए दोस्त।
कुछ अपने शवो रोज की है तुझ को खबर भी॥
तनहा तेरे मातम में नहीं शाम सियह पोश,
रहता है सदा चाक गरीबाने सेहर भी॥
"सौदा" तेरी फर्याद से आँखों में कटी रात॥
आई है सेहर होने को टुक तू कहीं मर भी॥

८

जब इस चमन को छोड़ के हम आश्या चले।
एक् हमसफर ने भी न पूछा कहा चले॥
क्या ले लिया था हमने उलझता जो कोई ख़ार।
जूं गुल हम उसके वाग़ से दामन फेशां चले॥

हर बात में है ऐसी कतर बेओंत उसको याद।
मक़राज की तरह से कि जिसकी जहां चले॥
ग़ाफ़िल हमारी आह से न रहना बे ख़बर।
कर खौफ ऐसे तीर से जो बे कमां चले॥
राहे अदम भी दर्द है "सौदा" कि जिसके बीच।
जिस तरह पीर जाया है वो वही जवां चले॥

९

गर तुझमे है वफा तो जफा कार कौन है।
दिलदार तू हुआ तो दिल आजार कौन है॥
नालाँ हूँ मुद्दतों से तेरे साये के तले।
पूछा न यह कभू पसे दीवार कौन है॥
हर शब शराब ख़्वारे दह एक दिन स्याहे मस्त।
आशफता ज़ुल्फ़लुट पटी दस्तार कौन है॥
हर आन देखता हूँ मै अपने सनम को शेख़।
तेरे ख़ुदा का तालिब दीदार कौन है॥
"सौदा" को जुर्मे इश्क़ से करते है आजकल।
पहचानता है तू ये गुनहगार कौन है॥

१०

मेरी आंखों में बस्ता है तू क्यों रुलाता है।
समझ कर देख तू अपना भी कोई घर डुबाता है॥
अमा है शौक़ मिलने का मेरे नामों के काग़ज से।
कि जब खोली है तू उसको तो वह लपटा ही जाता है॥

मुअस्सर हो अगर मेहराव तेरे तेगे अब्रू की।
तरफ़ कावाके सिजदा फिर तू किस काफिरको भाता है॥

शेब महताब में जारी न्यन "सौदा" के देखा कर।
तुझे गर चांदनी में सैरे दम दरया का खुश आता है॥

रुबाइयाँ

१

चाही थी बुतों की आशनाई हमने।
पर अक्ल की मानीं रहनुमाई हमने॥
इस दिल के किनारे से हमारे यारो।
कुछ आग लगी थी सो बुझाई हमने॥

२

अफ़सोस हमारी उम्र रोते गुजरी।
नित दिल से ग़ुबारेग़म ही धोतें गुजरी॥
देखा न कभी ख़्वाब में अपना यूसुफ़।
हर चन्द तमाम उम्र सोते गुजरी॥

मीर मुहम्मद तक़ी "मीर"

मीर का नाम ज़बान पर आया और हृदय की अभिव्यंजना-वेदना और साथ ही उस वेदना मे आनन्द एवं दुख असहनीय होकर आशिक़ाना जज़बात का सहीह और सच्चा चित्र चित्रित हुआ और मस्तिष्क मे एक नवीन भाव पैदा करने में उन्मत्त हो गया। जिस प्रकार लोग एक ओर अंग्रेज़ी मे चासर और स्पेनर की कृति का अध्ययन बहुत प्रेम से करते हैं और .फेयरी क्वीन को पढ-पढ़ कर आनन्द लेते हैं तो दूसरी ओर दुनिया मीर और मीर की कला को भूली नहीं है। लोग अधिक सख्या मे इनकी कृति को पढ़ते हैं। और इस प्रकार अपने सकुचित विचार को विस्तृत करते है।

नाखु.दाये सफीनै सुखन मीर मुहम्मद तकी मीर लगभग सन् ११३७ हिज़री मे शहर अकबराबाद मे पैदा हुये। आपके पितामह अरब से भारत आये थे। एक जगह आप लिखते हैं।

फिरते हैं "मीर' खुव्वार कोई पूछता नहीं।
इस आशिकी में इज्जत सादात भी गई॥

पिता के मरने के बाद दिल्ली मे सिराजुद्दीन खा आरज़ू के पास पालन पोषण हुआ। दिल्ली के पतन के उपरान्त ग़रीबी से तग होकर सन् ११६० हि० मे लखनऊ आये। वहा आपका बहुत सम्मान हुआ मगर नाज़ु.क मिज़ाजी और खु.द्दारी के कारण जीवन मे चैन न प्राप्त हुआ। मीर साहब अक़लीमें सुख़न के बादशाह थे। ग़ज़ल गाई के बाकमाल उस्तादे फ़न माने गये हैं। ग़ालिब ऐसे कवि ने भी आपके उस्तादी का सिक्का मान लिया। ग़ालिब कहते हैं।

रेख़ती के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब"।
कहते हैं अगले ज़माने में कोई 'मीर' भी था॥

मीर साहव का सन् १२२५ हि० मे शरीरान्त हुआ। इनकी मज़ार ऐश वाग लखनऊ में है, मगर अव अफ़सोस है कि संगे मज़ार भी नही जिससे कब्र की लम्बाई चौड़ाई एवं उसका चिन्ह मालूम किया जा सके। "मीर दर्द" ने तारीख़ कही है जिससे सन् १२२५ हि० निकलती है।

अहले फ़ना को नाम के हस्ती के नंग है।
लौहे मज़ार भी मेरी छाती पे संग है॥

आप चूँकि वहुत कष्ट भोगे हुये थे और जीवन मे कभी भी सुख प्राप्त [न]हीं हुआ था अत आपके शेर मे हृदय की वेदना है और प्रत्येक शेर [ख़]ून के आँसू रुला देने वाले हैं, अत किसी ने आपके विषय में कहा है—

सिरहाने मीर के आहिश्ता बोलो।
अभी टुक रोते रोते सो गया है॥

[म]ीर के मोटे मोटे ६ उर्दू दीवान हैं और एक फ़ारसी दीवान है। "मसनवियां" इसमें कई मसनवियो का संग्रह है, "फ़ैज़े मीर" फ़ारसी में एक [र]साला है जिसके अन्त मे क़िस्से और चुटकुले हैं। "नुकातुश्शोअरा" में फ़ारसी मे उर्दू कवियों का वर्णन है जिसके शुरू मे फारसी भाषा में मीर [ने] स्वयं अपनी जीवन चर्या लिखी है।

[क]ाव्य-विशेषता—

ज़वा सुलझी है सुथरी साफ़ मसकूलो मुजल्ला।
ये उर्दू ही नही है वल्कि उर्दूए मुअल्ला है॥

(हसरत बनारसी ज़फ़र नामये इस्लाम से) कवि मीर ने वातों ही वातों [मे]ं कितनी वड़ी-वड़ी वातें कह डाली है जो कि दूसरों के लिए कहना बहुत [क]ठिन कार्य है। सौदा ने भी मीर को उस्ताद माना है।

"सौदा" तू इस ग़जल को ग़जल दर ग़ज़ल ही लिख।
होना है तुझको मीर से उस्ताद की तरफ़॥

मीर की शायरी के विषय मे अल्लामा डा० अज़ीमुद्दीन अहमद कहते हैं कि जज़्बात की चित्रकारी शायरी की जान तो अवश्य है किन्तु इसका ऐसा चित्र शब्दों मे खींचना कि दूसरे असली रूप मे देख लें और फिर न भूले यह एक मुख्य विशेषता है जो शीघ्र किसी को प्राप्त नहीं होती। मगर जिसको यह दौलत प्राप्त हो गई वह केवल चित्रकार ही नहीं वल्कि वह अमर हो जाता है। मीर को यह दौलत मिल गई अब वह संसार के पृष्ठ से नहीं मिट सकते। मीर गजल के बादशाह कहे जाते हैं। कवि अमीर मीनाई कहते हैं कि —

"सौदा व मीर दोनो थे कामिल मगर अमीर।
है फ़र्क़ वाह वाह में और आह-आह में।"

१

इब्तदाय इश्क़ है रोता है क्या ?
आगे आगे देखिये होता है क्या ?
क़ाफ़ले में सुब्ह के एक शोर है।
यानी ग़ाफ़िल हम चले सोता है क्या ?
सब्ज होती ही नहीं ये सर ज़मीं।
तुख़्म ख्वाहिश दिल तू में बोता है क्या ?
ये निशाने इश्क़ हैं जाते नहीं।
दाग़ छाती के अबस धोता है क्या ?
ग़ैरते यूसुफ़ है ये वक़्ते अजीज़।
"मीर" इस को रायेगां खोता है क्या ?

इस ग़ज़ल को हिन्दी शब्दो और उर्दू शैली मे पढ़िये।

प्रारम्भ अनुराग है रोता है क्या ?।
आगे आगे दर्शीये होता है क्या ?

क़ाफ़ले में प्रातः के एक कोलाहल है।
असावधान हम अर्थात चले सोता है क्या?
हरित होती ही नहीं ये ईश भूमि।
बीज इच्छा के हृदय में तू बोता है क्या?
ये अनुरागी चिन्ह हैं जाते नहीं।
कलंक छाती के व्यर्थ धोता है क्या?
संकोचे यूसुफ़ है एक अमूल्य समय।
"मीर" इसको व्यर्थ ही खोता है क्या? (कलीम)

२

आहे सहर ने सोज़िशे दिल को मिटा दिया।
इसने हमें तो दिया सा बुझा दिया॥
समझी न वादे सुब्ह कि आकर उठा दिया।
इस फ़ितनये ज़माना को नाहक़ जगा दिया॥
पोशीदा राज़े इश्क़ चला जाये है सो आज।
बेताक़ती ने दिल का, वह पर्दा उठा दिया॥
थी लाग उसकी तेग़ को हम से सो इश्क़ ने।
दोनों को मारके में गले से लगा दिया॥
सब शेरो भाव मन को लिये सर में मर गये।
यारों को इस फसाने ने आख़िर सुला दिया।
आवारगाने इश्क़ का पूछा जो मैं निशाँ॥
मुश्ते ग़ुबार ले के सबने उड़ा दिया।
क्या कुछ न अज़ल में न तालऽ थे जो दोस्त॥
हमको दिले शिकस्तः कज़ा ने जगा दिया।
तकलीफ़ दर्दे दिल की अबस हमनशीं ने की॥
दर्दे सुख़न ने "मीर" सभी को रुला दिया।

३

दुश्मनों के रूबरू दश्नाम है।
यह भी कोई लुत्फ़ बे हंगाम है॥
महुवे ज़ुल्फ़े यार है आलम तमाम।
हुस्न का शुहरा भी जोशें शाम है॥
रोज़ो शब फिरता इस कूचे के गिर्द।
क्या कहूँ क्या गर्दिशे अय्याम है॥
इश्क़ की है राह क्या मुश्किल गुज़ार।
सरका जाना जिसमें हर एक गाम है॥
बज़्म में पूछा तो यूं अंजान हो।
"मीर" इन लोगों में किसका नाम है॥

४

अब वह हुआ है इतना कि जौरो जफ़ा करे।
अफ़सोस है जो उम्र न मेरी वफ़ा करे॥
हिजराने यार एक मुसीबत है हम नशीं।
मरने के हाल से कोई कब तक जिया करे॥
मस्ती शराब की सी है आमदे शबाब।
ऐसा न हो कि तुम कोजवानी नशा करे॥
बरसों किया मेरी तुरबत को गुलफ़िशां।
मुरग़े चमन अगर हक़े सुहबत अदा करे॥
आरिफ़ है "मीर" इससे मिला बेशतर करो।
शायद कि वक़्त ख़ास में तुमको दुआ करे॥

५

गये जी से छूटे बुतों की जफ़ा से।
यही बात हम चाहते थे ख़ुदा से॥

वह अपनी ही खूबी पे रहता है नाज़ां।
मरो या जीयो कोई उसकी बला से॥
न रखी मेरी ख़ाक भी इस गली में।
कुदुरत मुझे है नेहायत सबा से॥
मगर सूए मिजगा खिचा जाय है कुछ।
मगर दीदा तर हैं लोहू के प्यासे॥
अगर चश्म है तो वही ऐन हक़ है।
तअसुब तुझे है अजब मासवा से॥
तबींवे सुबुक अक्ल हरगिज न समझा।
हुआ दर्दे इश्क़ आह दूना दवा से॥
टुक ए मुद्दई चश्मे इनसाफ़ वा कर।
कि बैठे हैं ये क़ाफ़िये किस अदा से॥
न शिकवा शिकायत न हर्फ़ोहिकायत।
कहो "मीर" जी आज क्यों हो ख़फ़ा से॥

६

लज्ज़त से नहीं खाली जानो का खपा जाना।
कब ख़िज़्रो मसीहा ने मरने का मजा जाना॥
कब बंदिगी मेरी सी बन्दा करेगा कोई।
जाने है ख़ुदा उसको, मैं तुमको ख़ुदा जाना॥
इस शमा की मजलिस में जाना हमें फिर वा।
एक ज़ख्मे ज़बाने ताज़ा हर रोज़ उठा जाना॥
जाती है गुज़र जी पर उस वक़्त क़यामत सी।
याद आवे है जब तेरा यकबारगी आजाना॥
कब "मीर" बसर आये तुम वैसी फ़रेबी हो।
दिल को लगावे लेकिन न लगा जाना॥

७

बज़्म में मुंह उधर करें क्यों कर।
और नीची नज़र करें क्यो कर॥
यूं भी मुश्किल है दूं भी मुश्किल है।
सरझुकाये गुज़र करें क्यों कर॥
राज़ पोशीदगीये इश्क़ है मंज़ूर।
आखें रो रो के तर करें क्यों कर॥
मस्तो बे.ख़ुद हम उस के दर पे गये।
लोग इस को खबर करें क्यों कर॥
दिल नहीं दर्द मंद अपना "मीर"।
और नाले असर करें क्यो कर॥

८

दुनिया रहगुज़र है

"कुछ कुछ कहूँगा" रोज़ ये कहता था दिल में मैं।
"आशुफ़्ता तबऽ "मीर" को पाया अगर कहीं"॥
सोकल मिला मुझे वह ब्याबा की सिम्त को।
जाता था इज़्तराब ज़दा सा उधर कहीं॥
लग चल के मैं बरगे सबा ये उसे कहा।
"का खानुमा ख़राब तेरा भी है घर कहीं॥
आशुफ़ता जा बजा जो फिरे है तो दश्त मे।
जागह नही है शहर मे तुझको मगर कहीं॥
आसूदगी से जिन्स को करता है कौन सोख्त।
जाने है नफ़ऽ कोई भी जी का ज़रर कहीं॥
मोती से तेरे अश्क है गलता किसी तरफ़।
या.क़ूत के से टुकड़े हैं लख़्ते ज़िगर कहीं॥
ताके ये दश्त गर्दी व कब तक ये खस्तिगी।
इस ज़िंदगी से कुछ तुझे हासिल है मर कहीं"॥

कहने लगा वह होके बर आरुफ़ता यकबयक।
मसकन करे है दह में मुझ सा बशर कहीं॥
आवारगां को नंग है सुनना नसीहतें।
मत कहियो ऐसी बात तू बारे दिगर कहीं॥
तऽइयीन जा को भूल गया हूँ पे ये है याद।
कहता था एक रोज ये अहले नजर कहीं॥
बैठे अगरच नक्श तेरा तो भी दिल उठा।
करता है जाय बाश कोई रहगुजर कहीं॥
कितने ही आये ले गये सर पर ख़्याले "मीर"।
ऐसे गये कि कुछ नहीं उन का असर कहीं॥

६

रुबायात और क़तात

१

चुपका चुपका फिरा न कर तू ग़म से।
क्या हर्फ़ों सुख़न ऐब है कुछ महरम से॥
आख़िर को रुके रहते जनूं होता है।
ए "मीर" कोई बात किया कर हम से॥

२

अब शहर की गलियों में जो हम होते हैं।
मुंह ख़ूने जिगर से दमबदम धोते हैं॥
यानी कि हर एक जा ये जू अब्रे बहार।
आलम आलम जहा जहा रोते हैं॥

३

कल पाओं एक कासे सर पर जो आगया।
यकसर वह उस्तोख़ाने शिकस्ता से चूर था॥
कहने लगा कि देख के चल राह बे ख़बर।
मैं भी कभू किसू का सरे पुर ग़ुरूर था॥

सैय्यद .ख्वाजा मीर "दर्द"

जन्म सन् १७१६ ई० और मृत्यु सन् १७८५ ई०

सैय्यद .ख्वाजा मीर दर्द आप का नाम तथा उपनाम दर्द था। पिता सैय्यद .ख्वाजा मीर मुहम्मद नासिर "अन्दलीब" फारसी के अच्छे कवि और सूफ़ी के बुज़ुर्ग थे। दिल्ली में जन्म लिया और पिता से ही शिक्षा प्राप्त की। ओलूमो फ़नून में दक्ष थे। वेदान्त और संगीत अच्छी जानते थे। दर्द को शायरी और तसव्वुफ अपने पिता से मिला था। बचपन ही से शेरो सुख़न का शौक़ था अपने पिता से इस्लाह लेना प्रारम्भ की। २२ वर्ष की अवस्था में संसार से मुँह मोड़ कर पिता के गद्दी पर बैठ गये। आपके मकान पर हर महीने मुशायरा और क़व्वाली की महफिल होती थी जिसमें उमराव और शुरफ़ा आया करते थे। यही नहीं शाहआलम बादशाह भी कभी कभी आते थे। एक बार की बात है कि बादशाह बिना समाचार भेजे चले आये और उनके पावों मे दर्द था। सभा में बैठे परन्तु पीड़ा सहन न कर सके पांव फैला दिया। ख्वाजा साहब देखते ही बोले—ये कार्य फ़क़ीर के आदाबे महफ़िल के .खिलाफ है। बादशाह ने कारण बताया और क्षमा चाही। ख्वाजा साहब ने कहा—अगर तबीयत ख़राब थी तो आये ही क्यों। आप की कृतियाँ ये हैं।

असरारुल सलवात, वारदाते दर्द, नालै दर्द, आहे सर्द, दर्दे दिल, इल्मुल किताब वारदात की कुंजी है। एक दीवान फ़ारसी और एक दीवान उर्दू अपनी यादगार छोड़ा है।

कभी किसी की तारीफ मे क़सीदे नहीं कहे और न कभी दरबार में हाज़िर हुये। शाही जागीर जीविका-साधन थी।

काव्य—दर्द ग़ज़ल कहने में अपना एक विशेष स्थान रखते थे। ग़ज़लें साफ सुथरी, बहुत सरल परिमार्जित भाषा में होती थीं। कलाम हृदय की प्रेरणा से निकले हुये होते थे। ग़ज़लों में जो भी वर्णन करते थे

वह सन्निस होता था। कभी कभी-छोटी वहरों में भी ग़ज़लें कहते थे। मीर के अतिरिक्त इनका कोई मुक़ाबला नहीं कर सका। सौदा ने ग़ज़ल में फ़ारसी उस्तादों का आश्रय लिया। परन्तु दर्द ने ऐसा नहीं किया। इसके अतिरिक्त ईश्वरवाद और वेदान्त में दर्द को जो स्थान प्राप्त है वह किसी भी उर्दू कवि को स्वप्न में भी नहीं प्राप्त हुआ। आज़ाद कहते हैं कि ख्वाजा मीर दर्द की ग़ज़ल सात शेर नौशेर की होती है। परन्तु चुनी हुई होती है विशेषत. छोटी छोटी वहरों में जो ग़ज़लें कहते थे मानो तलवार की आबादारी (पानी और तेज़ी) नश्तर में भर देते थे। ख्यालात उनके संजीदा और गम्भीर थे। किसी की प्रशसा मे ज़बान ख़राब नहीं की। तसव्वुफ़ जैसा उन्होंने कहा है उर्दू मे आज तक किसी से नहीं बन पड़ा।

१

जग में कोई न टुक हंसा होगा।
कि हसने में न रो दिया होगा॥
उसने कसदन भी मेरे नाले को।
न सुना होगा गर सुना होगा॥
देखिये ग़म से अब के जी मेरा।
न बचेगा, बचेगा क्या होगा॥
कत्ल से मेरे वो जो बाज रहा।
किसी बदख्वाह ने कहा होगा॥
दिल ज़माने के हाथ से सालिम।
कोई होगा कि रह गया होगा॥
दिल के फिर ज़ख्म ताज़ा होते हैं।
कहीं गुंचा कोई खिला होगा॥
दिल भी ए "दर्द" क़तरें ख़ूं था।
आंसुओं में कहीं गिरा होगा॥

२

चमन में सुब्ह ये कहती थी होकर चश्मे तर शबनम ।
बहारे बाग़ तो यूं ही रही लेकिन किधर शबनम ॥
हमें तो बाग़ तुझ बिन ख़ानए मातम नजर आया ।
इधर गुल फाडते थे जेब रोती थी उधर शबनम ॥
करे है कुछ से कुछ तासीर, सुहबत साफ तबओं की ।
हुई आतिश से गुल की बैठते रश्के शरर, शबनम ॥
भला टुक सुब्ह होने दो उसे भी देख लेवेंगे ।
किसी आशिक़ के रोने से नहीं रखती खबर शबनम ॥
न पाया जो गया इस बाग़ से हरगिज़ सुराग़ उसका ।
न पलटी फिर सबा इधर न, फिर आई नज़र शबनम ॥
न समझा "दर्द" हमने भेद या की शादी ओ ग़म का ।
सहर खनदा है क्यों रोती है किस को याद कर शबनम ॥

३

हम तुझ से किस हविस की .फुलक जूस्तूजू करें ।
दिल ही नहीं रहा है जो कुछ आरजू करें ॥
तर दामनी पे शैख़ हमारी न जाइयो ।
दामन निचोड़ दें तो फरिश्ते वज़ू करें ॥
सरता कदम जबान है जू शमा गो कि हम ।
पर यह कहा मजाल जो कुछ गुफ्तगू करें ॥
हर चन्द आइना हूँ पर इतना हूँ ना क़बूल ।
मुँह फेरले वो जिसके मुझे रूबरू करें ॥
ने गुल को है सबात न हम को है एतबार ।
किस बात पर चमन ! हविसे रगो बू करें ॥
है अपनी ये सलाह सब ज़ाहिदाने शहर से ।
ए "दर्द" आके बैग्रते दस्तो सबू करें ॥

४

अज़ाँ समां कहां तेरी वसअत को पा सके।
मेरा ही दिल है जहां तू समा सके॥
वहदत में तेरी हर्फे दुई का आ न सके।
आइना क्या मजाल तुझे मुंह दिखा सके॥
क़ासिद नहीं है काम तेरा अपनी राह ले।
उसका पयाम दिल के सिवा कौन ला सके॥
अखफ़ाये राज़े इश्क न हो आबे अश्क से।
यह आग वो नहीं जिसे पानी बुझा सके॥
मस्ते शरावे इश्क़ वह बे .खुद है जिसको हश्र।
ये 'दर्द' चाहे बखुद पर न ला सके।

५

मुझे दर से अपने तू टाले है, ये बता मुझे तू कहां नहीं।
कोई और भी तेरे सिवा, तू अगर नहीं तो जहां नहीं॥
पड़ी जिसतरफ़ को निगाह या,नजर आगया है खुदा ही वां।
ये हैं गो कि आंखों की पुतलियां मेरे दिल में जाय बुता नहीं॥
मेरे दिल के शीशे को बे वफा तूने टुकड़े ही कर दिया।
मेरे पास तो वही एक था, ये दुकाने शीशः गेरा नहीं॥
मुझे रात सारी है तेरे यां कटे क्यों कि रोये न शमा सां।
कि न हो सके है कुछ अब ब्या, ये वह वात है कि ज़बा नहीं॥
तुझे "दर्द" क्यों कि सुनाऊँ मैं.न खुदा किसी को दिखावे ये।
जो कुछ अपने जी पे गुजरती है कहूँ क्या कि इस काव्या नहीं॥

———

हकीम मोमिन खां मोमिन

जन्म १२१५ हि० स्वर्गवास १२६८ हि०

सन् १८०० ई० सन् १८५२ ई०

हकीम मोमिन ख़ां हकीम ग़ुलाम नबी ख़ां के प्रास सुपुत्र थे। बचपन ही से बुद्धिमान थे और शेर कहने की दैवी शक्ति थी। आप जो बात सुनते थे वह कंठाग्र हो जाया करती थी। अरबी, फारसी और ज्योतिष के अच्छे विद्वान थे। हकीमी अपने पिता और चाचा से सीखी। प्रारम्भ में शाह नसीर को अपना कलाम दिखाते थे मगर थोड़े ही दिनो बाद इनसे इस्लाह (Correction) छोड़ दी।

ज्योतिष मे इतना कमाल था कि उन्होंने अपने मृत्यु के पाच मास पूर्व ही अपने मृत्यु की ख़बर दे दी जो कि कोठे से गिर कर हुई। स्वयं तारीख कही है "दस्तो बाज़ू बशिकस्त" इनकी एक दीवान है जिसमें ६ मसनविया भी सम्मलित हैं।

काव्यः—आपका कलाम ना.ज़ुक ख्याली और बलंद परवाजी (उच्च विचारधारा) के लिये अति प्रसिद्ध है। आपकी उपमाएँ बिल्कुल असाधारण होती हैं परन्तु वही कविता में एक नवीन विशेषता उत्पन्न कर देती हैं।

मोमिन उर्दू कवियो में एक विशेष स्थान रखते हैं। कारण यह है कि वह उर्दू साहित्य मे एक नवीन धारा का प्रवाह करने वाले थे जिनके मानने वाले पंडित दया शंकर नसीम देहलवी (मसनवी के बादशाह) हसरत मोहानी इत्यादि थे। मामला बन्दी मे जो मुहारत आपको प्राप्त है वह किसी अन्य कवि

को नहीं है। मोमिन के यहाँ शब्दों का जादू भरा पड़ा है और इसी हेर फेर से विचार की नवीन धाराएँ प्रवाहित हो जाती हैं। उदाहरणार्थ कुछ शेर उपस्थित हैं।

रोजे जजा जो क़ातिले दिल जू .खेताब था।
मेरा सवाल ही मेरे .खूं का जवाब था॥
उम्र सारी तो कटी इश्के बुताँ में "मोमिन"।
आख़िरी वक्त़ में क्या खाक मुसलमा होंगे॥

१

ठानी थी दिल में अब न मिलेंगे किसी से हम।
पर क्या करें कि हो गये नाचार जी से हम॥
हँसते जो देखते हैं किसी को किसी से हम।
मुँह देख देख रोते हैं किस बेकसी से हम॥
बेजार जान से जो न होते तो मागते।
शाहिद शिकायतों पे तेरी मुद्दई से हम॥
साहब ने इस .गुलाम को आजाद कर दिया।
लो बन्दिगी कि छूट गये बन्दिगी से हम॥
चे रोये मिस्ले अब्र न निकला गुबारे दिल।
कहते थे उनको बरके तबस्सुम हँसी से हम॥

इन नातवानियों पे भी थे खारे राहे ग़ैर।
क्योंकर निकाले जाते न उसकी गली से हम॥

क्या गुल खिले गा देखिये फस्ले गुल तो दूर।
और सूये दश्त भागते है कुछ अभी से हम॥

मुंह देखने से पहले भी किस दिन वह साफ था।
बे बजहा क्यों ग़ुबार रखें आरसी से हम॥

क्या दिल को ले गया कोई बेगाना आशना।
क्यों अपने जी से लगते हैं कुछ अजनबी से हम॥

लें नाम आरज़ू का तो दिल से निकाल लें।
"मोनिन" न हों जो रब्त रखें बिदअती से हम॥

२

तासीर सब्र में न असर इज़्तराब में।
बेचारगी से जान पडी किस अजाब में॥

बे नाला मुंह से झरते हैं बेगिरया आंख से।
अजज़ाये दिल का हाल न पूछ इजतरोब में॥

चरख़ों ज़मीं मे तौबा का मिलता नहीं सुराग़।
हंगामए बहारो हुजूमे सहाब में॥

इतनी क़दूरतें, इश्क़ में हैरान हूँ क्या कहूँ।
दरया में है सराब कि दरया सराब में॥

तुम निकले बहे सैर तो निकले गा महभी।
होवै गा इजतराब शबे माहताब में॥

डूबी हुजूम अश्क से कश्ती ज़मीन की।
माही को इजतराब हुआ जोशे आब में॥

खोला जो दफ़्तरे गिला अपना जो यूँ किया ।
गुज़री शबे वैसाल सितम के हिसाब में ॥

क़ातिल जफ़ासे बाज़ न आया वफ़ा से हम ।
फ़तराक में जोसर है तो जा है रकाब में ॥

कहते हैं तुम को होश नहीं इज़्तराब में ।
सारे गिले तमाम हुये एक जवाब में ॥

रहते हैं जमा कूचे जाना में ख़ासो आम ।
आबाद एक घर है जहाने ख़राब में ॥

मतलब की जुस्तूजू ने ये क्या हाल कर दिया ।
हसरत भी अब नहीं दिले नाकामयाब में ॥

नाकामियों से काम रहा उम्र भर हमें ।
पीरी में यास है जो हविस थी शबाब में ॥

पैहम सजूद पाये सनम पर दमे वेदाऽ ।
"मोमिन" ख़ुदा को भूल गये इज़्तराब में ॥

२

उलटे वह शिकवे करते हैं और किस अदा के साथ ।
बे ताक़तती के ताने हैं उज़्रे जफा के साथ ॥

वहे अयादत आये वह लेकिन क़ज़ा के साथ ।
दम ही निकल गया मेरा आवाज़ पाके साथ ॥

बे पर्दा ग़ैर पास उसे बैठा न देखते ।
उठ जाते काश हम भी जहां से हया के साथ ॥

आती है बूए दाग़ शबे तार हिज्र में।
सीना भी चाक हो न गया हो कबा के साथ ॥
गुलबाग किसका मशवेरे क़त्ल हो गया।
कुछ अर्ज़ बूए खूं है वहां की हवा के साथ ॥
थे वादे से फिर आने के खुश ये खबर न थी।
है अपनी जिन्दगानी उसी बेवफ़ा के साथ ॥
कूचा से अपने ग़ैर का मुंह है हटा सके।
आशिक का सर लगा है तेरे नक़्श पा के साथ ॥
अल्लाह री गुम रही बुतो तुबखाना छोड़ कर।
"मोमिने" चला है काबे को एक् पारसा के साथ ॥

४

पाते थे चैन ग़मे दूरी से घर में हम।
राहत वतन की याद करें क्या सफ़र में हम ॥
इस तरह खाक छान्ते फिरते न दश्त दश्त।
होते जो पाये माल किसी रह गुजर में हम ॥
लिखते हैं एक् परी को कुछ आवारगी का हाल।
बाधेंगे नामा तायरे मजनूं के पर में हम ॥
थी दश्त से ज़्यादा तर उसको ही सख्तिया।
क्या फोड़ें सर तस्व्बुरे दीवारो दर में हम ॥
यकसां है शामे गुबेते सुब्हे वतन असर।
पायें फ़ुग़ाने शब न आहे सह्र में हम ॥
उस गुल के ग़म में फूलते फलते तो इश्क़ क्यों।
जलते साये शज्रे बार वर में हम ॥
दिल्ली से रामपुर में लाया जुनूं का जोश।
वीराना छोड़ आये हैं वीराना तर में हम ॥

वस्ले बुतां के दिन तो नहीं यह कि हो विसाल।
मोमिन नमाज़ क़स्र क्यों सफ़र में हम॥

५

असर उस को ज़रा नहीं होता।
रंजो राहत फजा नहीं होता॥
तुम हमारे किसी तरह न हुये।
वरना दुनिया में क्या नहीं होता॥
चारै दिल सिवाय सब्र नहीं।
सो तुम्हारे सिवा नहीं होता॥
हाले दिल यार को लिखूँ क्यों कर।
हाथ दिल से जुदा नहीं होता॥
क्यों सुने अर्जे मुजतरिब "मोमिन"।
सनम आखिर .खुदा नहीं होता॥

६

वह जो हम में तुम में करार था, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
वही पाने वादा निवाह का, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
वह जो लुत्फ मुझ पे थे बेशतर, वह करम के था मेरे हाल पर।
मुझे सब है याद जरा जरा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
वह नये गिले वह शिकायतें, वह मजे मजे की हेकायतें।
वह हर एक बात पे रूठना, तुम्हें याद कि न याद हो॥
कभी बैठे सफ मे जो रूबरू, तो एशारतों ही में गुफ्तूगू।
वह ब्यान शौक का बरमला, तुम्हें याद कि न याद हो॥
हुये इतफाक से गर बहम, तो वफा जताने के दम ब दम।
गिलए मलामते अकरबा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
कभी हम में तुम में भी चाह थी, कभी हम से तुम से भी राह थी।
कभी हम भी तुम भी थे अशना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

सुनो ज़िक्र है कई साल का कि किया एक आपने वादा था।
सो निबाहने का तो ज़िक्र क्या तुम्हें याद हो कि न याद हो।।
कहा मैंने बात वह कोठे की मेरे दिल से साफ़ उतर गई।
तो कहा कि जाने मेरी बला तुम्हें याद हो कि न याद हो।।
वह बिगड़ना वस्ल की रात का वह मानना किसी बात का।
वह नहीं नहीं की हर आन अदा तुम्हे याद हो न याद हो।।
जिसे आप गिनते थे आशना जिसे आप कहते थे बावफ़ा।
मैं वही हूँ "मोमिन" मुबतला तुम्हें याद हो कि न याद हो।।

— —

नज़ीर अकबराबादी

जन्म १७४० ई०　　　　　　　　　　मृत्यु १८३० ई०

इनका सम्बन्ध उर्दू शायरी के किसी विशेष दौर से नहीं था और कलाम भी एक विशेष रंग का है। नाम वली मुहम्मद और उपनाम नज़ीर है। पिता का नाम मुहम्मद फारूक़ था। दिल्ली में सन् १७४० ई० में पैदा हुए। अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण के समय दिल्ली से आगरा चले आये और ताजमहल के पास मुहल्ला ताज गंज में रहने लगे। यहीं उन्होंने अरबी, फ़ारसी की शिक्षा प्राप्त की। नज़ीर सूफ़ी मनुष्य और धार्मिक स्वभाव के थे। नवाब सआदत अली खां ने और महाराजा भरत सू० ने आप को बुलाया, मगर आप नहीं गये क्यों कि सांसारिक बन्धनों से बहुत दूर भागते थे। शायरी का क्या कहना शायरी तो ख़मीर में मिली हुई थी। उन्होंने इसको अपने जीविका का साधन नहीं बनाया। अध्यापक रह करके जीवन निर्वाह किया। सन् १८३० ई० में इस क्षण भंगुर लोक से परलोक सिधार गये। आप को उर्दू भाषा का शेक्सपीयर कहा जाय तो कोई बुरा न होगा।

विशेषता—नज़ीर ने बहुत से विषयों पर नज़्में लिखी हैं। उनकी बहुत सी नज़्में ज़राफ़त से पूर्ण है सामयिक घटनाओं को अच्छे बुरे दोनों पहलू से बहुत अच्छी प्रकार से उपस्थित किया है। इनके कलाम में कहीं शराबी का रंग झलकता है तो कहीं नसीहत, कहीं ईश्वर वाद का और कभी कभी नज़्मे में मृत्यु, वैराग्य, होली, दीवाली, कृष्णजी इत्यादि पर बहुत अच्छी प्रकार का वर्णन मिलता है।

नज़ीर के कलाम में हमवारी नहीं है जो नज़्मे संजीदगी से लिखी गई हैं, बहुत ही अच्छी हैं। नज़ीर के अच्छे कला के देखने के लिये उनका चुना हुआ कलाम देखना चाहिए।

कलयुग

दुनिया अजब बाजार है कुछ जिस या की सात ले।
नेकी का बदला नेक है वद से बदी की बात ले॥
मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले।
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफात ले॥
कलजुग नहीं कर जुग है या दिन को दे और रात ले।
क्या खूब सौदा नक्द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥१॥

काटा किसी के मत लगा गर मिस्लगुल फूला है तू।
वह तेरे हक मे जह है किस बात पर फूला है तू॥
मत आग में डाल और को फिर घास का पोला है तू।
सुन रख यह नुकता बेखबर किस बात पर फूला है तू॥
कलजुग नहीं कर जुग है ये या दिन को दे और रात ले।
क्या .खूब सौदा नक़्द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥२॥

शोखी शरारत मक्रोफन का वसेखा है यहां।
जो जो दिखाया और को सो आप देखा है यहा॥
खोटी खरी जो कुछ कहे तस का परेखा है यहा।
जो जो पडा तुलता है दिल तिल-तिल का लेखा है यहा॥
कलयुग नहीं कर जुग है ये यां दिन को दे और रात ले।
क्या .खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले॥३॥

जो और की बस्ती रखे उसका भी बस्ता है पुरा।
जो और के मोरे छुरी उसके भी लगता है छुरा॥
जो और की तोड़े घुरी उसका भी टूटे है घुरा।
जो और की लेते बदी उसका भी होता है बुरा॥
कलजुग नहीं कर जुग है ये या दिन को दे और रात ले।
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले।४॥

जो और को फल देवेगा वह भी सदा फल पावेगा।
गेहूँ से गेहूँ जौ से जौ चावल से चावल पावेगा॥
जो आज देवेगा यहाँ वैसा ही वह कल पावेगा।
कल देवेगा फल पावेगा कल पावेगा कल पावेगा॥
कलयुग नही कर जुग है ये यां दिन को दे और रात ले।
क्या खूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥५॥

जो चाहे ले चल इस घड़ी सब जिन्स यां तैयार।
आराम में आराम है आजार में आजार है॥
देना न जा उसको न्याज्ञ दरपा की यह मझधार हैं।
औरों का बेडा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है॥
कलयुग नहीं करजुग है ये या दिनको दे और रात ले।
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले॥६॥

तू और की तारीफ कर तुझको सना रुब्बानी मिले।
कर मुश्किल आसा और की तुझको भी आसानी मिले॥
तू और को मेहमान कर तुझको भी मेंहमानी मिले।
रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी [मिले॥
कलयुग नहीं करजुग है ये या दिन को दे और रात ले।
क्या खूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥७॥

जो गुल खिलावे और का उसका ही गुल खिलता भी है।
जो और के लिये है मुँह उसका ही मुँह मिलता भी है॥
जो और का छीले जिगर उसका जिगर छिलता भी है।
जो और को देवे कपट उसको कपट मिलता भी है॥
कलयुग नहीं करजुग है ये या दिन को दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥८॥

कर चुक जो कुछ करना हो या ये दम तो कोई आन है।
नुक़सान में नुक़सान है इहसान में इहसान है॥
तुहमत में या तुहमत लगे तूफ़ान में तूफ़ान है।
रहमान में रहमान है शैतान में शैतान है॥
कलयुग नहीं करजुग है ये यां दिन को दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥९॥

जह दे तो जह ले शक्कर में शक्कर देख ले।
नेकों की नेकी का मजा मूजी को टक्कर देख ले॥
मोती जो दे मोती मिले पत्थर में पत्थर देख ले।
गर तुझको ये बावर नहीं तो तू भी कर कर देख ले॥
कलयुग नहीं करजुग है ये या दिन को दे और रात को ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥१०॥

अपने नफ़ा के वास्ते मत और का नुक़सान कर।
तेरा भी नुक़सा होवेगा इस बात पर तू ध्यान कर॥
खाना जो खा तो देख कर पानी पिये तो छान कर।
या पावों को रख फूंक कर और ख़ौफ़ से गुज़रान कर॥
कलयुग नहीं करजुग है ये या दिन को दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥११॥

गफलत की यह जगह नहीं या साहेब अदराक रह ।
दिल शाद रख दिल शाद रह ग़मनाक रख ग़मनाक रह ॥
हर हालमें तू भी 'नजीर" अब हर क़दम की खाक़ रह ।
ये वह मक्का है अब मिया या वाक रख वेबाक रह ॥
कलयुग नहीं करजुग है ये यां दिन को दे और रात ले ।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले ॥१२॥

ग़ज़लियात

१

बुतों की मजलिस को महे रोजो और टुक भी क़याम करता ।
कनिश्त वीरा सनम को बन्दा, बरहमनों को ग़ुलाम करता ॥
ख़राब ख़स्ता समझ के तूने प्यारे मुझको अब्स निकाला ।
जो रहने देता तो गुलरुखों में कसम है तेरी, मै नाम करता ॥
भला हुआ जो नक़ाव तूने उठाया चेहरे से ए परी वर ।
वगरना सीने से दिल तडप कर, निगाह में आकर मुक़ाम करता ॥
क़यामत आती जो मुस्कुराकर चमन में जाता वह सैर करने ।
तड़पती बुलबुल सिसिकती क़ुमरी, गुलों पे हंसना हराम करता ॥
'नजीर' तेरी इशारतों से ये बातें गैरों की सुन रहा है ।
वगरना किसमें थी तावो ताकत जो मुझसे आकर कलाम करता ॥

२

चमन में जबसे लव उस ग़ुंचा लव ने खोले हैं।
गुला के पहलू में ग़ुंचे नहीं फफोले हैं ॥
ये महरोमह जो न शेवो फराज़ है गावां।
तुम्हारे बाग में ऐसे कई हिंडोले हैं ॥

हमारे क़तरें अश्क उसकी सर्द मुहरी से।
किसी जमाने में मोती थे अब तो ओले हैं॥

तुम्हारे खन्दे दंदां नुमा की दौलत से।
सदफ तो क्या है कि निस्यां ने मोती रोलें हैं॥

ग़लत है ये जो मेरे घर वह भूल कर आवे।
इधर जो भूल पड़ें क्या वह ऐसे भोले है॥

तुला न हुस्न तुम्हारा वगरना मोजा ने।
फ़लक के शमशोमनर लाख बार तोले है॥

वह संगे दिल जो न बोला तो क्या तअज्जुब है।
मिया "नज़ीर" कहीं बुत भी मुँह से बोले है॥

३

तुम से हम ए हुस्न के सरयार रुखसत हो चले।
मुद्दतों में देखकर दीदार रुखसत हो चले॥

चाहता था दिल तो यूं रहते तुम्हारे पास हम।
पर फलक के हाथ से नाचार रुखस्त हो चले॥

आ गये थे सैर करते तुमको देखा .खुश हुये।
अब खुदा हाफिज हैं हम ऐ यार रुखस्त हो चले॥

फिर भी आ जावेंगे इधर को हम अगर जीते रहे।
अब तो रहना है हमें दुश्वार रुखसत हो चलें॥

क्यों न लाला की तरह दिल हो हमारा दाग़दार।
किस मज़े में छोड़कर गुलजार रुखसत हो चले॥

गुल रुखों की बज़्म में क्या बैठते हो ए 'नजीर'।
तुम भी रुखसत हो कि अब सब यार रुखसत हो चले॥

बरसात का तमाशा

ख़ुर्शीद गर्म होकर निकला है अपने घर से।
लेता है मोल बादल करके तलाश जर से॥
आई हवा भी लेकर बादल को हर नगर से।
आये असाढ़ तो अब दुश्मन के घर से बरसे॥
आ यार चल के देखें बरसात का तमाशा॥ १॥

क़ासिद सबा के दौड़े हर तरफ मुँह उठा कर।
हर कोहो दस्त को भी कहते है यूँ सुना कर॥
हा सब्ज़ जोड़े पहनो हर दल नहा नहा कर।
कोई दम को मेघराज देखेगा सब को आकर॥
आ यार चल के देखें बरसात का तमाशा॥ २॥

सावन के बादलों ने फिर आ घटा जो छाई।
बिजली के अपनी सूरत फिर आन कर दिखाई॥
हो मस्त रअद गरजा कोयल की कूक आई।
बै क्या मजे की रिमझिम झड़ी लगाई॥
आ यार चल के देखें बरसात का तमाशा॥ ३॥

आकर कभी मजे की नहीं फुहार बरसे।
चीज़ों का रंग टपके, हुस्न और निखर बरसे॥
एक तरफ अबलती की बाहम कतार बरसे।
झाजूं उमड के पानी मूसल की धार बरसे॥
आ यार चलके देखें बरसात का तमाशा॥ ४॥

काली घटा है हर जगह बरसे है मेंह की धारें।
और जिसमें उड रही है बगलों की सौ कतारें॥
कोयल पपीहे कूकें और कूक कर पुकारें।
और मोर मस्त हो कर जुं कोकला चंगारें॥
आ यार चल के देखें बरसात का तमाशा॥ ५॥

हर कोह की कमर तक सब्ज़ा है लहलहाता।
बरसे है मेंह झडा झड़ पानी बहा है जाता॥
वहशो तू पर हर एक मिल मिल के है नहाता।
गोगा करें है मेढ़क झींगुर है गुल मचाता॥
आ यार चल के देखें बरसात का तमाशा॥ ६॥

बरसात और फिसलन

बरसात का जहा में लश्कर फिसल पड़ा।
बादल भी हर तरफ से हवा पर फिसल पड़ा॥
झड़ियां मेंह भी आके सरासर फिसल पडा,
छत्ता किसी का शोर मचा कर फिसल पड़ा।
कोठा झुका अटारी गिरी, दर फिसल पडा॥ १॥

झडियां ने इस तरह का दिया आक झड़ लगा॥
सुनिये जिधर उधर को धडा धडा के है सदा।
कोई पुकारे है मेरा दर वारजा गिर चला॥
कोई करे है हाय, कहो मैं बनाऊं क्या।
तुम दर को झींकते हो, मेरा फर फिसल पड़ा॥ २॥

यँा तक हरेक मकां की फिसलन की है जमीं।
निकले जो घर से उसको फिसलने का है यकीं॥
मुफलिस ग़रीब पर ही मौकूफ कुछ नहीं।
क्या फ़ील का सवार है क्या पालकी नशीं।
आया जो इस जमीन के ऊपर फिसल पड़ा॥ ३॥

चिकनी जमी पे यां तईं कीचड है बेशुमार॥
कैसा हो होश्यार ये फिसले है एक बार।
नौकर का बस कुछ इसमे न आका का अख्तियार॥
बचे गली मे हमने तो देखा है कितने कर।
आक़ा जो डगमगाय तो नौकर फिसल पड़ा॥ ४।

कूचे में कोई और कोई बाज़ार में गिरा।
कोई गली में गिरके कीचड़ में लोटता॥
रस्ते के बीच पावों किसी का रपट गया।
डरा सब जगह के गिरने से आया जो बच बचा॥
वह अपने घर के सेहन में आकर फिसल पड़ा॥ ५॥

ज़ौक़ देहलवी

जन्म १२०४ हि०　　　　　　　　　मृत्यु—१२७१ हि०

आपका नाम ख़ान बहादुर ख़ाक़लिये हिन्द शोख़े इब्राहीम ज़ौक देहलवी है। ख़ानबहादुर और ख़ाक़ानिये हिन्द उपाधि है। १६ वर्ष की आयु मे अकबर शाह की प्रशंसा मे एक क़सीदा लिख कर पेश किया जिसमे बहुत सी सनअते रखी थी जिसकी अन्तिम चरण यह था।

जब कि सरतानो असद मह का ठहरा मसकन।
आब वायवैला हुये नशूनुमाये गुलशन॥

इस कसीदे पर शाही दरबार से ख़ाक़ानिये हिन्द का ख़िताब मिला। ये सन् १२०४ हि० मे काबली दरवाना दिल्ली मे पैदा हुये। उनके पिता शेख़ रमज़ान एक गरीब सिपाही थे। आप शाह नसीर से बराबर परामर्श लेते रहे। दिल्ली के आख़िरी बादशाह बहादुर शाह ज़फर आपको कलाम दिखाते थे। आप ज्योतिष, रमल, हकीमी, इतिहास तस्व्वुफ (वेदान्त) के विद्वान थे। एक बार दीवान चन्द दलाल ने दक्षिण बुला भेजा। आप ने एक ग़ज़ल लिख कर भेज दी जिनका अन्तिम चरण यह था—

इन दिनों गरचे दकिन में है बड़ी कद्रे सुख़न।
कौन जाय "ज़ौक़" पर दिल्ली की गलिया छोड़कर॥

काव्य की विशेषता:—कलाम के ज़बरदस्त कवि थे। कुछ लक्षण इनकी शायरी के ऐसे थे जिसके कारण आपको सौदा का उत्तराधिकारी कहा जाता है। ज़बान और मुहावरात पर पूर्ण अधिकार था। आपकी एक नई शैली थी जो उस समय बहुत पसन्द की जाती थी। और तरकीबे की बंदिश इतनी चुस्त और हर प्रकार से शुद्ध होती थी कि मजाल

क्या कि कोई एक शब्द को अपनी जगह से हटा दे। बल्कि नज़्म का ये हाल होता था कि जहा पर जी चाहे इसको गद्य कर दीजिये और घटाना बढ़ाना न पड़े। उनकी हर ग़ज़ल का मतला एक विशेष प्रकार का होता था जो कि पूरी ग़ज़ल को चमका देता था।

रुबायात

१

दुनिया के आलम "ज़ौक़" उठा जायेंगे।
हम क्या कहें क्या आये थे क्या जायेंगे।
जब आये थे रोते हुये आप आये थे।
अब जायेंगे औरों को रुला जायेंगे।

२

ए ज़ौक करेगा कोई दुनिया क्या तर्क।
दुनिया है बुरी बला अरे कैसा तर्क॥
मुमकिन नहीं तर्क हो किसी से दुनिया।
जब तक न करे आप उसे दुनिया तर्क॥

ग़ज़लियात

१

क्या रोका अपने गिर्यः को हमने कि लग गई।
फिर वही आंसुओं की झड़ी दो घड़ी के बाद॥
कोई घड़ी अगर वह मुलायम हुये तो क्या।
कह बैठेंगे फिर एक कड़ी दो घड़ी के बाद॥
अल्लाह रे ज़ोफ़ सीने से हर आह बे असर।
लब तक जो पहुँची भी तो चढ़ी दो घड़ी के बाद॥

कल इससे हमने तर्के मुलाक़ात की तो क्या।
फिर इस बग़ैर कल न पड़ी दो घड़ी के वाद॥
थे दो घडी से शेख़ जो शे.खी बघारते।
वह सारी शे.खी उनकी झड़ी दो घड़ी के वाद॥
परवाना गिर्द शमा के शब दो घड़ी रहा।
फिर देखी उसकी ख़ाक पड़ी दो घडी के बाद॥
तू दो घड़ी का वादा न कर देख जल्द आ।
आने में होगा देर घड़ी दो घड़ी के बाद॥
गो दो घड़ी तक उसने न देखा इधर तो क्या।
आखिर हमीं से आख लड़ी दो घड़ी के बाद॥
क्या जाने दो घड़ी वह रहे "जौक" किस तरह।
फिर तो न ठहरे पावो घड़ी दो घड़ी के बाद॥

२

सब मजाहिब में यही हैं नहीं इस्लाम में ख़ास।
कि जहां आम है होता है वहा आम में ख़ास॥
सागरों की तू वाक्फि नहीं कैफियत से।
देख अकसे रुख़ साकी है इसी जाम में ख़.स॥
खिज़्र बातें हैं कि है चश्मे हैवा जा वख्श।
है यही ख़ासियत उसकी लवे दशनाम में ख़ास॥
शेख़ साहब के हैं नजदीक वह ख़ासाने खुदा।
खिदमती उन्के हैं जो जमरै .खुदाम मे .खास॥
काम दिन रात है आशिक़ का तेरै नाक़ामी।
कि दिया तूने लगा उसको इसी जाम .खास॥
इश्क़ का जोश है जब तक कि जवानी के हैं दिन।
ये मर्ज करता है शिद्दत इन्हीं अय्याम में .खास॥
"जौक" असमाये एलाही है सब इस्मे आज़म।

३

उसके हर नाम में इ.ज्जत है न एक नाम मे .खास ॥
सितम को हम करम समझे जफा को हम वफा समझे।
और इस पर भी न समझे वह तो इस बुत से खुदा समझे ॥
खा होता है इस बुस्तां सरा से रवाने गुल।
चिटकने को सबा गुञ्चे के आवाजे दरा समझे ॥
हिसाब असला न पूछे मुझ से मेरे दिल के जखमों का।
हिसाबे दोस्ता दर्दे दिल अगर वह दिल रुबा समझे ॥
न आया खाक भी रस्ता समझ मे उम्रे रफता का।
मगर समझे तो दाग़े मासीअत को नक्श या समझे ॥
समझ ही .में नहीं आती है कोई बात 'जोक़" उस की।
कोई जाने तो क्या जाने कोई समझे तो क्या समझे।

४

वक़्त पीरी शबाब की बातें।
ऐसी है जैसे रुव्वाब की बातें ॥
उस के घर ले चला मुझे देखो।
दिले खाने .खराब की बातें ॥

वाइज छोड जिक्र नेमते .खुल्द।
कर शराबों .कबाब की बातें ॥
हरफ आया जो आबरू पे मेरे।
हैं ये चश्मे पुर आब की बातें ॥

याद है मह जबीं कि भूल गये !
वह शबे माहेताब की बातें ॥
तुझको रुसवा करेंगी खूब ए दिल ।
तेरी ये इजतेराब की बातें ॥

जाओ होता है और भी .खुफकान ।
सुन के नासह जनाब की बातें ॥
जामे मय लब से लौं लगा अपने ।
छोड़े शर्मों हेजाब की बातें ॥

सुनते हैं उस को छेड़-छेड़के हम ।
किस मजे से अताब की बातें ॥
जिक्र किया जोशे इश्क़ में ए 'ज़ौक' ॥
हम से हो सब्रों ताब की बातें ।

५

ए ''जोक'' वक्ते नाला के रख ले जिगर पे हाथ ।
वरना जिगर को रोयेगा तू धर के सर पे हाथ ॥
मै नातवा हूँ ख़ाक का परवाना की गुबार ।
उठता हूँ रखके दोशेनसीमे सहर पे हाथ ॥

खत देके दिल में था कि जवानी भी कुछ कहे ।
पर उसने रख दिया देहन नामा बर पे हाथ ॥
खाना है इस मजे से ग़मे इश्क मेरा दिल ।
जेसे गरसनह मारे है हलवाप तर पे हाथ ॥

जूं पंज शाख़ा तू न जला उंगलिया तबीब।
रख-रख के हाथ आशिके तफ़ता जिगर पे हाथ ॥
ए शमा एक चोर है वादे नसीमे सुब्ह।
मारे है कोई दम में तेरे ताजे ज़र पे हाथ ॥

छोडा न दिल मे सब्र न आराम न शकीब।
तेरी निगह ने साफ़ किया घर के घर पे हाथ ॥
जोदेखे उसका थाम के दिल बैठ जाय "ज़ौक़"।
जब नाज़ से खड़ा हो वह रख कर कमर पे हाथ ॥

६

हम तुमसा ओ दू अपना किसी को नहीं पाते।
तुम पाते हो हम को तो छुरी को नहीं पाते ॥
क्यों हम ने दिया तुझे ओ सङ्ग दिल अपना।
कमबख़्त हम उस सख़्त घडी को नहीं पाते ॥

वह कौन सा ग़म है जिसे पाते नहीं दिल में।
लेकिन नही पाते तो ख़ुशी को नहीं पाते ॥
लेते हैं शबे वस्ल में हम उनके जो बोसे।
वह लब पे सेहर रंग तक मिस्सी को नहीं पाते ॥

मैं ऐसा कहीं गुम हूँ कि याराने अमद हूँ।
गुम होके मेरी गुमशुद्दगी को नहीं पाते ॥
मालूम नहीं उसके देहन है के नहीं है।
ए 'ज़ोक़' हम उस सर ख़फ़ी को नहीं पाते ॥

मिर्ज़ा असद उल्ला खां ग़ालिब

सन् १२१२ हि०	से	सन् १२८५ हि०
या		या
सन् १७९६ ई०	से	सन् १८६९ ई०

उर्दू भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि आसमॉने शायरी के चमकते हुए सितारे, अपने समय के सर्वश्रेष्ठ माने हुए उस्ताद, दार्शनिक शायर मिर्ज़ा असद उल्ला खा ग़ालिब सन् १७९६ ई० में आगरा में पैदा हुये थे। लक़ब मिर्ज़ा नौशा था और ख़िताब नज्मुद्दौला दबीरुल मुल्क, निज़ाम जंग शंहशाहे दिल्ली से प्राप्त हुआ था। मिर्जा के दादा पहले भारत आये और शाहेआलम के दरबार मे इज़्ज़त पाई। ग़ालिब प्रथम बार सन् १२१६ हि० मे दिल्ली आये। आप पहले असद उपनाम रखते थे मगर बाद मे उन्होंने अपना उपनाम ग़ालिब बदल कर रख लिया। गालिब बहुत मिलनसार थे। दोस्तो से खतो किताबत का सिलसिला जारी रहता था। उन्होने नज्म ही में नहीं गद्य मे भी नाम पैदा किया। उन्होंने पत्र लिखने का एक नवीन नियम निकाला जिसकी लोगो ने नकल करनी चाही लेकिन आज तक लोग अपने इस कार्य मे सफल नहीं हुये। ग़ालिब धार्मिक ढोंगो से कोसो दूर भागते थे। इनके दोस्तो और शार्गिदो मे सब से नामी हर गोपाल तफ़्ता थे। ग़ालिब इनको बहुत मानते थे। तफ़्ता साहब फ़ारसी का शेर बहुत अच्छा कहते थे। आप ग़ालिब के ख़ास शार्गिदों मे गिने जाते हैं। वह अपनी बुराई नहीं छिपाते थे। आप शराब पीते थे। एक जगह कहते हैं।

ये मसाएले तसव्वुफ़ ये तेरा ब्यान .ग़ालिब।
हम तुझे वली समझते जो न बादः ख़्वार न होता॥

मौलाना हाली ने यादगारे ग़ालिब में लिखा है कि जिस समय ये ग़ज़ल बादशाह को सुनाई तो बादशाह ने मक़ता सुन कर कहा कि भाई हम तो तब भी ऐसा न समझते थे। मिर्ज़ा साहब ने उत्तर दिया हुजूर तो अब भी ऐसा ही समझिये। मगर यह इस वास्ते कहा कि मैं उसपर गर्व न करूँ। आपने कविताएँ उर्दू में ही नहीं लिखी हैं, फारसी के भी विद्वान कवि थे। आपने अपनी यादगार में निम्नलिखित कृतियाँ छोड़ी हैं। औदे हिन्दी, उर्दू मुअल्ला, कुल्लियात नज्म फ़ारसी, दीवाने उर्दू, लताइफे गैबी, तेगे तेज़, क़ाता बुर्हान, पंच आहंग, नामए ग़ालिब, महरे नीमरोज, दस्तंबू सन्द चीन।

आपकी मृत्यु १५ फ़रवरी सन् १८६६ ई० में दिल्ली में हुई और सुलतान निज़ाम उद्दीन औलिया के अहातए मज़ार में दफ़न हैं तारीख़े वफ़ात स्वयं कही है। "आह ग़ालिब बमुर्द"

शायरी की विशेषतायें—किसी कवि ने क्या खूब कहा है 'अर्थ अधिक अति अक्षर थोड़े'—यही विशेषता आपकी शायरी में पाई जाती है। ग़ालिब की शायरी को तीन काल में विभक्त किया जा सकता है। ग़ालिब अपनी विद्वता को अपने उर्दू दीवान से नहीं प्रकट करना चाहते

फ़ारसी बीताब बीनी नक्श हाय रंग व गुज़ार।
अजनजमूअए उर्दू के बेरंगें मन अस्त॥

थे। प्रथम दौर मिर्ज़ा की शायरी का उस समय माना जाता है जब से उन्होंने शेर कहना प्रारम्भ किया। ग़ालिब ने इस दौर के कलाम को अपने दीवान से छांट दिया था लेकिन अब बड़े प्रयत्न के बाद जमा कर के छापा गया है जिससे इनकी शायरी के विषय में पता चलता है। उनके कलाम की नई नई तरकीबें योरोपीय कवि से मिलती जुलती हैं जिनको अंग्रेजी में स्कोलामन कहते हैं। उस समय उनका

कलाम फ़ारसी गर्भित होता था। इस से जलकर हकीम आगा जान ऐश ने यह क़लाम कहा था।

अगर अपना कहा तुम आपही समझे तो क्या समझे।
मज़ा कहने का जब है एक कहे और दूसरा समझे।
कलाम "मीर" समझे और जबाने मीरजा समझे।
मगर इन कहा ये आपही समझें या खुदा समझे॥

दूसरे दौर मे फ़ारसी का ज़ोर कम हो गया और शेर समझ मे आने के काबिल हो गया। तीसरे दौर मे इन के कलामे फ़न का लुब्बे लुबाब है। इस मे शायरी की चरमतम सीढ़ी को भी पार कर के बहुत आगे निकल गये है खूसीसीयाते गालिब मे पहली विशेषता जिद्दत पसन्दी है, यानी नई नई बातें पैदा करना है

दूसरी विशेषता है कलाम में बात से बात पैदा करना।

तीसरी विशेषता यह है कि अशआर ख्यालात का सही फ़ोटो होता है।

चौथी विशेषता में मिर्जा के कलाम फ़लसफा का विवाद होता है इस दौर मे गालिब एक (Philosopher) की हैसीयत से आते हैं।

पॉचवी विशेषता जज़्बात निगारी मे कलाम पैदा करना है।

इक़बाल ने आप के विषय मे क्या खूब कहा है।

फिक्रे इन्सा पर तेरी हस्ती से ये रौशन हुआ।
है पर मुर्गे तखइयुल की रसाई ताकुजा॥
था सरापा रूह तू, बज्मे सुखन पैकर तेरा।
.जेबे महफ़िल भी रहा, महफिल से पिन्हां भी रहा॥

दीद तेरी आख को उस हुस्न की मंजूर है।
बन के सोजे जिन्दगी हर शये में जो मस्तूर है॥१॥

महफ़िले हस्ती तेरी बरबत से है सर मायादार।
जिस तरह नदी के नग़मों से सकूत कोहसार॥
तेरे फ़िरदोसे तख़इयुल से है .क़ुदरत की बहार।
तेरी कुश्ते फ़िक्र से उगते हैं आलिम सब्ज़ावार॥
जिन्दगी मुजमर है तेरी शोख़ीय तहरीर में।
तावे गोपाई से जुंबिश है लबे तस्वीर में॥२

नुत्क़ को सो नाज़ में है तेरे लबे एजाज पर।
महवे है रत है सुरइया रफ़अते परवाज पर॥
शाहिदे मज़मूने तसद्दुक़ है तेरे अन्दाज़ पर।
ख़न्दराजन है गुंचें दिल्ली गुले शीराज़ पर॥
आह तू उजड़ी हुई दिल्ली में आरामिदा है।
गुलशने "बीमार" में तेरा हमनवा .ख्वाबीदा है॥३॥

आप की कविता के चन्द सरल नमूने सेवा में उपस्थित हैं।

ग़ज़लियात

(१)

घर हमारा जो न रोते भी तो वीरां होता॥
वह गर वह न होता व्यावं होता।
तंगीये दिल का गिला क्या यह वह काफ़िर॥
दिल हैं कि अगर तंग न होता तो परीशा होता।
बाद यक उम्र वरअ चार तो देता बारे।
काशरिज़वा ही दरेयार का दरबां होता॥

न था कुछ तो खुदा था कुछ न होता तो खुदा होता ।
डूबोया मुझ को होने ये न होता क्या होता ॥
हुआ जब ग़म से यू बेहिस तो गम क्या सरके कटेन का।
न होता गर जुदातन से तो जान पर धरा होता ॥
हुई मुद्दत के "ग़ालिब" मर गया पर याद आता है ।
वह हर बात पर कहना यूँ होता तो क्या होता ॥

(२)

हुई ताखीर तो कुछ वाएसे ताखीर भी था ।
आप आते थे मगर कोई अपना गीर भी था ॥
तुम से बेजा है मुझे अपनी तबाही का मिला।
उसमें कुछ शायबए खूबीये तकदीर भी था ॥

तू मुझे भूल गया हो तो पता बतला दूँ ।
कभी फतराक में तेरे कोई नखचीर भी था ॥
कैद में थी तेरे वहशी को नहीं जुल्फ की याद ।
हां कुछ एक रंज गेरा बारीये .जजीर भी था॥

बिजली एक कूंद गई आखों के आगे तो क्या ।
बात करते कि मै लबे तिश्नै तकरीर भी था ॥
यूसुफ उसको कहें और कुछ न कहे खेर हुई ।
गर बिगड़ बैठे तो मैं लायके तअज़ीर भी था ॥

देख कर ग़ैर को हो क्यों न कलेजा ठंडा ।
नाला करता था वले तालिबे तासीर भी था ॥
पेशा में ऐब नहीं रखिये न फरहाद को नाम ।
हम ही आशुफह सरें में वह जवा 'मीर' भी था॥

हम थे मरने को खड़े पास न आया न सही।
आखिर उस शोख़ के तरकश में कोई तीर भी था॥
पकड़े जाते हैं फारिश्तों के लिखे पर नाहक़।
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था॥

रेखती के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो "ग़ालिब"।
कहते हैं अगले जमाने में कोई 'मीर' भी था॥

३

हम से खुल जाओ बवक्ते मय परस्ती एक दिन।
वरना हम छेड़ेंगे रखकर उज्रे मस्ती एक दिन॥

ग़चए ओजे बनाये आलमे इनका न हो।
इस बलन्दी के नसीबों में है परस्ती एक दिन॥
क़र्ज की पीते थे मय लेकिन समझते थे के हां।
रंग लायेगी हमारी फाक़ा मस्ती एक दिन।

नगमहाय दिल को भी ए दिल ग़नीमत जानिये।
बे सदा हो जायगा ये साजे हस्ती एक दिन॥
धूल घापा उस सरापा नाज का शेवा नहीं।
हमही कर बैठे थे "ग़ालिब" पेश दस्ती एक दिन॥

४

दोनों जहान देके वह समझे के ख़ुश रहा।
या आ पड़ी ये शर्म कि तकरार क्या करें॥
थक थक के हर मुक़ाम पे दो चार रह गये।
तेरा पता न पायें तो नाचार [illegible] करें॥
क्या शमा के नहीं है हवा ख़्वा[illegible] बज्म।
हो ग़म ही जां गुदाज़ तो ग़म[illegible] करें॥

५

गर तुझको है यक़ीने अजाबत दुआ मांग ।
यानी बेग़ैर यक दिले बे मुद्दुआ न माग ॥
आता है दाग़ हसरते दिल का शुमारे यार ।
मुझसे मेरे गुनह का हिसाब ए .खुदा न माग ॥
तुम जानो तुम को ग़ैर से जो रस्मो राह हो ।
मुझको भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो ॥

६

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो ।
हम सुख़न कोई न हो और हम .जबा कोई न हो ॥
बे देरा दीवार सा एक घर बनाना चाहिये ।
कोई हमसाया न हो और पासबा कोई न हो ॥
पड़िये गर बीमार तो कोई नहो तीमार दार ।
और अगर मर जाइये तो नौहा .ख्वा कोई न हो ॥

७

दुख जी के पसन्द हो गया है ग़ालिब ।
दिल रुककर बन्द हो गया है गालिब ॥
वल्लाह कि शब को नींद आती ही नहीं ।
सोना सौगन्ध हो गया है ग़ालिब ॥

८

न पूछ इस की हक़ीक़त हुजूर वाला ने ।
मुझे जो भेजी है बेसन की रोग़नी रोटी ॥
न खाते गेहूँ न जाते निकाले खुल्द सेबाहर ।
जो खाते हजरते आदम बेसनी रोटी ॥

एक विद्यार्थी पढ रहा था उसने पूछा रोटी कौन सी ऐसी मुख्य वस्तु है कि बादशाह ने उसे भेजी है उसी पर उन्होंने उपर्युक्त क़ता कहा है।

६

कहते हैं कि अब वह मरदुम आजार नहीं।
उश्शाक़ की पुर्शिश से उसे आर नहीं॥
जो हाथ कि ज़ुल्म से उठाया होगा।
क्यों कर मानूं उसमें तलवार नहीं॥

———

दाग़ देहलवी

जन्म सन् १८३१ ई० **मृत्यु सन् १९०५ ई०**

नवाब मिर्ज़ा खां दाग उर्दू ज़बान के एक अच्छे कवि माने जाते हैं। इन्होने उर्दू कविता मे एक नवीन ज्योति उत्पन्न कर दी। मुक़रिबुल लसान, बुलबुले हिन्दोस्तान, जहानेउस्ताद, दबीरुल मुल्क निज़ाम यार जंग फसीहुल मुल्क का ख़िताब आप को प्राप्त हुआ था।

आप नवाब शमशुद्दीन खां के बेटे थे। पिता की मृत्यु के पश्चात् दाग की माता ने बहादुर शाह के पुत्र मिर्ज़ा मुहम्मद सुल्तान उर्फ़ मिर्ज़ा फ़खरू से विवाह कर लिया था। इसी कारण दाग को कुछ दिनो लाल क़िले मे रहने का अवसर प्राप्त हुआ और वहीं शिक्षा भी प्राप्त की। इसी सिलसिले से ज़ौक़ का उस्ताद मिला और इन्हीं से इस्लाह लेते रहे। ग़दर के बाद रामपुर आये। यहाँ दाग़ का बड़ा आदर सत्कार हुआ। दाग की भाषा मे शक्ति व सरलता और वर्णन मे विशेष प्रकार की चचलता और बांगपन था इस लिये दाग़ का कलाम बहुत ही प्रसिद्ध है। दाग मीठी, सुरीली और आशिक़ाना शायरी के सिद्ध उस्ताद थे। दाग के शागिर्द १५ सौ से अधिक थे। जिसमे सर डाक्टर इकबाल, सायल देहलवी, बेख़ुद देहलवी, अहसन मारहवी, जिगर मुरादाबादी, आगा शायर देहलवी, नूह नारवी, रहमत बनारसी इत्यादि प्रसिद्ध हैं। हैदराबाद मे पक्षाघात से पीड़ित हुए तब से ज़बान बन्द हो गई। कुछ दिनों बीमार रहकर सन् १९०५ ई० मे इस संसार से सर्वदा के लिये विदा हो

गये। आप ने एक मसनवी और दीवान छोड़ा है। डाक्टर सर इक़बाल ने आप का मरसिया लिखा जो कि बहुत प्रसिद्ध है एक शेर देखिये।

चल बसा "दाग़" आह मइयत उसकी ज़ेमीदोश है।
आख़िरी शायर जहानाबाद का ख़ामोश है॥

काव्य की विशेषताएँ

दाग की प्रसिद्धि उन तीन चीज़ो पर निर्भर है जो उन की शुहरत का कारण हुई। उन्होने पेचीदा और गजलक तरकीबो और भद्दे भोंडे फारसी अरबी शब्दो को उर्दू मे जगह नहीं दी। इनका कलाम तकल्लुफ से ख़ाली है। सादे और सरल शब्द प्रयोग करते थे। नये तुले शायरी के सिद्धान्त पर खरे उतरने वाले हैं। इनका कलाम हृदय की भावनाओं का फोटो है। आप ने इस प्रकार उर्दू शायरी मे नवीन चेतना भर दी है जिसे उर्दू भाषा भाषी कभी नहीं भूल सकते।

गज़लियात

१

यह बात है बहार चमन ही के वास्ते।
आया नही पलट के जमाना शबाब का॥
मैं एक सवाल करके पशीमान् हो गया।
लच्छा बंधा हुआ है हजारों जवाब का॥

जब मैं करूं सवाल तो कहते हो चुप रहो।
क्या बात है जवाब नहीं इस जवाब का॥
ए ज़ुल्फे यार वजह भी कुछ पेचो ताब की।
ए चश्म यार कोई सबब है अताब का॥

२

दिल को ताका तो मेरी जान जिगर छोड दिया।
इस तरफ भी न कोई तीरे नजर छोड़ दिया॥
क्या नजाकत की शिकायत है ग़नीमत जानो।
हमने लपटा के गले वक्ने सहर छोड़ दिया॥

"दाग़" वारफता तबीअत का ठिकाना क्या है।
खाना बर्बाद ने मुद्दत हुई घर छोड दिया॥

३

मजा हर एक को ताजा मिला है इश्क जानां का।
निगाह को दीद का लब को फुग़ा का दिल अरमा का॥
नहीं मालूम एक मुद्दत से कासिद हाल कुछ उनका।
मेजाज अच्छा तो है या शबवखैर उस आफत जा का॥

ये क्या है आज ग़ैरों से मेरी तारीफ होती है।
ये क्या हैं खुद क्यों होता है .अपने जौरपिहां का॥
फलक पर वह बना अहले जमींथी परदापोशी को।
मगर उस दुश्मन ने जान किसी का ऐब कब टाका॥

बिनाकर अपना दीवाना अलग बचकर चले जाना।
तेरे दामन से लेना है हमें बदला गरीवाका॥
किसी की शर्म आलूदा निगाहों में ये शोखी है।
इसे देखा उसे देखा इधर ताका उधर झाका॥

तेरी आतिश क्या "दाग़" रोशन है जमाने पर।
पिघल जाता है मिलशमऽ दिल हर एकसुखनदाका॥

४

बला से इजतराबो दर्द ही बनकर ठहर रहना।
किसी सूरत से तुम रहना मेरे दिल में अगर रहना॥
बुराई और भलाई जब कि तेरे हाथ है अपनी।
तो छोड़ा हम ने राजी आज से तक़दीर पर रहना॥

गुजारी मैंने सारी रात ये कह कर वे अब आये।
जरा ए चश्म तर थमना जरा ए दिल जिगर रहना॥
तुझे वह जान कर बेखुदा कहेंगे ग़ैर से दिल की।
ख़बरदार एदिल उस की बज़्म में तू बख़ैर रहना॥
डरो अल्लाह से ए "दाग़" देखो होश में आओ।
बुतो की याद में ग़ाफिल .खुदा से इस कदर रहना॥

५

मुहब्बत में करे क्या कुछ किसी से हो नहीं सकता।
मेरा मरना भी तो मेरी .खुशी से हो नही सकता॥
किया है वायदे फरदा उन्होंने देखिये क्या हो।
यहा सब्रो तहम्मुल आजही से हो नहीं सकता॥

चमन में नाज़ बुलबुल ने किया जब अपने नाले पर।
चिटक कर ग़ुचा बोला क्या किसी से हो नहीं सकता॥
न रोना है तरीके का न हंसना है सलीके का।
परीशानी में कोई काम जी से हो नहीं सकता॥

हुआ हूँ इस कदर महबूब अर्जे मुद्दआ कर के।
कि अबतो उज़्र भी शरमिन्दगी से हो नही सकता॥
.खुदा जब दोस्त है ए "दाग़" क्या दुश्मन से अन्देशा।
हमारा कुछ किसी के दुश्मनी से हो नहीं सकता।'

६

ये आमद है कि आफत है निगह कुछ है अटा कुछ है ।
एलाही .खैर मुझसे आशना बेगाना आता है ।।
रुखे रौशन के आगे शमऽ रख कर वह ये कहते हैं ।
उधर जाता है या देखें इधर परवाना आता है ।।

कभी चलना कभी रुकना कभी मिलना कभी खिचना ।
तेरे .खंजर को हर अन्दाज माशूकाना आता है ।।
दग़ा शोखी शरारत बेहयाई फितना परदाजी ।
तुझे कुछ और भी ए नरगिसे मस्ताना आता है ।।

वही झगडा है .फुर्कत का नहीं किस्सा है उलफत का ।
तुझे ए "दाग़" कोई और भी अफसाना आता है ।।

.ख्वाजा अलताफ हुसैन हाली

जन्म सन् १८७३ ई०　　　　　　मृत्यु-सन् १९१४ ई०

'ख्वाजा अलताफ हुसैन उपनाम "हाली" पानीपत में पैदा हुए। जवानी मे दिल्ली आये। प्रारम्भ मे शेफता के शिष्य हुये। अंत में ग़ालिब के शागिर्द हो गये। और मिर्ज़ा गालिब के प्रसिद्ध शिष्यो में गिने जाने लगे। गद्य और पद्य दोनों ही पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था अपना परिचय देते हुए लिखा है—

"हाली" सुखन में शेफता से मुस्तफीज हूँ।
शागिर्द मीरज़ा का मुकल्लिद् हूँ मीर का ॥

शेफता की मृत्यु के बाद हाली लाहौर गये। वहाँ पंजाब गवर्नमेन्ट के बुकडिपो मे पुरानी पुस्तकों के संग्रह को ठीक करने के लिये रखे गये। इसी समय कनरल हालराइड, डाइरेक्टर शिक्षा विभाग ने लाहौर मे एक मुशायरे के लिये एक हाल बनवाया जिसमे "मिन्ते तरह" के बदले एक विशेष विषय दिया जाता था उसी पर कविता करते थे आपने लाहौर मे अंग्रेज़ी भी काफी जानली। आप कुछ दिन ऐंगलो अरबिक स्कूल, दिल्ली मे शिक्षक भी रहे। इसी काल मे सर सैयद से भी भेंट हुई। उन्होंने आप को हैदराबाद से वज़ीफा दिलवाया। उन्होंने अपनी अन्तिम आयु तक का समय लिखने लिखाने मे व्यतीत किया। सन् १९०४ ई मे शम-सुल उलमा का खिताब मिला। १९०७ ई० All India educational Conference के सभापति हुये। ३१ दिसम्बर सन् १९१४ को आप की मृत्यु हुई।

विशेषता:—हाली आलोचक, जीवन चरित लेखक और अच्छे कवि थे। उन्होंने अपने गद्य और पद्य मे एक नवीन धारा का प्रवाह किया है।

ग़ज़ल मे एक दिलकशी और रंगीनी पैदा कर दी। आपने शेरो शायरी की एक श्रेणी कायम किया। उस नवीन तर्ज़ का उद्घाटन किया नज्मे भी लिखी हैं। आप ने गद्य और पद्य दोनों ही मे अच्छी अच्छी पुस्तके लिख कर उर्दू मे क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। मुसद्दस हाली और मुकदमा शेरो-शायरी आप की सब से बड़ी प्रसिद्ध पुस्तक है। बहुत सी पुस्तके आप की उच्च कक्षाओ मे पढाई भी जाती हैं। आपकी पुस्तको का कई भाषाओ मे अनुवाद हो चुका है।

रुबायात

ईश्वर है

हिन्दू में सनम में जलवा पाया तेरा।
आतिश पे मुग़ा ने राग गाया तेरा॥
दहरी ने किया दह से ताबीर तुझे।
इनकार किसी से न बन आया तेरा॥

देखिये क्या होता है

इशरत का समर तल्ख़ सदा होता है।
हर कहकहा, पैग़ामे बुको होता है॥
जिस कौम को ऐसा दोस्त पाया हूँ मै।
कहता हूँ कि अब देखिये क्या होता है॥

रोने का निमंत्रण

बुलबुल की चमन में हम जबानी छोडी।
बज़्मे शोअरा में शेर ख़्वानी छोडी॥
जब से दिले जिन्दा तूने हमको छोड़ा।
हमने भी तेरी राम कहानी छोड़ी॥

संसार क्षणिक है

दुनिया ये दिनों को फस्ले फ़ानी समझो ।
हर चीज़ यहा की आनी जानी समझो ॥
पर जब करो आग़ाज कोई काम बड़ा ।
हर सास को उम्रे जावेदानी समझो ॥

बचकर रहिये

हाली रहे रास्ते जो कि चलते है सदा ।
खतरा उन्हें गुर्ग का न डर शेरो का ॥
लेकिन इन भेड़ों से वाजिब है हजर ।
भेड़ों के लवास में है जो जलवा नुमा का ॥

ग़ज़लियात

१

कोई मरहम नहीं मिलता जहा में ।
मुझे कहना है कुछ अपनी जवां में ॥
कही अनजाम आ पहुँचा वफा का ।
घुल जाता हूँ अव के इमतेहां में ॥
नया है लीजिये जव नाम उसका ।
वहुत उसअत है मेरी दास्तां में ॥
दिले पुरदर्द से कुछ काम लूंगा ।
अगर फ़ुरसत मिली मुझको जहां में ॥
वहुत जी .खुश हुआ 'हाली' से मिल कर ।
अभी कुछ लोग वाकी है जहां में ॥

२

कुछ हंसी खेल समझना ग़में हिजरा मे नहीं ।
चाक दिल में है मेरे जो कि गरीबा में नहीं ॥
खोदिया यास ने ज़ौक़े ख़लिशे फ़िक्रे वैसाल ।
एक मजा था सो वह अब का विशेपिहां में नहीं ॥
हमने की सैरे चमन ग़ौर से एक बुलबुले जार ।
बात चुभती हुई कोई गुलो रैंहा मे नहीं ॥
इश्क़ ने मिस्र में सौ बार ज़ुलेख़ासे कहा ।
फितनए दह्र है जो हुस्न वह कनआं में नहीं ॥
मुहतसिब सिदक़ो सफ़ायां हैं उन्ही के दम से तक।
मसलेहते बरहमीए सुहबते रिन्दा मे नहीं ॥
ठहरते ठहरते दिल यूँ ही ठहर जायगा ।
बात जो आज है वह कल ग़मे हिज्रा में नहीं ॥
"हालिये" .जार को कहते हैं कि है मय आशाम ।
ये तो आसार कुछ इस मर्दे मुसलमा में नहीं ।

३

वशहत में था .ख्याले गुलो यासमन कहा ।
लाई है बूए उन्स नसीमे चमन कहा ॥
है बन्दगी के साथ यहा जौके दीद भी ।
जायगा देर छोडा के अब ब्रह्मन कहां ॥
अहले तरीक जिसको समझते है जादे राह ।
वां दख़्ल दस्ते वुर्द को राहजन कहां ॥
फस्ले ख़ेज़ा कमीं में है सईयाद घात में ।
मुर्ग़े चमन को फ़ुरसते सैर चमन कहां ॥

जी ढूंढ़ता है बज़्मे तरब में उन्हें मगर ।
वह आय अंजुमन में तो फिर अंजुमन कहां ॥
दिल ही लिया है .ग़ुरबत से आशना ।
अब हम कहा हवाय निशाते वतन कहां ॥
रोका बहुत कल आप को "हाली" ने वा मगर ।
जाता है महुए शौक़ का दीवाना पन कहां ॥

———

महाकवि अकबर

जन्म सन् १८४६ ई०   मृत्यु सन् १९२१ ई०

मैंने कहा है अकबर में कोई रंग नहीं है।
कहने लगे शेर उसके जो, सुन लो तो फड़क जाओ॥

प्रयाग निवासी अकबर उर्दू कविता की जान थे। आप गम्भीर से गम्भीर विषय को भी संक्षिप्त मे बड़ी सुन्दरता से वर्णन करते थे। महाकवि बिहारी के दोहों के विषय मे जो कहा गया है वही अकबर के शेर के विषय मे कहना उपयुक्त होगा।

देखत में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर

आप ने पुरानी शायरी के मैदान से हट कर उसे बीसवीं सदी का आधुनिक जीवन प्रदान किया। कौन इस सत्यता से इनकार कर सकता है कि उर्दू मे एक से एक बढकर कवि हुये हैं। मगर अकबर अपने ढंग के अद्वितीय तथा अनुपम कवि थे। आप के प्रत्येक शेर मे सजीवता झलकती है। जिस रंग में आपने कविता की है उस रंग में उर्दू तो क्या अन्य देशी भाषाओ के किसी भी कवि ने नही की है। आप की काव्य शैली बिल्कुल नवीन है। सैयद अकबर हुसैन रिज़वी का जन्म सन् १८४६ ई० मे प्रयाग से दस बारह कोस की दूरी पर बारा नामक कस्बे मे हुआ था। आपके पिता सैयद अफज़्ज़ुल हुसैन बड़े ही धार्मिक पुरुष थे। आप की प्रारम्भिक शिक्षा बहुत ही साधारण हुई। सन् १८६६ ई० मे मुख्तारी की परीक्षा पास करके नायब तहसीलदार हुये। सन् १८७० में हाई कोर्ट की मिसिलख्वानी की जगह रखे गये। सन् १८७२ मे वकालत पास करके

१८८० तक वकालत की। फिर नौकरी की और मुंसिफ़ हुये। १८८८ मे सवारडिनेट जज हुए और फिर १८९४ मे अदालत के जज हुये और खान वहादुर का खिताव मिला। इलाहावाद विश्वविद्यालय के फेलो भी थे। सितम्बर १९२१ ई० मे इस संसार से विदा हो गये। अभी तक आपकी जगह लेने वाला उर्दू मे कोई कवि पैदा नही हुआ।

आप वहुत रगीले आदमी थे। हास्य और व्यंग आप मे कूट-कूट कर भरा हुआ था। अपने वेटे हाशिम की मृत्यु का आप को वहुत सदमा लगा। आप ने उसकी मृत्यु पर एक दर्द से पूर्ण कता कहा था।

वह चमन ही मिट गया जिसमें कि बहार आई थी।
अब तुझे खोकर मैं ये बाग बहारो क्या करूं॥
बज़्मे ईश्रत मे वैठाना था जिसे वह उठ गया।
अब मैं ए खुदा तेरी उमीदवारी क्या करूं॥

अकबर की शायरी

अकबर समझदार शायर थे। वचपन ही से शायरी का शौक था। प्रारम्भ मे अपनी कविता गुलाम हुसैन वहीद को दिखाते रहे। अकबर ने अपनी शायरी को पाच भाग मे बाटा है।

प्रथम दौर १८६६ तक है इस दौर मे उन्होंने दिल्ली और लखनऊ के प्रसिद्ध माने हुये कवि के ढङ्ग पर कविता की।

दूसरा दौर १८८६ से १८८६ तक—इस दौर मे सचाई और खुश-सूरती कलाम मे अधिक थी। यह वह दौर है जब कि अकबर लकीर के फक़ीर न रहे और उर्दू शायरी मे एक क्रान्ति पैदा करने के लिये अपना सक्रिय कदम आगे बढाने लगे।

तीसरा दौर १८८४ १९०९ ई० तक—यह समय इनकी वड़ी उन्नति का है। इस मे कवि को अपने कलाम पर पूरी तरह .कुदरत हासिल हो

दोज़ख़ के दाख़ले में नहीं उनको उज्र कुछ।
फ़ोटो कोई लगादे जो उनका बहिश्त में ॥

न नमाज़ है न रोज़ा न ज़िकात है न हज है।
तो .ख़ुशी फिर इसकी क्या है कोई जन्ट कोई जज है ॥

रुबायात और क़तआत

१

समझें न हुज़ूर थर्ड वालों को हक़ीर।
इंजन तो वही है जिसकी हम सबको है तलाश ॥
स्टेशन गौर तक है ये फ़र्स्टो सिकन्ड।
बाद उसके मुवाफ़िक़ अम्ल होगा क्लास ॥

२

आनर के लिये ज़बान दराज़ी है बरी।
रोटी न मिले तो ग़ुल मचाना जायज़ ॥
इस वक्त में है यही नसीहत अच्छी।
इस साज़ पे है ही तराना जायज़ ॥

३

"अकबर" इस बात में नफ़र फ़िक्र बहुत।
मंतिक़ के घर में नहीं इसका इलाज।
मज़हब के क़बूल में ज़्यादा है दलीला।
सोशेल असरात और उफ़ताद मेज़ाज ॥

४

दुनिया की हविस धर्म का लेती है रंग।
दिक़्क़त होती है जानीं होते हैं तंग॥
गंगा जी का बहाओ तो यकसां है।
आफ़त है मगर प्रयाग वालों की ये जंग।

५

मजहब का मआशरत से है रब्ते कमाल।
दोनो जो हो मुख़ालिफ तो आराम मुहाल॥
पहले ये मसला समझ लें अहबाब।
बादे इसके रिफार्म का करें दिल में ख़्याल॥

६

पाबन्द अगर च अपनी ख़्वाहिश के रहो।
लायल सबजेक्ट तुम ब्रिटिश के रहो॥
क़ानून से फ़ायदा उठाना है अगर।
हामी न किसी ख़राब साजिश के रहो॥

७

ऊँचा नीअत का अपनी जीना रखना।
अहबाब से साफ़ अपन सीना रखना॥
गुस्सा आना तो नेचुरल है "अकबर"।
लेकिन है शदीद ऐब कीना रखना॥

८

बे पर्दा कल जो आई नज़र चन्द बीबिया।
"अकबर" ज़मीं में ग़ैरते .कौमी सगड़ गया॥
पूछा जो उन से आप का पर्दा किधर गया।
कहने लगी अक़्ल पे मर्दो की पड गया॥

९

लामज़हबी से हो नहीं सकती फलाहे .कौम।
हरगिज़ गुज़र सकेंगे न इन मंज़िलो से आप॥
काबा से बुत निकाल दिये थे रसूल ने।
अल्लाह को निकाल रहे हैं दिलो से आप॥

१०

कहने को तो शाह महराज है आप।
मालिक दौलत के, मालिके ताज हैं सब॥
लेकिन खोलो जो चश्मे तह.कीक़ "अकबर"।
बे बस हैं सब .खुदा के मुहताज हैं सब॥

११

दिल हो जो वसीऽ और रौशन हो ख्याल।
हर रंग दिखाये तुझको .खालिक़ का जमाल॥
सारी दुनिया है उसको प्यारी "अकबर"।
कहता है कम आल जिसको हासिल है कमाल॥

१२

इल्मो हिकमत में हो अगर .ख्वाहिशे .फेम ।
सरकारी नौकरी को हरगिज़ न कर एम ।।
शादी न कर अपनी बे तहसीले लोलूम ।
बुत हो कि परी हो ख्वाह वह हो कोई मेम ।।

१३

उर्दू में जो सब शरीक होने के नहीं ।
इस मुल्क के काम होने के नहीं ।।
मुमकिन नहीं शैख़ इमरउलकैस बनें ।
पंडित जी बालमीक होने के नहीं ।।

१४

हर चन्द कोट भी है पतलून भी है ।
बगला भी है पाट भी है साबुन भी है ।।
लेकिन ये मैं तुझ से पूछता हूँ हिन्दी ।
यूरोप का तेरी रंगो में ख़ून भी है ।।

१५

दोस्तों तुम कभी हिन्दी के मुख़ालिफ़ न बनो ।
बाद मरेन के खुलेगा किये थी काम की बात ।।
लिखा था मेरा नामए आमाल जो हिन्दी में ।
कोई पढ़ न सका होगा फ़िल फ़ूर नजात ।।

ग़ज़लियात और तरकीबे बन्द

१

जानिबे जंजीर गेसू फिर खिंचा जाता है दिल।
देखिये अब मेरे सर पर क्या बला लाता है दिल॥

लोग क्यो कर छोड़ देते हैं मुहब्बत दफ़अतन।
मैं तो जब ये कस्द करता हूँ मचल जाता है दिल॥

रख के तस्वीरे .ख्याली यार की पेशे नजर।
रात भर मुझको शबे फ़ुरकत में तड़पाता है दिल॥

दाग़हाय सीनए गुल हैं आहे सर्द अपनी नसीम।
गुलशने हस्ती में क्या अच्छी हवा खाता है दिल॥

बार गोह इश्क़ कहिये तेरे दौलत ख़ाना को।
जो कोई आता हैं या तुझसे लगा जाता है दिल॥

.ख़ौफ के पर्दे में छुप जाती है जाने नातवां।
आशिक़ के मारेक में काम आ जाता है दिल॥

साथ साथ अपने जनाज़े के ये चिल्लाती थी रूह।
उन को मिट्टी में मिलाने के लिये जाता है दिल॥

शेख़ अगर काबा में .ख़ुश बरहमन बुत ख़ाना में।
अपने अपने तौर पर हर शख़्स बहलाता है दिल॥

.क़स्द करता हूँ जो उठने का तो फ़रमाते है वह ।
और बैठो दो .घड़ी साहब का घबराता है दिल ॥

ये नहीं कहते यहीं रह जाओ अब तुम रात को ।
बस इन्हीं बातों से "अकबर" मेरा जल जाता है दिल ॥

२

जो अपनी ज़िन्दगानी को हुबाब आसा समझते है ।
नफ़स की मौज को मौजे लबे दरया समझते हैं ॥

गवाही देंगे रोजे हश्र ये सारे गुनाहों की ।
समझता है नहीं लेकिन मेरे आज़ा समझते हैं ॥

शरीके हाल दुनिया में नज़र आता नहीं कोई ।
फ़क़त एक बेकसी है जिसको हम अपना समझते हैं ॥

जो हैं अहले बसीरत इस तमाशा गाहे हस्ती में ।
तिलस्मी जिन्दिगी को खेल लडकों का समझते है ॥

मुअरा हूँ हनर से मैं सरपा ऐब हूँ "अकबर" ।
एनायत है अहिब्बा की अगर अच्छा समझते हैं ॥

३

क्या ही रह रह के तबीयत मेरी घबराती है ।
मौत आती है शबे हिज्र न नीद आती है ॥

वह भी चुप बैठे हैं अग़यार भी चुप मैं भी ख़मोश ।
ऐसी सुहबत से तबीअत मेरी घबराती है ॥

क्यो न हो अपनी लगावट की नज़र पर नाज़ां ।
जानते हो कि बलबलों को ये लगा लाती है ॥

बज़्मे इशरत कहीं होती हैं तो रो देता हूँ ।
कोई गुज़री हुई सुहबत मुझे याद आती है ॥

४

मिले हरएक से मुहब्बत मगर उन्ही से रही ।
वह आशिक़ाना जो थी एक नज़र उन्हीं से रही ॥

ये कौन बात पसन्द आ गई है .गैरों की ।
लगावट उनकी जो आठो पहर उन्हीं से रही ॥

छुटोगे दामे बला से कभी न ए "अकबर"
तबीयत उलझी हुई यूं अगर उन्हीं से रही ॥

५

ज़माना हो गया बिस्मिल तेरी सीधी निगाहो से ।
.खुदा न खास्ता तिर्छी नजर होती तो क्या होता ॥

मुहब्बत हो न उनको मुझे क्या मै तो आशिक़ हूँ ।
न होने से है उसके क्या अगर होती तो क्या होता ॥

पिसा जाता हूँ मैं सौ जान से इस बेवफाई पर ।
मुहब्बत यार को मुझसे अगर होती तो क्या होता ॥

मेरी हसरत की नज़रों ही पे .ज़ालिम इस .कदर बिगड़ा ।
कहीं दर्दे ज़िगर से चश्म तर होती तो क्या होता ॥

न रखी आसमा ने एक दम भी वस्ल की साइत।
घड़ी भर चैन से अपनी विस्तर पर होती तो क्या होता॥

.कफस इस नातवानी पर तन बिस्मिल बना तुमसे।
जो ताक़त भी कहीं ए बालों पर होता तो क्या होता॥

६

लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है।
.क्यामत है सितम है दिल फ़ेदा है जान हाजिर है॥

कहो जो चाहो सुन लेंगे मगर मुतलक़ न समझेंगे।
तबीयत तो .खुदा जाने कहा है कान हाजिर है॥

निगाहें ढूँढ़ती हैं जिनको उनको दो निशां यारो।
उसे मैं क्या करूँगा ये जो सब सामान हाज़िर है॥

वैठा कर ग़ैर की महफ़िल में मुझको उसने।
सुनो 'अकबर" की .गजलें देखलो मस्ताना हाज़िर है॥

७

न किताबों से न कालिज के है दर से पैदा।
दीन होता है बुर्जुगों की नज़र से पैदा॥

जो .खेरदमन्द हैं वह .खूब समझते हैं ये बात।
खैरख्वाही वह नहीं है जो हो डर से पैदा॥

रंजे दुनिया से बहुत मुज़तरिबुलहाल था ये।
दिल में तकसीन हुई मज़हब के असर से पैदा॥

८

सिधारें शैख़ काबा को हम इंगलिस्तान देखेंगे।
वह देखें घर ख़ुदा की हम .ख़ुदा का शान देखेंगे॥

जबानों को .जरा परवा नहीं हैं वे एतेदाली की।
बुढ़ापे में नतीजे उसके ये नादान देखेंगे॥

हसीनाने ओदूए इत्तका का सामना होगा।
मैं देखूँगा उन्हें और वह मेरा ईमान देखेंगे॥

तेरी दीवानगी पर रहम आता है हमें "अकबर"।
कोई दिन वह भी होगा हम तुझे इन्सान देखेंगे॥

६

शैख़ ने नाक़ूस के सुर में जो .ख़ुद ही तान ली।
फिर तो यारों ने भजन गाने की खुलकर ठान ली॥

मुद्दतों कायम रहेंगी अब दिलों में गरमिया।
मैंने .फ़ोटो ले लिया उसने नजर पहचान ली॥

रो रहे हैं दोस्त मेरी लाश पर बेअख़्तियार।
ये नहीं दरयाफ्त करते किसने उसकी जान ली॥

मैं तो इंजन की गिले बाज़ी का कायल हो गया।
रह गये नग़मे हुदी ख़्वाहों के ऐसी तान ली॥

हज़रते "अकबर" के इस्तकलाल का हूँ मुतरिफ।
तावे मर्ग उस पर रहे कायम जो दिल में ठान ली॥

मजनूं और मजनूं की सास

.खुदा हाफिज़ मुसलमानों का "अकबर"।
हमें तो उनकी .खुशहाली से है यास ॥
सुनाऊँ तुमको एक् फ़र्फ़ी लतीफ़ा।
किया है इसको मैंने ज़ेबे क़िरतास ॥
कहा मजनूं से ये लैला की माँ ने।
कि बेटा तू कर एम० ए० अगर पास ॥
तो .फौरन दूँ व्याह लैला को तुझसे।
बिला दिक्कत मैं बन जाऊँ तेरी सास ॥
कहा मजनूं ने यह अच्छी सुनाई।
कुजा आशिक़ कुजा कालिज की बकवास ॥
बड़ी बीबी आप को क्या हो गया है।
हरम पर लादी जाती है कहीं घास ॥
यह अच्छी कदरदानी आपने की।
मुझे समझा है कोई हरचन्द आस ॥
यही ठहरी जो शरते वस्ले लैला।
तो इसतग़ना मेरा वा हसरतो पास ॥

औरतनामा

तालीम औरतोंको भी देनी ज़रूर है।
लड़की जो पढ़ी हो तो वह बेशऊर है ॥
हुस्ने मआशरत में सरासर फ़ुतूर है।
और इसमें वालिदेन का बेशक में .कसूर है ॥
उन पर ये फ़र्ज़ है कि करें कोई बन्दोबस्त।
छोड़ें न लड़कियों को जेहालत में शादोमस्त ॥ १ ॥

लेकिन जरूर है कि मुनासिब हो तरबीयत।
जिससे बढे बिरादरी में कद्रो मंजिलत॥
आजादियां मिज़ाज में आसें न तमकनत।
हो वह तरीक़ जिसमें हो नेकी व मसलहत॥
हर चन्द हो उलूमें जरूरी की आलमः।
शौहर की हो मुरीद तो बच्चों की खादम॥ २॥

मजहब के जो उसूल हों उसको बतायें जायें।
इन बाकायदा तरीके परसतिश सिखाये जायें॥
अवहाम जो गलत हों वह दिल से मिटाये जायें।
सिक्के खुदा के नाम के दिल में बिठाये जायें॥
इस्यिां से मुहतरिज़ हो .खुदा से डरा करे।
और हुस्ने आकबत की हमेशा दुआ करे॥ ३॥

तालीम है हिसाब की भी वाजिबात से।
दीवार पर निशान तो हैं वाहियात से॥
यह क्या .ज्यादा गिन न सके पाच सात से।
लाज़िम है काम ले वह .कलम और दवात से॥
घर का हिसाब सीख ले खुद आप जोड़ना।
अच्छा नहीं है .गैर पे ये काम छोड़ना॥ ४॥

सीना परोना औरतो का खास है हुनर।
दरज़ी की चोरियो मे हिफ़ाजत पे हो नज़र॥
औरत के दिल में शौक है इस बात का अगर।
कपड़ो से बच्चे जाते है गुल की तरह संवर॥
कस्बे मआश को भी ये फन है कभी मुफीद।
एक् शग़ल भी है दिल के बहलेने की भी उम्मीद॥ ५॥

सबसे ज्यादा फ़िक्र है सेहत की लाजमी।
सेहत नहीं दुरुस्त तो बेकार जिन्दगी ॥
खाने भी बेजरर हों सफ़ा हो लिबास भी।
आफ़त है हो जो घर की सफ़ाई में कमी ॥
तालीम की तरफ़ अभी और एक कदम बढ़ें।
सेहत के हिफ्ज के जो .कवायद हैं वह पढ़ें ॥ ६ ॥

दुनिया में लज्जतें हैं, नुमाइश है, शान है।
उनकी तलब में, हिर्स में, सारा जहान है ॥
"अकबर" से भी सुनो कि जो उसका बयान है।
दुनिया की जिन्दगी फ़क़त एक इम्तेहान है ॥
हद से जो बढ़ गया है उसका अमल ख़राब।
आज उसका .खुशनुमा है मगर होगा कल ख़राब ॥ ७ ॥

एक् तरफ़

किस तरह पर्दे में रहे ए शेख़ औरत एक् तरफ।
सोर .ख्यालात एक् तरफ़, मुल्की जरुरत एक् तरफ़ ॥
मशरिक के चाइज एक् तरफ़ मुग़रिब की .जीनत एक् तरफ़।
अक़ली दलीलें एक तरफ़ और दिल की रग़बत एक़ तरफ़ ॥

स्पेनियरो मिल के वरक़ हैं किस .क़यामत के सबक़।
कल तोपख़ाना एक् तरफ़ बाबू की जुरअत एक् तरफ़ ॥
"अकबर" दरे बुत खाना पर ऐसा जमा टलता नहीं।
सारी .खुदाई एक् तरफ़ उस बुतकी सूरत एक तरफ़ ॥

जिक्रे .खुदा यादे अजल काफ़ी हैं इसके वास्ते।
मैदाने आनर एक् तरफ़ "अकबर" की हिम्मत एक् तरफ़ ॥

रेयाज़ अहमद रेयाज़

सन् १८५३ ई०　　　　से　　　　सन् १९३४ ई०

हिन्दुस्तान क्या, जहा जहा उर्दू बोली और समझी जाती है रेयाज़ के परिचय की आवश्यकता नहीं। आपका जन्म .खैराबाद (लखनऊ) मे सन् १८५३ ई० मे हुआ था। शायरी मे हज़रत असीर और अन्त मे अमीर मीनाई के शागिर्द हुये। आपने लिखा भी है—

मस्ते मीना हूँ पिया है मैंने।
जाम अमीर अहमद मीनाई का॥

आप रेया.जुल अख़बार और दो रेसाल फितना और अतरे फ़ितना के सम्पादक थे।

फितने को पूछता है कोई किस अदा के साथ।
छोटा सा वह रेयाज़ का अखबार क्या हुआ॥

रेयाज़ साहित्य पर पूर्ण अधिकार रखने के साथ ही साथ एक विशेष प्रकार की वर्णन करने की शैली भी रखते थे। शेर बेतल्लुकाना कहते थे और उर्दू भी खासी होती थी। शायर के जबान जैसी शायरानी अस्ल में होनी चाहिये वैसी ही थी। रेयाज़ पर जवानी का रंग छाया हुआ था। वह बुढापे में भी जवान थे।

वही शबाब की बातें वही शबाब का रग।
तुझे रैयाज़ बुढ़ापे में भी जवा देखा॥
जिस अजुमन में बैठ गया रौनक़ आगई।
कुछ आदमी रैयाज़ अजब दिल्लगी का था॥

आपकी मृत्यु सन् १९३४ ई० मे हुई। मृत्यु की तिथि इस प्रकार है—
"हैफ़ रेयाज़ मुर्द "१९३४"। आशिक़ाना मामलात और सूक्ष्म से सूक्ष्म

विषयों को भी बहुत ही ख़ूबी के साथ वर्णन करते थे। आप के कलाम में शोख़ी पाई जाती है।

"अब तो रैयाज़ फूल उड़ाते हैं रात-दिन।
जोबन ये लूटते हैं, ओरूसे बहार क़ा॥

आपकी कविता आपकी उस्तादी को सिद्ध करती है।

ग़ज़लियात

१

हो के आजाद रहे दामने सइयाद रहे।
घर में सइयाद के जब तक रहे आज़ाद रहे॥

मैं वह बुलबुल हूँ करूं दामे मुहब्बत में असीर।
चार ही रोज़ में सइयाद न सइयाद रहे॥

हमें गुलशन से सिवा है कहीं उलफ़त उसकी।
हम न हों तो भी एलाही ये घर आबाद रहे॥

कीजिये क्या उसे रफ़्तारे ज़माना है यही।
पा बगिल सरो रहे और फिर आजाद रहे॥

कोई कहता ये गुज़रता है उधर से हर रोज़।
हम रहें या न रहें मैकदा आबाद रहे॥

लाले का फूल बने दाग़ बने रंग बने।
दामने कोह में ख़ूँ सिरे फ़रहाद रहे॥

डर से महशर में दमे पुरसिश आमा आज "रैयाज़।"
उसकी रहमत के सिवा कुछ न मुझे याद रहे॥

२

लबे ख़ामोश की तस्वीर तो कुछ कहती है।
आप की चांद सी तस्वीर तो कुछ कहती है॥

उनकी तस्वीर ने उन पर भी असर डाला।
बोल उठे वह मेरी तस्वीर तो कुछ कहती है॥

मुझ से वो चान्द सी तस्वीर न उनकी बोली।
मेरी चमकी हुई तक़दीर तो कुछ कहती है॥

तुम कहो या न कहो अपने शबे वस्ल की बात।
सदके तस्वीर के तस्वीर तो कुछ कहती है॥

तेरे सदके ये तबस्सुम है बहुत माली खेज।
मुस्कुराती हुई तस्वीर तो कुछ कहती है॥

अरे सरशारे मुहब्बत दस्ते साग़र को समझ।
दस्ते साक़ी की ये तहरीर तो कुछ कहती है॥

ख़ाक आखों में न डालो कहीं तुम आओगे।
आंख में सुर्मा की तहरीर तो कुछ कहती है॥

जब कहा क्या ये जबा शमअ की मुंह में लेगा।
बोले .ज़ुल्फे गिरह गीर तो कुछ कहती है॥

मुंह खुले जाते है कड़ियो के रैयाज आप ही आप।
ये मेरे पावों की ज़ंजीर तो कुछ कहती है॥

३

मय रहे मीना रहे गरदिश में पैमाना रहे।
मेरे साक़ी तू रहे आबाद मैख़ाना रहे॥

हश्र भी तो हो चुका रुख़ से नहीं हटती नक़ाब।
हद भी आखिर कुछ है कब तक कोई दीवाना रहे॥

कुछ नहीं हम दिलजलों की बेक़रारी कुछ नहीं।
तेरी महफ़िल वह है जिसमें शमऽ परवाना रहे॥

गोरे हाथों में बने चौडी .खते साग़र का अक्स।
तेरे दस्ते नाज में नाजुक सा पैमाना रहे॥

कम से कम इतना असर हो जो सुने आजाय नींद।
बेकसों की मौत का होठों पर अफसाना रहे॥

रात को जो बैठते हैं रोज हम मजनूँ के पास।
पहले अनबन रह चुकी है अब तो याराना रहे॥

हश्र हो शर्म के पुतले न बनना हश्र में।
चाल अठलाई हुई अन्दाज़े मस्ताना रहे॥

ताब उस की ला नहीं सकते कभी ना.जुक दिमाग।
बारे सर है दूर सर से ताजे शाहाना रहे॥

उन के कहने से कभी कह लिये दो चार शेर।
रात दिन फ़िक्रे सुख़न में, कोई दीवाना रहे॥

इन बुतों के चलते हमने दिल को पत्थर कर लिया।
बुत रहे कोई या रब न कोई बुतखाना रहे॥

ज़िन्दिगी का लुत्फ़ है उड़ती रहे हरदम शराब।
हम हो शीशे की परी हो घर परीखाना रहे॥

४

बात दिल की जबान पर आई।
आफत अब मेरी जान पर आई॥

खींचते ही उड़ गई वह बाद .फरोश।
चोखी मय कब दुकान पर आई॥

हो गई ऊँची उस के नाम से आह।
आफत अब आसमान पर आई॥

की .फरिश्तों ने जब सराहते जुर्म।
हंसी उन के ब्यान पर आई॥

जब चली आसमान से कोई बला।
सीधी मेरे मकान पर आई॥

.गैर का साज बन के राज़ रहा।
बात सब पासबान पर आई॥

रोके रुकता नहीं है सले .सरे इश्क।
अब तबाही मकान पर आई॥

आई बोतल भी मयकदे से "रैयाज"।
जूब घटा आसमान पर आई॥

५

भोली भाली शक्ल देखी किसी की घबराई हुई।
फिर नई शाम शबे वादा आज क्यों आई हुई॥

जोश पर मय सब जाहिदों पर घटा छाई हुई।
बात ऐसी है कि तौबा भी है ललचाई हुई॥

हाय वह दिन हमसे जाहिद यूँ लबे कौसर कहे।
जिये तो किस तक़ल्लुफ़ से है खिचवाई हुई॥

वह चले तो उठ के कितने उन के आगे हो लिये।
मैं चला तो साथ मेरे मेरी रुसवाई हुई॥

सैर को निकले वह अपनी रहगुज़र से बे-हेजाब।
और रखी हो हमारी लाश कफनाई हुई॥

अब्र आया, रंग देखा, उठी हवा, मीना झुका।
जाम छलके, तौबा टूटी, बादा पैमाई हुई॥

सैर होगी मसजिदे जामऽ के दर पर रख तो दो।
मैकशीं चुपके से मेरी लाश कफनाई हुई॥

हाय क्या झटपट क़फस में बालों पर पैदा किये।
जब सुना मैंने कि जाती है बहार आई हुई॥

क्या पड़ो हो गोशए मसजिद में उट्ठो ज़ाहिदों।
फूटी आखों से ज़रा देखो घटा छाई हुई॥

सुब्ह होते बात जो होना था सो हो चुकी।
अब लिये बैठे रहो तुम आंख शरमाई हुई॥

बात कहते आशिया अच्छे से अच्छा बन गया।
तिके चुन कर छाट ली एक शाख़ मुरझाई हुई॥

मैं .ख़राने नाज के सदके. ज़रा देखे हुए।
रख़ तुरबत पर कि है किसको ठुकराई हुई॥

उभरे जोबन पर नहीं मसकी हुई मुहरम "रैयाज़"।
मुस्कुराती है जवानी जोश पर आई हुई॥

६

जान निकले मेरी जान बड़ी मुश्किल से।
होगी मुश्किल मेरी आसान बडी मुश्किल से॥

वह मेरे घर रहे मेहमान बड़ी मुश्किल से।
रात निकले मेरे अरमान बडी मुश्किल से॥

आखे तावों से मिले ले के कदम आखों पर।
राह पर आये निगहवान बडी मुश्किल से॥

था बहुत उनको गुलौरी का उठाना बडी मुश्किल।
दस्ते नाज़ुक से दिया पान बडी मुश्किल से॥

बढ़ के दरबान ने लिया आज भी दामन मेरा।
कल छुडाया था गरेबान बडी मुश्किल से॥

सुहबते बद से बचाने का बतायें सब हाल।
आज माने मेरे एहसान बडी मुश्किल से॥

ज़ुल्म को लुत्फ़ से ताबीर करेंगे दमे हश्र ।
जौर से होंगे पशेमान बड़ी मुश्किल से ।।

कोई काफ़िर हो जो कल जाय सूए दैरे बुतां ।
कि बचा आज ही ईमान बड़ी मुश्किल से ।।

न रहे मैंने कलेजे में जो रखना चाहा ।
दिल में ठहरे तेरे पैकान बड़ी मुश्किल से ।।

मान लेते है वह मुश्किल से भी मुश्किल कोई बात ।
कभी आसान से भी आसान बड़ी मुश्किल से ।।

वे शबे वस्ल ये अन्दाज़ निकलते ही नहीं ।
ज़ुल्फ होती है परीशान बड़ी मुश्किल से ।।

धार तलवार की थी जादए बारीक न था ।
तय हुआ हश्र का मैदान बड़ी मुश्किल से ।।

दिले बिस्मिल में कुछ इस तरह हुये थे पैवस्त ।
टूट कर निकले हैं पैकान बड़ी मुश्किल से ।।

यही अन्दाज़ यही वज़अ जो रखोगे "रैयाज़" ।
लोग समझेंगे मुसलमान बड़ी मुश्किल से ।।

———

पंडित ब्रज नारायण चकबस्त

जन्म सन् १८८२ ई० **मृत्यु सन् १९२६ ई०**

नवीन आन्दोलन के प्रसिद्ध लीडर, नवीन नीति के कर्णाधार, वर्तमान शायरी के चमकते हुए सूर्य, नवीन और पुरानी शायरी के महान पंडित ब्रज नारायण चकवस्त फैजाबाद मे सन् १८८२ ई० मे पैदा हुए थे। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके सन् १९०५ ई० मे किंग कालेज से बी० ए० की डिग्री और सन् १९०८ मे कानून की डिग्री प्राप्त की और लखनऊ में वकालत प्रारम्भ कर दी। आपकी गणना फर्स्ट क्लास के वकीलों मे की जाती थी। मगर अफसोस की जवानी ही मे १२ जनवरी सन् १९२६ ई० को आपका निधन हो गया। इसका समाचार पाते ही लोगो के पैरों तले की जमीन निकल गई और बहुत शोक हुआ। कवियों ने तारीखें कहीं, लेखकों ने अपने-अपने गम्भीर एव दर्द पूर्ण लेखों मे आपकी दाँद दी। मरहूम ही के मिस्र से मशहर साहब ने तारीख निकाली है।

इनके ही से तारीख है हमारे है आजा। (७८)
मौत क्या है इन्हीं अजजा का परीशा होना॥ (१३४४ हि०)

हजरत अफजल से आपको अपनी कविता दिखाते थे आप पुराने उस्ताद मीर, गालिब, अनीस, आतिश इत्यादि के सग चश्मों से सैराब होते रहे और इन बज़ुर्गों के कलाम को सामने रख कर कविता करते रहे गद्य में मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद को मानने वाले थे। शेर—

जिक्र क्यों आयेगा बज्मे शुअरा में अपना।
तखल्लुस का भी दुनियाँ में गुनहगार नहीं॥

आप हिन्दी शब्द भी कहीं कहीं प्रयोग में लाते थे और नवीन रंग के विषयों एवं विचारों को सादे और सरल प्रकार से बातों ही बातों मे कह

देते थे। चकबस्त ने स्वयं एक मासिक उर्दू पत्रिका "सुब्हे उमीद" नाम से निकाला था। उसमें अधिकतर राजनतिक व्यंग हुआ करते थे। चकबस्त बहुत अच्छे गजल कहने वाले थे। इनका रंग पुराने रंग से बिल्कुल अलग था। कविता में शीरीनी और सफाई का विशेष ध्यान रखते थे। प्रकृति पर शायरी बहुत ही अच्छी होती थी। आपने फ़लसफ़ा एख़लाक़ और नसीहत से पूर्ण शेर ख़ूब कहे है।

ज़िंदगी क्या है अनासिर में तबीयत।
मौत क्या है इन्हीं अज़ा का परीशां होना॥

अबरु क्या है तमन्नाए वफ़ा में मरना।
दीन क्या है किसी कामिल थीं परसतिश करना॥

कमाले बुजदिली है पस्त होना अपनी आखों में।
अगर थोड़ी सी हिम्मत होतो फिर क्या हो नहीं सकता॥

उभरने ही नहीं देती हमें बेमायगी दिलकी।
नहीं तो कौन क़तरा है जो दरया हो नहीं सकता॥

जहां मैं रहके यूं काग हूं अपनी बे सबाती पर।
कि जैसे अकसे गुल रहता है आबे जूए गुलशन पर॥

दिल में इस तरह से अरमान हैं आजादी के।
जैसे गंगा में झलकती है चमक तारों की॥

हमारे और वाइजों के मजहब में।
फ़र्क अगर है तो इस कदर है॥

कहेंगे हम जिस को पास इनसां।
वह उसको खौफे खुदा कहेंगे॥

ग़ज़लियात

१

अब भी एक उम्र पे जीने का न अन्दाज आया।
जिन्दगी छोड दे पीछा मेरा मैं बाज आया॥

चैन देगा न मुझे ताजा असीरी का ख्यालि।
ध्यान उसका न तुझे हसरते परवाज आया॥

रिन्द फैलाये है चुल्लू को तकल्लुफ कैसा।
साकिया ढाल भी दे जामें खुदा साज आया॥

एक खमोशी में ग़ुलो तुमने निकाले सब काम।
ग़मज़ा आया न कर शमा न तुम्हें नाज़ आया॥

कहते है शेर किसे, बज्म में खुल जायगा।
शाद आया न कहो हाफिजे शीराज आया॥

२

तमन्नाओं में उलझाया गया हूँ, खिलौने देके बहलाया हूँ।
हूँ इस कूचे के हर जर्रे से आगाह, इधर से मुद्दतों आया गया हूँ॥
दिले मुजतर से पूछ ए रौनके बज्म, मै ख़ुद आया नहीं लाया गया हूँ।
न था मैं मोतकिदे एजाज मय का, बड़ी मुश्किल से मनवाया गया हूँ॥
कुजा मैं और कुजा ए शाद दुनियाँ। कहां से किस जगह लाया गया हूँ॥

३

निगह की बरछियाँ जो सह सके, सीना उसी का है।
हमारा आपका जीना नहीं, जीना उसी का है॥

ये बज्मे मय है याँ कोताह दस्ती में है महरूमी।
जो बढ़कर ख़ुद उठाले हाथ में मीना उसी का है॥

मुकद्दर या मुस्फका जिसको यह दोनों ही एक साँ हों।
हकीकत में वही मय ख़ार है पीना उसी का है॥

उमीदें जब बढ़ी हद से तिलस्मी साँप हैं जाहिद।
जो तोड़े यह तिलिस्म ए दोस्त गंजीना उसी का है॥

कुदुरत से दिल अपना पाक रख ए शादे पीरी में।
कि जिसको मुँह दिखाता है यह आइना उसीका है॥

४

जो मर्ज कोई हो दवा करे, जो बला कोई हो दुआ करे।
जो दवा दुआ में असर न हो, तो बताइये कि वह क्या करे॥

यह सितम नया है कि जिक्र तक सितमो जफा को है।
जो गिला से निकले ग़ुबार कुछ तो बला से खूब गिला करे॥

नहीं याद किस्सये तूर क्या कि कलीम का था कसूर क्या।
नहीं मानता दिले बेहया कहो काश अब तो हया करे॥

मिले यार "शाद" को गर कहीं तो यह चाहता है कि दर्दे दिल।
वह कहा करे ये सुना करे ये कहा करे वह सुना करे॥

मिर्ज़ा मुहम्मद हादी "अज़ीज़" लखनवी

सन् १८८२ई० से सन् १६३५ ई०

मिर्ज़ा मुहम्मद हादी उपनाम 'अजीज', मौलाना मिर्ज़ा मुहम्मद अली (साहेब नजूमस्मा) के सुपुत्र थे। आपके पितामह शीराज़ से कश्मीर और फिर लखनऊ आये और यहीं बस गये। आपने कई अरबी फ़ारसी के महान विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। अपनी फारसी कविता पर आग़ा सैयद मुहम्मद साहब हाज़िक़ से इस्लाह लिया करते थे। मिर्ज़ा साहब श्री मिर्ज़ा मुहम्मद अब्बास अली खा साहब मर्हूम डिप्टी कमिश्नर लखनऊ के मुतमिदे ख़ास रहे। वह आपके जौहर को पहचानते थे अतः आप से अपनी कविता पर इस्लाह भी लिया करते थे। इस काल मे आप की शायरी उन्नति के शिखर पर पहुँच चुकी थी। कुछ वर्ष आप अमीनाबाद हाई स्कूल मे हेड मौलवी भी रहे। इसके बाद महाराजा महमूदाबाद ने ओरिंटएल लाइब्रेरी का भार आप पर सौपा।

शायरी तो आपके पञ्चतत्त्व मे मिली हुई थी। अतः अध्ययन ने चार चाँद लगा दिया। आप ने साहित्य के सभी क्षेत्रों मे कविता की है। परन्तु गज़ल और कसो मे खास विशेषता हैं। आपकी गणना उन चन्द उर्दू-कवियों में है जिन्होंने उर्दू गज़ल में जज़्बातो, इहसासात पर नज्म लिखी है ख्याल आफरीनी, जिद्दते अदा और सोज़ो गुदाज़ आपके काव्य की विशेषता है। फारसी मे अरफी और नज़ीरी और उर्दू मे मीर और ग़ालिब का अनुसरण किया करते थे।

आपकी ये कृतिया प्रसिद्ध हैं—गुलकुद, दीवान, सहीफ़ओ वला, लअल शेव चिराग और अजीजुल्लुगात। अजीजुल्लुगात उर्दू का बहुत अच्छा शब्द कोश है।

बरसात

मौसमे गुल है चमन है और भरी बरसात है।
तख़तए सुंबुल के नीचे एक अन्धेरी रात है॥
जलवा गर हर एक जर्रे से ख़ुदा की जौत है।
चश्मे दिल महूवे जमाले हुस्ने मसूआत है॥

फूलों का हर सफह क्या है वादिये तजरीद है।
गुंचएसर बस्ता में एक आलमें तौहीद है॥

२

जर्रा जर्रा है चमन का आइना दारे बहार।
हो रही है मस्त खुशबू से हवाए मुर्गज़ार॥
साफ है नहरों का पानी जैसे दुर्रे आबदार।
पत्तियाँ रक़सा हैं तहर्रीके हवासे बार बार॥

जोश हर जी रूह के अफसरदः दिल में भर चुके।
दिन को सावन के सियह बादल अन्धेरा कर चुके॥

३

सब्जा लहरें ले रहा है निगहते गुल बेक़रार।
हर तरफ है जलवा गर हदे नजर तक लाल जार॥
कोहसारों में भरे हैं नग़म हाय आबशार।
ताजा फूलों से है ममूल दामने फ़स्ले बहार॥

गुल खिला है जो वह बुलबुल का दिल सद पारा है।
अलगरज दुनिया तमाम एक् जन्नत नजारा है॥

फस्ले बहार

चली वह बादे नौरोज़ी वह ताजी कोपलें फूटी।
गूलों को देखकर सेहने चमन ने गोद फैलाई ॥
सदाय खनदए गुल से खुला कुफले दरे जिन्दां।
जुनूं में वह शिया ने इश्क ने जजीर खड़काई ॥

छेड़ा है साज फिर आवजै चाके गरीबां का।
मददए रूहे मजनूँ कह के फिर निकले है सौदाई ॥
घने बालों का इस तरफ सुंबुल ने खोले बहरे आराइश।
गुलाबी मदभरी आँखें उस तरफ नरगिस ने दिखलाई ॥

निगारे सब्ज : ने महदे जमीं पर करवटें बदली।
उधर आग़ोश में गुलशन के, ली बेलों ने अँगडाई ॥
जवानान चमन जिन्दा हुये एजाजे मौसम से।
ग़ुबारे दश्त ने उठ कर खेजा की लाश कफ़नाई ॥

जमाही आई फूलों को उधर जिक्रे सुराही से।
इधर गुचोंने शाखों पर हर एक पोर अपनी चढ़ाई ॥
असर पैदा हुआ इस तरह का रूहे नवाली में।
कि रूहे अल्लाह भूले दर्सें एजाजे मसीहाई ॥

उठे वाली परस्ता शबे ग़म अपने विस्तर से।
हरे होते गये जितनी कि गुलशन की हवा खाई ॥
नमू के ये मनजिर दीदनी हैं देखने वालों।
निगह जिस शम पे डाली फूल बनकर वह उभर आई ॥

प्रातःकाल

जमाले मह अंजुम सोज़े महुवे गर्म जोशी है।
गुलों में हर तरफ हंगामए शबनम फरोशी है॥
चमन मुतरिब, तजल्ली नगमाजन, आलम निशात अफजा।
अगर ज़ाहिद भी पी ले मय तो वक्ते चश्म पोशी है॥

शजर है वज्द में सरशार है मामूए दुनियाँ।
नसीम सुब्हगाही मस्त शग़ले मेय फ़रोशी है॥
उफ़ुक से फैलती जाती है किरनें मस्त है हर शय।
छलकता जाम है टूटी हुई मुहरे खामोशी है॥

शफ़क़ का बादए गुल रंग और ये जामे मीनाई है।
तुलूए सुब्ह भी तमहीदे रस्मे बादानोशी है॥
'अज़ीज' आज़ाद तायर शाखे गुल पर चहचहाते हैं।
ह्यात अपनी मगर वाबस्तये हलका बगशी है॥

ग़ज़लियात

१

जो यहाँ महुवे मासवा न हुआ।
दूर उससे कभी ख़ुदा न हुआ॥

यूँ ही घुट घुट के मिट गया आखिर।
अक़्दए दिल किसी सेवा न हुआ॥

कर दिया दिलाने ज़िन्दये जावेद।
क़ैदे हस्ती से मै रिहा न हुआ॥

न मिली दर्दे ज़ब्ते इश्क 'अज़ीज़'।
वह कभी सब्र आज़मा न हुआ॥

२

उम्र गुज़री है ब शग़ले खाना वीरानी मुझे।
क्या हुआ हस्ती से हासिल जुज़ पशेमानी मुझे॥

तंगीये खिलवत से होता था फ़शारे आरज़ू।
रास आई गुंचए दिल की परीशानी मुझे॥

हाँ मिलादे दश्त को ए वसअते शौक़े जुनूं।
है बहुत कम अपने काशाने की वीरानी मुझे॥

यारब ऐसे इश्क का भी कुछ ठिकाना है कहीं।
खुद नहीं मजूर उसके दर की दरबानी मुझे॥

फिर तकाज़ा है कि चलिये बज्मे जाना में 'अजीज"।
देखिये अब क्या दिखाये दिल की नादानी मुझे॥

३

खिलवत में होगा जलवए गुल आशकार क्या।
नासूर दिल में मौजए खूं की बहार क्या॥

रुक जाय बात-बात पे जिस नातवाँ की साँस।
ऐसे मरीजे ग़म का भला एतबार क्या॥

तेरा सकून तेरा इज़्तराबे ज़ीस्त।
तुझको क़रार आये दिले बेकरार क्या॥

डरता हूँ दिल का हाल म्या तुमसे क्या कहूँ।
तुम ऐसे जूद रंज का है एतबार क्या॥

पैदा वह बात कर कि तुझे रोयें दूसरे।
रोना खुद अपने हाल पे ये ज़ारबजार क्या॥

४

शिकवा सजे ज़ुल्म हूँ मै बदगुमां कोई न हो।
शक है दर परदा शरीके आसमा कोई न हो॥

मेरी खामोशी की शरहें लोग जो चाहें करें।
दर्दे दिल मैं क्या कहूँ जब हम ज़बां कोई न हो॥

एक वह दिल कुश जहा बैठे खुदाई जम अहो।
एक मैं बेकस जहा ढूंढू वहाँ कोई न हो॥

उम्र भर अपनी रहा हो जो शरीके अहले दर्द।
आज मइयत पर उसी की नौहख्वा कोई न हो॥

मैं हकीक़त को समझ के तेरा दीवाना बना।
यूं तभी आलम में किसी का राज़दा कोई न हो॥

हैं खुदा ज़ाने ख्यालाते जुनूं में क्या असर।
ढूढता फिरता हूँ वह जंगल जहा कोई न हो॥

हो गये ज़र्बुलमिस्ल सब राज़े दिल आखिर 'अज़ीज़'।
लाख कोशिशें की कि मेरा राज़दा कोई न हो॥

५

अपनी ही ज़ात में खुद उसका नज़ारा होता।
हिज्र में हमने अगर नफ्स को मारा होता॥

देखता हूँ ग़ैर को क्यों दीद ए कोताहे नजर।
अपनी हस्ती का मुयस्सर जो नज़ारा होता॥

कौन है तेरे सिवा रूहे खाने हस्ती।
तू न होता तो भला कौन हमारा होता॥

ग़ैर मुमकिन था कि आती न सदाय लब्बैक।
मरने वालों को अगर तुमने पुकारा होता॥

शमअ़ए अफसुरदः जहाँ फूलें हैं पसमुर्दः जहां।
दिल को इस गोरे ग़रीबा में पुकारा होता॥

आरज़ू लखनवी

जन्म सन् १८७२ ई० मृत्यु १९५१ ई०

सैय्यद अनवर हुसैन उपनाम आरज़ू सन् १८७२ ई० में लखनऊ में पैदा हुए। काव्य से प्रेम बचपन से ही था। जलाल लखनवी से इल्मे ओरूस सीखा और उन्हीं से इस्लाहे सुख़न लेने लगे। उस्ताद की कृपा से आपकी गणना स्वयं उस्तादों में होने लगी। लखनऊ की टकसाली भाषा और लखनऊ स्कूल की शायरी के अन्तिम व्यक्ति थे। आपकी शायरी में उस्तादाना रंग झलकता है। आरज़ू लखनऊ स्कूल की उस शायरी की यादगार है जिसपर रामपुर के समय में दिल्ली स्कूल की छाप पड़ चुकी थी। इसका यह तात्पर्य है कि कलाम में ख़ारजी लवाज़मात के साथ ही साथ दाख़ला मूहासिन भी पाये जाते हैं।

काव्य विशेषता

आपकी भाषा परिमार्जित, मधुर, बामुहावरा और बरजस्ता है। रेयात-लफ़्ज़ी कलाम में आवर्द और तसनअ पैदा कर दिया है। कहीं कहीं शोख़ी, मामला बन्दी और एक झोंक भी नज़र आती है। आपने उर्दू से अन्य भाषाओं के शब्दों को निकालकर शुद्ध उर्दू में ग़ज़लें कहना प्रारम्भ किया परन्तु असफल रहे क्योंकि भाषा का जो सिद्धान्त बन चुका उसके विपरीत चलना कोई बच्चों का खेल नहीं।

ग़ज़लियात

१

जो सुखन इस ज़बान से निकला।
तीर गले, कमान से निकला॥

कम न थी तेग़ से अदाय खराम।
दोस्त दुश्मन की शान से निकला॥

दिल हुजूमे हविस से निकला ख़ूब।
और बड़ी आन बान से निकला॥

इम्तेहां में वह बेवफ़ा बे-मुह।
बढ़के मेरे गुमान से निकला॥

आरज़ू इश्क में है पीरे तरीक।
यह चलन इस जवान से निकला॥

२

कुछ कहते कहते इशारों में शरमाके किसी का रह जाना।
वह मेरा समझ कर कुछ का कुछ जो कहना न था सब कह जाना॥

कुछ दिल उमडता आता है कुछ रसने लगे हैं छाले भी।
मुमकिन है अब ए खूने हसरत, आखों से टपक कर रह जाना॥

वह गिर गये खूनी के हाथों दामन पे नुमायां है हर जा।
इन आंखों की कोतः बीनी ने जिस दाग़ को तह पर तह जाना॥

की जब्त ने पैदा शाने जुनं अब खब्र नहीं राज़े दिल की।
कुछ बैठे बैठे कह उठना फिर खुद ही झिझक कर रह जाना॥

बस आरजूए नालाँ बस बस जब .खुदही .खुद है गरमे नफस।
आसान है परदा परदा में सब हालते दिल कह जाना॥

३

बहुत दिल लुभाया दिले आज़ार होकर।
खिले फूल बन कर चुभे खा़र होकर॥

जबा को तो यारा नहीं जिक्रे ग़म का।
कुछ आंखें ही कह जायें खूंबार होकर॥

पहुँचते हैं उन तक पहुँच जाने वाले।
तहे तेग़ होकर सरे दार होकर॥

खेजालत की आइना बन्दी है हर सू।
किधर जाऊ अपने से बेज़ार होकर॥

कलामे खुदी आरजू वे खुदी में।
छलकने लगा ज़र्फ़ सरशार होकर॥

४

देखें महशर में उनसे क्या ठहरे।
वही बुत वही खुदा ठहरे॥

ठहरे उसी दर पे यूं तो क्या ठहरे।
बन के जंजीर वे सदा ठहरे॥

सांस ठहरे तो दम ज़रा ठहरे।
तेज़ आंधी शमअ क्या ठहरे ॥

ज़िन्दगानी है एक नफ़स का शुमार।
बे हवा ये चिराग़ क्या ठहरे ॥

रोती आंखें फ़लक न देख सकीं।
बहते ज़ख्मों पे क्या ठहरे ॥

ज़िन्दगानी हविस की आंधी है।
देखें किस रुख़ पे हवा ठहरे ॥

आरज़ू वह हमें नसीब कहा।
कान तक जाके जो सदा ठहरे ॥

———

असग़र गोंडवी

जन्म सन् १८८४ ई०　　　　　　　　　　　　मृत्यु सन् १९३६ ई०

असगर हुसैन उपनाम असग़र का असली वतन गोरखपूर है मगर गोंडा मे रहने के कारण गोडवी प्रसिद्ध हो गये। प्रारम्भिक शिक्षा साधारण थी मगर अरबी, फारसी और अंग्रेजी का स्वयं इतना अध्ययन किया कि साहित्यिक पुस्तकों को सरलता से समझ लेते और उनका अनुवाद कर सकते थे।

दूसरे बड़े बाकमाल कवियों के समान आपको भी कविता से प्रेम बचपन से ही था। प्रारम्भ मे वज्द बिलग्रामी और अमीर उल्ला तसनीम को अपनी कविता दिखाते थे परन्तु यह सिलसिला अधिक दिनों तक न चल सका। आप पहले गोंडा में चश्मे की दूकान करते थे। इसके बाद लाहौर गये और साहित्यिक सेवाओं मे लगे रहे। कुछ दिनों इण्डियन प्रेस इलाहाबाद से भी आपका सम्बन्ध रहा। इसके बाद हिन्दोस्तानी एकेडमी की मासिक पत्रिका 'हिन्दोस्तानी' का सफल सम्पादन किया। असग़र की तबीयत सकून से भरी हुई और नफासत पसन्द थी अत: वह उच्च विचार वालों से ही सम्बन्ध रखते और उन्हीं में अधिक प्रसिद्ध हुए। साधारण लोगों से सम्बन्ध कम रखते थे।

काव्य विशेषता

असग़र के सम्बन्ध मे कहा गया है कि वह साधारण लोगों के लिये कविता नहीं करते थे। अन्य कवियों के मुकाबले में आप ने बहुत कम कविता कही है। मगर जो कुछ भी कहा है वह पत्थर की लकीर से कम नहीं है। विचार उच्च, विषय गम्भीर, कविता साहित्य की चरम सीमा का

उलंघन करने वाली है। वह अपने रंग के केवल एक ही पैदा हुए। ग़ज़ल के विषय में उनका निम्न विचार है—

असग़र ग़जल में चाहिये वह मौजे जिन्दगी।
जो हुस्न है बुतों में जो मस्ती शराब में॥

आपकी समस्त ग़ज़लों में यही रंग- मिलता है। आपकी शायरी के अंग हैं रंगीनी और सौन्दर्य। असग़र के यहा काल्पनिक सौन्दर्य से अधिक वास्तविक सौन्दर्य का अनुपम वर्णन है। आपकी शायरी सूखी सूफी तसव्वुफ की। शायरी नहीं है बल्कि ईश्वरी भेद और वेदान्त को एक नवीन रूप प्रदान किया है।

आपकी सौन्दर्य के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण है अतः आपने तरह तरह से हुस्ने इश्क पर प्रकाश डाला है। असग़र की शायरी की विशेषता यह भी है कि वह फिक्र पैदा करने वाली और भावनाओ को दृढ करने वाली है अश्आर पढकर और सुनकर झूमते ही नहीं हैं बल्कि हम विचारमग्न हो जाते हैं। सर तेज बहादुर सप्रू लिखते हैं कि अल्लामा सर इक़बाल ने अपनी प्राइवेट चिट्ठियो मे उनके कलाम की तारीफ की है। इसमे जिद्दत और तासीर के क़ायल हैं और उसे उर्दू साहित्य मे एक क़ाबिले कदर (आदर करने योग्य) एज़ाफा है। अबुलकलाम आज़ाद ने आपकी कविता पर मत प्रकट करते हुए कहा है कि मेरी निगाह नुक्ताचीनी मे कमी नहीं करती। मैं आदर्श की कसौटी पर किसी तरह अपने आपको राज़ी नहीं कर सकता। अहले फन को मुझ से खुशगुमानी की नहीं बदगुमानी की शिकायत है। फिर भी मैं हरसतर मे अनुभव करता हूँ कि जिस शायरी के कलाम मे निम्नलिखित अशयार हों उसकी शायरी वक़्त वहसों अस्नात की मुहताज नहीं हो सकती।

पहले हस्ती की जुस्तुजू का ग़ुरूर।
फिर जो गुम हो तो जुस्तुजू न करे॥

हल कर लिया मजाज़ो हक़ीक़त के राज़ को।
पाई है मैंने ख़्वाब की ताबीर ख़्वाब में॥

इत्यादि अशार लिखे हैं और विभिन्न प्रकार से उनकी शायरी पर प्रकाश डाला है। आपने दो पुस्तकें अपनी यादगार छोड़ी हैं जो पढ़ने के योग्य हैं—नेशाते रूह और सरूदे ज़िन्दगी।

ग़ज़लियात

तमाम दफ़्तरे हिकमत उलट गया हूँ मैं।
मगर खुला न अभी तक कहाँ हूँ क्या हूँ मैं॥

कभी सुना कि हक़ीक़त है मेरी लाहूती।
कहीं ये ज़िद कि हयूलाए इतेक़ा हूँ मैं॥

ये मुझ से पूछिये क्या जुस्तूजू में लज़्ज़त है।
फ़ेज़ाय दह में तहलील हो गया हूँ मैं॥

हटा के शीशः ओ सागर हुजूमें मस्ती में॥
तमाम अर्सए आलम पे छा गया हूँ मैं॥

उड़ा हूँ जब तो फ़लक पर लिया है दम जाकर।
ज़मी को तोड़ गया हूँ जो रह गया हूँ मैं॥

रही है ख़ाक के ज़र्रों में भी चमक मेरी है।
कभी कभी तो सितारों में मिल गया हूँ मैं॥

कभी ख़्याल की है ख़्वाब आलमे हस्ती।
ज़मीर में अभी फ़ितरत के सो रहा हूँ मैं॥

कभी ये फ़क्र कि आलम भी अक्स है मेरा।
खुद अपना तजे तज़र हैं कि देखता हूँ मैं॥

कुछ ईन्तेहा नहीं नेरंगे जीस्त की मेरे।
हयात महज़ हूँ परवद ए फना हूँ मैं॥

हयातो मौत भी अदना सी एक कड़ी मेरी।
अजल से लेके अवद तक वह सिलसिला हूँ मैं॥

कहां है सामने आ मनूअले यकीं लेकर।
फ़रेब खूरदः ए अक़्ले गुरेज पा हूँ मैं॥

नवाय राज का सीने में खून होता है।
सितम है लफ्ज परस्तों में घिर गया हूँ मैं॥

न कोई नाम है मेरा न कोई सूरत है।
कुछ इस तरह हमा तन दीद हो गया हूँ मै॥

न कामयाब हुआ मैं न रह गया महरूम।
बडा गजब है कि मंजिल पे खो गया हूँ मैं॥

जहां है कि नहीं जिस्मों जा भी है कि नहीं?
वह देखता है, मुझे उसको देखता हूँ मैं॥

तेरा जमाल है, तेरा ख्याल है तू है।
मुझे ये फुर्सतें काविश कहा कि क्या हूँ मैं॥

मुझसे देखा न गया हुस्न का रुस्वा होना

भए बे रंग का सो रंग से रुसवा होना।
कभी ये कश कभी साफी कभी मीना होना ॥

अज अवद ताव अव महु तमाशा होना।
मैं वह हूँ जस को न मरना है न पैदा होना ॥

सारे आलम में है बेतावी ओ शोरिश बरपा।
हाय उस शोख का हम शक्ले तमन्ना होना।

फस्ले गुल क्या है ये मेराज है आबो गुल की।
मेरी रगरग को मुबारक रगे सौदा होना।

कह के कुछ लाल ओ गुल रख लिया वदह मैंने।
मुझ से देखा न गया हुस्न का रुसवा होना ॥

जलवए हुस्न को है चश्मे तहय्युर की तलव।
किस की किस्मत में है महरूमे तमाशा होना।

वह ही से वह मायां भी है पिहां भी है।
जैसे सवहा के लिये पदए मीना होना ॥

तेरी शोखी तेरी नेरंग अदाई के निसार।
एक नई जान है तजदीदे तमन्ना होना ॥

हुस्न के साथ है वेगाना निगाही का मज़ा।
कहहे कह मगर अर्जे तमन्ना होना ॥

इस से बढ़ कर कोई बेराह रवी क्या होगी।
.गमे पुरशौक़ का मंजिल से शनासा होना॥

मायले शेरो .गजल फिर है तबीअत असग़र।
अभी कुछ और मुक़द्दर में है रुसवा होना॥

कुछ फितने उठे हुस्न से कुछ हुस्ने नज़र से

जलवा तेरा अब तक है नेहाँ चश्मे बशर से।
हर एक ने देखा है तुझे अपनी नजर से॥

ये आरिज़े पुरनूर पे .जुलफ़ें हैं परीशा।
कमबख़्त निकल गुमरहीये शामो सहर से॥

वह शोख भी मा.जूर है मजबूर हूँ मै भी।
कुछ फितने उठे हुस्न से कुछ हुस्ने नज़र से॥

इस आलमे हस्ती में न मरना है न जीना।
तूने कभी देखा नहीं मस्तो की नजर से॥

जाबाजों के सीने मे अभी और भी दिल हैं।
फिर देखिये एक् बार मुहब्बत की नज़र से॥

नज़्ज़ारए पुरशौक़ का एक् नाम है जीना।
मरना इसे कहिये कि गुज़रते है इधर से॥

मिटने को यूं मिटें कि अबद तक निशां रहे

आशूवे हुस्न की भी कोई दास्तां रहे।
मिटने को यूं मिटें कि अबदतकनिशां रहे॥

क्या क्या हैं दर्दे इश्क़ की फितना तराजि़याँ।
हम इलतेफ़ाते .ख़ास से भी बद गुमा रहे॥

मेरे तरश्के .खूं में है रंगीनिये ह्यात।
यारब फेजाय हुस्न अबद तक जवाँ रहे॥

कली की आँख खुल जाय चमन बेदार हो जाय

यह नग़मा बुलबुले रंगीं नवा एक् बार हो जाय।
कली की आँख खुल जाय चमन बेदार हो जाय॥

नजर वह है जो इस कौनो मका से पार हो जाय।
मगर जब रूए तावाँ पर पड़े बेकार हो जाय॥

तबस्सुम की अदा से ज़िन्दगी बेदार हो जाय।
नजर से छेड दे रग रग मेरी हुश्यार हो जाय॥

सहर लायेगी क्या पैग़ामे बेदारी शबिस्तां में।
नकाबे रुख़ उलट दो खुद सहर बेदार हो जाय॥

ये इकरारे .ख़ुदी है दावए ईमानो दीं कैसा।
तेरा इक़रार जब है .ख़ुद से भी इंकार हो जाय॥

नज़र उस हुस्न पर ठहरे तो आख़िर किस तरह ठहरे।
कभी .ख़ुद फूल बन जाय कभी रुख़सार हो जाय ॥

कुछ ऐसा देख कर चुप हूँ बहारे आलमेइमका।
कोई एक् जाम पी, जिस तरह सरशार हो जाय ॥

चला जाता हूँ हँसता खेलता मौजे हवादिस से।
अगर आसानिया हों जिन्दगी दुश्वार हो जाय ॥

एक् लहू की बूंद क्यों हंगामाआरा दिल में है

इश्क़ की फितरत अजल से हुस्न की मंजिल में है।
.कैस भी महफ़िल में है लैला अगर महफिल में है ॥

जुस्तजू है जिन्दगी जौक़े तलब है जिन्दगी।
जिन्दगी का राज़ लेकिन दूरीय मंज़िल में है ॥

लाल ओ गुल तुम नहीं होमाहो अंजुम तुम नही।
रगे महफ़िल बन के लेकिन कौन इस महफिल में है ॥

इस चमन में आग बरसेगी कि आयेगी बहार।
एक लहू की बून्द क्यों हगामा आरा दिल में है ॥

तूर पर लहरा के जिसने फूंक डाला तूर को।
एक शरारः शौक़ बनकर मेरे आबोगिल में है ॥

हां के राजे इश्क़ अफ़शा बन गया एक् राज़ और।
सब ज़बा पर आ चुका है सब अभी तक दिल में है ॥

अर्श तक तो ले गया था तू साथ अपने हुस्न को।
फिर नहीं मालूम अब .खुद इश्क़ किस मंज़िल में है॥

"असग़रे" अफ़सुर्दः है महरूमे मौजे जिन्दगी।
तू नवाय रूह पर्वर्दः बन के किस महफ़िल में है॥

लुत्फ़ जब है अपनी दुनिया आप पैदा क़ीजिये

हुस्न बन कर .खुद को आशकारा कीजिये।
फ़िर मुझे पर्दा बनाकर मुझसे पर्दा कीजिये॥

एक दिले बेताब मैं, पहलू में फिर पैदा करूँ।
मुस्करा कर फिर ज़रा मुझसे तक़ाजा कीजिये॥

इस जहांने ग़ैर मैं आराम कहाँ राहत कहाँ।
लुत्फ जब है अपनी दुनिया आप पैदा कीजिये॥

रिंद इधर बे.खुद उधर दैरो हरम गरमे तवाफ़।
अर्श भी जब झूमकर आता है देखा कीजिये॥

एकही साग़र में "असग़र" खुल गई दिल की गिरह।
राजे हस्ती भी खुला जाता है देखा कीजिये॥

कौन ज़र्रा है कि सरशार मुहब्बत में नहीं

दोनों आलम तेरी नैरंग अदाई के निसार।
अब कोई चीज़ यहाँ जेबे मुहब्बत में नहीं॥

लोग मरते भी हैं जीते भी हैं बेताब भी हैं।
कौन सा सेह्र तेरी चश्मे एनायात में नहीं ॥

सबसे एक तर्ज़ जुदा सबमें एक आहंग जुदा।
रंग महफ़िल में तेरा जो है वह ख़िलवत में नहीं ॥

नशए इश्क़ में हर चीज उड़ी जाती है।
कौन ज़र्रा है कि सरशार मुहब्बत में नहीं ॥

———

आग़ा हश्र कश्मीरी, बनारसी

जन्म सन् १८७६ ई०　　　　　　मृत्यु सन् १९३५ ई०

ज़ाहिर है मर्गे "हश्र" से राजे दोवामे "हश्र"।
यानी .क्लामे "हश्र" से है ज़िन्दा नामे "हश्र" ॥

आग़ा हश्र नाटककार के रूप में

शेक्सपीयरे हिन्द आग़ा हश्र का नाम परिचय का मुहताज नहीं। आपने ड्रामे और शायरी की दुनिया मे आकर वह वह कमाल दिखाया जो आज तक किसी से न बन पड़ा। ये कहना कि हश्र ने शेक्सपीयर की साहित्य रूपी वाटिका से नाटक रूपी फल तोड़ा उनकी योग्यता पर कलंक का अमिट टीका लगाना है बल्कि यूँ कहना चाहिये कि हश्र ने शेक्सपीयर के अपूर्ण विचारो को पूर्ण कर दिया। स्वतंत्रता और देश-भक्ति का जैसा हश्र ने अपने नाटको मे वर्णन किया है वैसा भारत क्या यूरोप के किसी भी नाटककार और अफसानानिगार से न बन पड़ा।

आग़ा हश्र का असली नाम मुहम्मद शाह था। आपका वंश शाल का व्यापार करता हुआ कश्मीर से बनारस आया।

आप सन् १८७६ ई० मे यहीं पैदा हुये और यहीं शिक्षा-दीक्षा हुई। शिक्षा अभी पूरी भी न हो पाई थी कि बनारस मे एक नाटक कम्पनी आई उससे किसी बात मे झगड़ा हो गया। घर आकर एक नाटक उस कम्पनी के विरोध मे "आ.फ़ताबे मुहब्बत" लिखा। यही प्रथम प्रयत्न था इसके कुछ समय बाद आप बम्बई गये। वहाँ इस समय दो बड़ी कम्पनियाँ काम कर रही थी। एक अलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी और दूसरी काउस जी की। उनके लिए आग़ा ने मुरीदे शक, मारे आस्तस्तीं पाकदामन, ठंडी आग

और असीरे हिर्स नाटक लिखे। इसके बाद कई कम्पनियो मे नाटक लिखते रहे। एक एक नाटक दस-दस बीस-बीस हज़ार रुपये तक बिक गया। आपने बाइस सौ रुपये तक मासिक वेतन भी पाया। आपने नवाब चरखारी के लिये "सीता बनवास" लिखा। बंगला मे भी एक नाटक लिखा और हिन्दी मे भी कई नाटक हिन्दू जाति के लिये उनके सामाजिक और धार्मिक विचारों को समझते हुये लिखा जिनमे सूरदास उर्फ बन देवी, मधु मुरली, आँख का निशा, धर्मी बालक उर्फ ग़रीब की दुनिया, हिन्दोस्तान (इसमे तीन नाटक श्रवण कुमार, अकबर और आज है) भारती बालक उर्फ समाज का शिकार। दिल की प्यास, सीता बनवास भीष्म प्रतिज्ञा इत्यादि हैं। आप अरबी, फारसी, उर्दू हिन्दी, बंगला, गुजराती अच्छी जानते और बोलते थे। उर्दू मे आपने सफ़ेद ख़ून, ख़ूबसूरत बला, सैदे हविस, यहूदी की लड़की, क़िस्मत का शिकार, चंडी दास, दिल की आग, इत्यादि नाटक लिखे। लाहौर मे आप हश्र पिक्चर नामक एक फिल्म बना रहे थे जो पूरी न हो पाई और २८ अप्रैल सन् १९३५ ई० को मृत्यु हो गई। लाहौर ही मे दफ़न हुये।

आख़िर गुल अपनी सर्फ़ें दरे मैकदा हुई।
पहुँची वहीं पे ख़ाक जहाँ का खमीर था॥

यदि आज शेक्सपीयर, मिल्टन, वर्डस वर्थ जीवित रहते तो रश्क करते और उन्हे अपने से ऊँचा स्थान अवश्य देते।

जर्रा ज़र्रा रो रहा है ग़म में तेरे अश्कबार।
तेरे मरने के तसद्दुक़ तेरे मरने के निसार॥

आग़ा हश्र कवि के रूप में

मेरे हर शेर में ए हश्र है मस्ती औ रंगीनी।
ग़जल मेरी शबाबे यार की तस्वीर होती है॥

मौलाना ज़फ़र अली ख़ाँ ने आपके विषय में लिखा है कि हश्र ने शायरी के जिस मैदान को सर किया ड्रामा नवीसी की जो मंज़िलें तय कीं; वह इस दौर के किसी लेखक, किसी शायर, किसी ड्रामा नवीस से तय न हो सकीं। हश्र साहब अपने तर्ज़ के वाहिद लिखने वाले थे।

मार्च सन् १६२०ई० में हेमायते इस्लाम के जलसे मे शुकरिये योरूप पढ़ी सर इक़बाल ने भी अपने जवाब शिकवा मे इस पर कुछ विचार अपने शब्दों में लिखे हैं।

आह जाती है फ़लक पर रहम लाने के लिये।
बादलो! हट जाओ, देदो राह जाने के लिये॥

आप अपनी कविता के विषय में स्वयं कहते हैं।

"हश्र" मेरी शेरगोई है .फकत फ़र्यादे शौक़।
अपना ग़म दिल की ज़बाँ में दिल को समझाता हूँ मै॥

आपकी दूसरी प्रसिद्ध बड़ी नज़्म मौजे ज़मज़म है जो कि इसी अंजुमन के दूसरे जलसे मे पढी थी।

तेरे दर को छोडकर हम बे नवा जाये कहाँ।
या बता दे और कोई अपने जैसा घर मुझे॥

दूसरों को ज़ोरों ज़र दे ऐश दे आराम दे।
और हमें इस दौलते दुनिया से सिर्फ़ इस्लाम दे॥

अपनी कविता के विषय में कहते हैं कि कोई इसकी महत्ता क्या समझेगा।

ख़मोश ए हश्र देगा कौन दादे नग़ज़ गुफ़्तारी।
सुख़न नाआशना हैं, सब ज़बाँ को दिल मे रहने दे॥

तेरे हुस्ने सितम को भी मुहब्बत आफरीं पाया

जहाँ ने दिल बरी में दिल रुबा तुझ सा नहीं पाया।
तेरे हुस्ने सितम को भी मुहब्बत आफरीं पाया॥

वह आँसू जिनकी कुछ .कीमत न थी तेरी निगाहों मे।
उन्हीं को रौनके दुक्काने जेबो आस्तीं पाया॥

समझता था कि है आजाद मुतलक़ मुमलिकत दिल की।
उसे भी बादशाहे हुस्ने के जेरे नगीं पाया॥

न्याजे इश्क़ ने गुल के एवज़ सिजदे बिखेरे हैं।
जहाँ तेरा .क़दम देखा वहीं नक़्शे जबीं पाया॥

मुहब्बत "हश्र" साजे हुस्न के तारो की जुंबिश है।
इसी से रूहे शायर ने सरूरे शकरीं पाया॥

मुकद्दर की कहानी पढ़ रहा हूँ तेरे तीवर में

यही एक इश्वए रगीं से दिल को मस्त करती है।
वह हुस्न चारदह साला जो है आग़ोशे साग़र में॥

न पूछ ए बेवफा क्यों तक रहा हूँ तेरी सूरत को।
मुकद्दर की कहानी पढ़ रहा हूँ तेरे तीवर मे॥

कहो ज़ाहिद से क्यों है इस क़दर फ़िर्दौस पर नाजा।
हजारों जुंबिशें आबाद है तखइयुले अख़्तर में॥

बेवफ़ा कहते हैं तुझको और शरमाता हूँ मैं

याद में तेरी जहाँ को भूलता जाता हूँ मैं।
भूलने वाले कभी तुझ को भी याद आता हूँ मै॥

एक धुधला सा तस्व्वुर है कि दिल भी था यहाँ।
अबतो सीने में फक़त एक टीस सी पाता हूँ मै॥

जिस तरह ऊपर से नीचे को गिरै पानी की धारा।
तेरै .क़दमों की तरफ यूँ ही बहा जाता हूँ मैं॥

आरज़ूओं का ख़राब और मर्गे हसरत हाय-हाय।
जब बहार आई गुलिस्ता में तो मुर्झता हूँ मैं॥

दिल की धडकन जिसकी लय है अश्क पैहम और आह।
फिर वह नग़्मा आज साजे रूह पर गाता हूँ मै॥

'हश्र" मेरी शेर गाई है फक़त फर्यादे शौक़।
अपना ग़म दिल की ज़बा में दिल को समझाता हूँ मैं॥

क्या सज़ा तजवीज़ की है जुर्मे उल्फ़त के लिये

एक् .क्यामत रोज़ है बीमारे उल्फत के लिये।
कैसे मानूँ दिन मुक़र्रर है .क्यामत के लिये॥

इसलिये करता है सिजदे इश्क़ तेरी याद को।
एक् .ख़ुदा भी चाहिये दुनियाए उल्फ़त के लिये॥

क्यों खफा होते हो मै आया हूँ इतना पूछने।
क्या सज़ा तजवीज़ की है जुर्म उल्फत के लिये॥

जिसके होठों में दवा और जिसकी आखों में शफा।
आये सब लेकिन न आया, वो एबादत के लिये॥

हाले दिल उसको सुनाता हूँ जबाने शेर से।
"हश्र" लिखी है ग़ज़ल इजहारे हसरत के लिये॥

बुते काफिर हमारा भी ख़ुदा होता तो क्या होता

गरीबों का भी कोई आसरा होता तो क्या होता।
बुते काफिर हमारा भी ख़ुदा होता तो क्या होता॥

कोई लज्जत नही है फिर भी दुनिया जान देती हैं।
ख़ुदावन्दः मुहब्बत में मजा होता तो क्या होता॥

जब इतनी बेवफ़ाई पर उसे दिल प्यार करता है।
जो यारब वो सितमगर बावफा होता तो क्या होता॥

सुना है "हश्र" वो जिक्रे वफ़ाये यार करते थे।
जो मैं भी बीच में कुछ बोल उठा तो क्या होता॥

जो बिगड़ गया वह नसीब हूँ जो उजड़ गया वह दयार हूँ

जो खेज़ां हुई वह बहार हूँ, जो उतर गया वह ख़ुमार हूँ।
जो बिगड गया वह नसीब हूँ, जो उजड गया वह दयार हूँ॥

मे कहाँ रहूँ, मैं कहाँ बसूँ, न ये मुझसे .खुश, न वह मुझसे .खुश।
मै .जमीं की पीठ का बोझ हूँ, मै .फलक के दिल का .गुबार हूँ॥

मेरा हाल .काबिले दीद है, न तो यास है, न उमीद है।
न गिला गुजार .खेजा हूँ मै, न सिपास संजे बहार हूँ मैं॥

कोई ज़िन्दगी है ये जिन्दगी, न हँसी रही न .खुशी रही।
मेरी घुट के हसरतें मर गईं, मै इन हसरतो का मजार हूँ॥

वह .खुशी के दिन गये "हश्रे" याद सी रह गई।
कहीं जामे बादए नाब था मगर अब उसका उतार हूँ॥

फ़ौजे दारा लश्करे नौशेरवाँ कुछ भी नहीं

कह रहा है आस्मां ये सब समा कुछ भी नहीं।
पीस दूँगा एक गर्दिश में जहाँ कुछ भी नहीं॥

तख्त वालों का पता देते हैं तख्ते गोर के।
खोज मिलता है यहीं तक बाद आजा कुछ भी नहीं॥

जिनके महलों में हजारों रंग के फानूस थे।
झाड़ उनकी .कब्र पर है और निशां कुछ भी नहीं॥

जिस जगह था जम का जलसा और .खुसरू का महल।
चन्द कब्रों के सिवा अब तो वहाँ कुछ भी नहीं॥

गूँजते थे जिन के डंकों से जमीनों आस्माँ।
चुप पड़े हैं .कब्र में अब हूँ न हा कुछ भी नहीं॥

ताज कै .खुसरू कहाँ, शदाद का गुलशन कहाँ।
.फौजे दारा लश्करे नौशेरवा कुछ भी नहीं॥

डाक्टर सर शेख मुहम्मद इकबाल

एम. ए., पी. एच. डी. (लन्दन) बार. एट ला

जन्म सन् १८७५ ई०   मृत्यु सन् १९३७ ई०

कौन जानता था कि गलिब के बाद भारतवर्ष मे फिर कोई ऐसा शायर उत्पन्न होगा जो उर्दू शायरी मे फिर से नवीन चेतना का संचार करेगा। ऐसे समय मे मुहम्मद इक़बाल आये जिनके कलाम का सिक्का भारत ही नही, सारे संसार मे जम गया।

आपका जन्म १८७५ ई० मे स्याल कोट मे हुआ। आपके पूर्वज काश्मीरी ब्राह्मण थे। बाद मे उन्होने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और इस प्रकार कट्टर मुसलमान हो गये। प्रारम्भिक शिक्षा स्यालकोट के अंग्रेजी स्कूल मे हुई। मैट्रिक पास करके मिशन कालेज मे भरती हुए। यहाँ आलिम सैय्यद मीर हसन साहब की शिक्षा और निगरानी मे रहे। इसी समय से इनकी रुचि साहित्य तथा शायरी मे विशेष हो गई। लाहौर से बी. ए. कर लिया। एम. ए. मे ये सर्वप्रथम आये। कुछ दिन आप लाहौर मे अंग्रेजी तथा दर्शन के प्राध्यापक भी रहे।

विदेशों में आपकी कैम्ब्रिज तथा लन्दन विश्वविद्यालयों मे शिक्षा हुई। वहीं से पी. एच. डी. की उपाधि मिली। आप कुछ दिनों लंदन विश्वविद्यालय मे भी प्रोफेसर रहे। फिर लाहौर लौट कर प्रैक्टिस करने लगे पर शैरो शायरी में रुचि बढती ही गई। सन् १९२२ मे आपको नाईट हुड (Knight hood) की उपाधि मिली।

आप एक दूरदर्शी कवि थे। आपने भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन का गम्भीर अध्ययन किया था। आपने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं जिनमें

दर्शन, शायरी तथा लेख भी है। आपकी पुस्तके उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं मे है। अन्य भाषाओं मे अनुवाद भी हो चुके हैं। कुछ लेख इत्यादि अभी भी अप्रकाशित है जिनकी खोज जारी है।

काव्य विशेषता

आपको बचपन से ही शायरी का शौक था। मुशायरों मे आपको बड़ी ख्याति मिली। आप प्रसिद्ध शायर दाग देहलवी के शिष्य हो गये। आपकी शायरी का पहला दौर १८६६ से १६०५ तक है। इस समय आपकी शायरी में उस्तादाना रंग नहीं आया था आप इस समय राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रकट हुये। इनकी नज्मे हिमालाय बच्चों का कौमी गीत, नया शिवाला इत्यादि इसी दौर की रचनाये हैं।

दूसरा दौर १६०५ से १६०८ तक है। इस दौर मे आपने बहुत कम लिखा है। फारसी का शौक़ हो गया था। इस जमाने की शायरी गम्भीर तथा दूरदर्शी विचार से ओत-प्रोत है और ग़ालिब की दार्शनिकता इन पर छा रही थी।

तीसरा दौर १६०८ से १६३७ तक है। इस समय मे आपका कलाम जोरदार था। फारसी का प्रभाव कम हो गया था। आपकी नज्मे छोटी तथा बड़ी दोनो वहरो में हैं जो उर्दू साहित्य मे एक विशेष स्थान रखती हैं। इक़बाल एक पेन इस्लामिस्ट कवि की हैसियत से भी याद किये जाते हैं। इक़बाल का प्रकृति वर्णन भी अनूठा है जिसका सानी नहीं।

आपकी कवितायें इस्लाम के उत्थान तथा पतन पर लिखी गई है। आपने थोड़े तथा सरल शब्दो मे बड़ा अर्थ भर दिया है। इनके कलाम में कहीं-कहीं फारसी के शब्द तथा मुहावरे भी प्रयोग हुए हैं जो सरल हैं और शीघ्र समझ मे आ जाते हैं। आपने किसी की व्यर्थ प्रशसा मे नज्में नहीं लिखीं। नज्मों मे दार्शनिकता तथा धार्मिकता कूट-कूटकर भरी है।

बड़े-बड़े आलोचकों और लेखकों ने आपकी सराहना की है और ग़ालिब का दर्जा दिया है। इस समय में इक़बाल उर्दू का सबसे बड़ा शायर माना गया है अब तक इनकी जगह कोई नहीं ले सका।

ग़ज़लियात

१

तेरे इश्क़ की इन्तेहा चाहता हूँ,
मेरी सादगी देख क्या चाहता हूँ।
सितम हो कि हो वादए बे हिजाबी,
कोई बात सब्र आज़मा चाहता हूँ॥

यह जन्नत मुबारक रहे ज़ाहिदों को,
कि मैं आप का सामना चाहता हूँ।
ज़रासा तो दिल हूँ मगर शोख़ इतना,
वही लनतरानी सुना चाहता हूँ॥

कोई दम का मेहमान हूँ ये अहले महफ़िल,
चिराग़े सहर हूँ बुझा चाहता हूँ।
भरी बज़्म मे राज़ की बात कह दी,
बड़ा बेअदब हूँ सज़ा चाहता हूँ॥

२

सख्तियाँ करता हूँ दिल पर ग़ैर से ग़ाफ़िल हूँ मैं,
हाय क्या अच्छी कही ज़ालिम ज़ाहिल हूँ मैं।
मैं ज़मीं तक था कि तेरी जलवा पैराई न थी,
जो नुमूदे हक़ से मिट जाता है वह बातिल हूँ मैं॥

४

मशरिक़ में ओसूले दीन बन जाते ।
मग़रिब में मशीन बन जाते ॥
रहता नहीं एक भी हमारे पल्ले ।
त्यों एक के तीन तीन बन जाते ॥

५

कोई दिन की बात है, ए मर्दे होशमन्द ।
ग़ैरत न तुझमें होगी, न ज़न ओट चाहेगी ॥
आता है अब वह दौर कि अवलाद के एवज़ ।
कौंसिल की मिम्बरी के लिये वोट चाहेगी ॥

६

वह मिस बोली इरादा .खुदकुशी का जब किया मैंने ।
मुहज्जब है तू ए आशिक़ .क़दम बाहर रख हद से ॥
न जुर्अत है न खंजर है तो क़स्दे खुदकुशी कैसा ।
ये माना दर्दे नाकामी गया तेरा गुज़र हद से ॥

कहा मैंने कि ए जाने जहाँ कुछ नक़द दिलवा दो ।
किराये पर मँगा लूँगा कोई अफ़ग़ान सरहद से ॥

रुबायात और क़तआत

१

कभी दरया से मिस्ले मौज उभर कर ।
कभी दरया के सीने में उतर कर ॥
कभी दरया के साहिल से गुज़र कर ।
मुक़ाम अपनी .खुदी का फ़ाश तर कर ॥

२

तेरे शीशे में मय बाक़ी नहीं है।
बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है॥
समन्दर से मिले प्यासे को शबनम।
बख़ीली है ये रज़्ज़ाक़ी नहीं है॥

३

जवानों को मेरी आहे सहर दे।
फिर इन शाही बच्चों को बालो पर दे॥
ख़ुदाया अरज़ू मेरी यही है।
मेरा नूरे बसीरत आम कर दे॥

४

ख़ैरद वाक़िफ़ नहीं है नेको बद से।
बढ़ी जाती है ज़ालिम अपनी हद से॥
ख़ुदा जाने मुझे क्या हो गया है।
ख़ैरद बेज़ार है दिल से मैं ख़ैरद से॥

५

तेरे सीने में दम है दिल नहीं है।
तेरा दम गर्मीये महफ़िल नहीं है॥
ग़ुज़र जा अ़क्ल से आगे कि ये नूर।
चिराग़े राह है मंज़िल नहीं है॥

६

तेरा तन रूह से नाआशना है।
अजब क्या आह तेरी नारसा है॥
तने बेरूह से बेज़ार हक़ है।
ख़ुदाये ज़िन्दा ज़िन्दों का ख़ुदा है॥

सिनेमा

वही बुत फ़रोशी वही बुत गरी है।
सनीमा है या संगते आजरी है॥
वह संगत न थी शेवए काफ़री था।
ये संगत नहीं शेवए साहरी है॥

वह मजहब था अक़्वामे अहदे कुहन का।
ये तहजीबे हाजिर की सौदागरी है॥
वह दुनिया की मिट्टी ये दोज़ख़ की मिट्टी।
वह बुतख़ाना ख़ाकी ये ख़ाकस्तरी है॥

सूर्य

ए आफ़ताब! रूहे रवाने जहाँ तू है।
शीराज़ा बन्द दफ़्तर कौनो मकाँ है तू॥
बाएस है तू वजूदे अदम की नोमूद का।
है सब्ज तेरे दम से चमन हस्तो बूद का॥

क़ायम ये उँसूरों का तमाशा तुझी से है।
हर शय में ज़िन्दगी का तक़ाजा तुझी से है॥
हर शय को तेरी जलवा गरी से सबात है।
तेरा ये सोजो साज़ सारापा ह्यात है॥

वह आफताब जिससे ज़माने में नूर है।
दिल है, ख़ैरद है, रूहे रवाँ है, शऊर है॥
ए आफताब हमको ज्याय शऊर दे।
चश्मे ख़ैरद को अपनी तजल्ली से नूर दे॥

है महफ़िले वजूद का सामां तराज़ तू।
यकदाने साकिनाने नशेबो फ़राज तू॥
तेरा कमाल हस्तीय हर जानदार में।
तेरी नोमूद सिलसिलए कोहसार में॥

हर चीज़ की ह्यात का पर्वरदिगार तू।
ज़ाइदगाने नूर का है ताजदार तू।
न इब्तदा कोई, न कोई इन्तेहा तेरी।
आजादे .कैद अव्वलो आखिर .ज्या तेरी॥

———

शौकतअली 'फ़ानी बदायूँनी'

जन्म सन् १८७६ ई०   मृत्यु १६४१ ई०

आपका नाम शौकतअली उपनाम फानी था। आप बदायूँ के रहने वाले थे। आपने बरेली कालिज से बी० ए० और अलीगढ़से एल० एल बी० पास किया। लखनऊ में कई वर्ष वकालत की। फिर बरेली चले गये। कुछ दिनों आगरा मे रहे और अन्त में हैदराबाद के शिक्षा विभाग मे विभिन्न स्थानों पर कार्य करते रहे और वहीं सन् १६४१ ई० मे शरीरान्त हुआ।

काव्य विशेषता

नवीन विषय और नवीन तरकीबे आपके काव्य की विशेषता है। आपका आन्दाज़ ब्यान अनोखा है। संसार की क्षण भंगुरता, हरमांनसीबी, हसरतो नाकामी और हुस्नो इश्क़ के राजो न्याज़ पर आकर्षक ढङ्ग से कविता लिखी है। फिलासफी भी पायी जाती है। ग़ालिब और मीर का रङ्ग नज़र आता है। जहाँ तक शब्द के दर्दोबस्त, फ़ारसी तरकीब के प्रयोग और दर्शन का सम्बन्ध है वह ग़ालिब से हट कर है। इनका जीवन दर्शन गम का दर्शन है। वह मीर के उत्तराधिकारी प्रतीत होते हैं। रशीद अहमद सिद्दिकी ने इन्हें यासयात का इमाम कहा है। फानी का जीवन एक हारा हुआ जीवन है।

हर नफस उम्रे ग़ुलिस्ता की है मइयत "फ़ानी"
ज़िन्दगी नाम है, मर मर के जिये जाने का।

जहाँ तक उर्दू शायरी का सम्बन्ध है फानी के कलाम ने ग़ज़ल को एक नवीन मेज़ाज तथा एक नया लहजा दिया जिसमे ग़मगीनी के अतिरिक्त एक आकर्षण और संगीत भी है।

ग़ज़लियात

१

मर के टूटा है कहीं सिलसिलये क़ैदो हयात।
मगर इतना है कि जंजीर बदल जाती हैं॥
आबरु इश्क़ तग़ाफ़ुल भी है बेदाद भी है।
वही तक़सीर है ताज़ीर बदल जाती है॥

कहते कहते मेरा अफ़साना गिला होता है।
देखते देखते तक़दीर बदल जाती है॥
रोज है दर्दे मुहब्बत का निराला अन्दाज।
रोज़ दिल में तेरी तस्वीर बदल जाती है॥

घर मे रहता है तेरे दम से उजाला ही कुछ और।
यह वह खुर्शीद की तनवीर बदल जाती है॥
ग़म नसीबों में है "फ़ानी" गमें दुनिया हो कि इश्क़।
दिल की तक़दीर से तदबीर बदल जाती है॥

२

खुशी से रंज का बदला यहाँ नहीं मिलता।
वह मिल गये तो मुझे आसमां नहीं मिलता॥
हज़ार ढूँढ़िये उसका निशा नहीं मिलता।
जमीं मिले तो मिले रास्ता नहीं मिलता॥

वह बद गुमां कि तुझे ताबे तेज़े जीस्त न हो।
मुझे यह ग़म कि ग़मे जावेदा नहीं मिलता॥
तुझे ख़बर है तेरे तीर बेपनाह की खबर।
बहुत दिनों से दिले नातवाँ नहीं मिलता॥

दयारे उम्र में अब कहते यह हैं "फ़ानी"।
कोई अजल के सिवा मेहरबाँ नहीं मिलता ॥

३

कारवाँ गुज़रा किया हम रह गुजर देखा किये।
हर कदम पर नक़्शे पाये राहबर देखा किये ॥
दर्द मंदाने वफा की हायरे मजबूरियाँ।
दर्दे दिल देखा न जाता था मगर देखा किये ॥

यास जब छायी उमीदें हाथ मल कर रह गईं।
दिल की नब्जें घुट गईं और चारगर देखा किये ॥
तू कहाँ थी ए अजल ना मुरादों की मुराद।
मरने वाले राह तेरी उम्र भर देखा किये ॥

जीस्त थी "फानी" बक़द्रे फुरसते तम हीदे शौक।
उम्र भर हम परतवे नूरे बशर देखा किये ॥

४

मुझको मेरे नसीब ने रोजे अजल न क्या दिया।
दौलते दो जहाँ न दी एक दिले मुक्तदा दिया ॥

दिल ही निगाहे नाज का एक अदा शनास था।
जलवे बरक़े तूर ने तूर को क्यों जला दिया ॥

अब मेरी लाश पर हुजूर मौत को कोसते तो हैं।
आपको यह भी होश है किसने किसे मिटा दिया ॥

आप हम अपनी आग में ए ग़में इश्क़ जल बुझे।
आग लगे इस आग को फूँक दिया जला दिया ॥

दिल में समा के फिर गई आस बँधा के फिर गई।
आज निगाहे दोस्त ने काबा बना के ढा दिया ॥

यूँ न किसी तरह कटी जब मेरी जिन्दगी की रात।
छेड के दास्ताने गम दिल ने मुझे सुला दिया॥

यास ने दर्द ही नहीं हक़ तो यह है दवा भी दी।
"फ़ानी" ऐ नाउमीद को मौत का आसरा दिया ॥

५

रह जाय या बला से ये जान रह न जाय।
तेरा तो ए सितमगर अरमान रह न जाय ॥

जो दिल की हसरते हैं सब दिल में हो तो बेहतर।
इस घर से कोई बाहर मेहमान रह न जाय ॥
ए सोजे गम जलादे ए दर्द खूं रुला दे।
कुछ उनकी दिल्लगी का सामामान रह न जाय ॥

सब मंजिले हुई तय महशर है और ए दिल।
ये एक रह गया है अरमान रह न जाय ॥
आकर पलट न खाली ए गये जार ले जा।
"फ़ानी" के सर तेरा इहसान रह न जाय ॥

६

एक मुअम्मा है समझने का न समझाने का।
जिन्दगी का है को है ख्वाब है दिवाने का ॥
जिन्दगी भी तो पशीमां है यहाँ लाके मुझे।
ढूंढती है कोई हीला मेरे मर जाने का ॥

दिलसे पहुँची तो है आँखो में लहू की बूंदे।
सिलसिला शीशऽसे मिलता तो है पैमाने का॥
चश्मे साकी असरे मय से नहीं है गुल रंग।
दिल मेरै खून से लबरेज है पैमाने का॥

हमने छानी है बहुत देरो हरम की गलियाँ।
कहीं पाया न ठिकाना तेरै दीवाने का॥
हर नफस उम्रे गुजिश्ता की है मइयत "फ़ानी"।
जिन्दगी नाम है मर मर के जिये जाने का॥

७

दुनियाँ मेरी बलासे मंहगी है या सस्ती है।
मौत मिले तो मुफ़्त न लूँ हस्ती की क्या हस्ती हैं॥
आबादी भी देखी है बीराने भी देखे है।
जो उजड़े और फिर न बसे दिल वह निराली बस्ती है॥

जान सी शय बिकजाती है एक नज़र के बदले में।
आगे मरजी गाहक की इन दामों तो सस्ती है॥
जग सूना है तेरे बगैर, आँखों का क्या हाल हुआ।
जब भी दुनियाँ बस्ती थी, अबभी दुनिया बस्ती है॥

आँसू थे सो .खुश्क हुये जी है कि उमड आता है। '
दिल पे घटा सी छाई है खुलती है न बरसती है॥
बस्ती बसना खेल नहीं बस्ते बस्ते बस्ती है।
'फानी' जिस में आँसू क्या दिल के लहू का काल न था॥
हाय वह आँख अब पानी की दो बूंदों को तरस्ती है।

हसरत मोहानी

जन्म् सन् १८७५ ई०　　　　　　　　　　मृत्यु सन् १९५१ ई०

मौलाना सैयद फ़ज़्लुलहसन हसरत का जन्म कस्बा मोहान जिला उन्नाव मे सन् १८७५ ई० में हुआ। पिता का नाम सैयद अजहर हुसैन था। सन् १९०३ ई० मे अलीगढ से बी० ए० किया। विद्यार्थी जीवन ही से शेरो शायरी का बहुत शौक था। आप शायरी मे मुशी अमीरउल्ला तसनीम के शागिर्द थे। आप एक पुरानी पत्रिका उर्दूए मुअल्ला के सम्पादक भी थे। यही नहीं साहित्य सेवा के साथ ही साथ स्वतंत्रता युद्ध के एक बहुत बड़े सेनानी भी थे। आपके चार दीवान प्रकाशित हो चुके हैं दीवाने गालिब की टीका लिखी है जो कि आज तक जितनी भी टीकायें हैं। सबमें बहुत अच्छी मानी जाती है। आप अपनी शायरी के विषय मे स्वयं कहते हैं।

है ज़बाने लखनऊ में रंगे दिल्ली की नो मूद।

तुझसे 'हसरत' नाम रोशन शायरी का होगया॥

हसरत वर्तमान समय के कवियो मे सर्वश्रेष्ठ गज़ल कहने वाले समझे जाते थे। कलाम मे जिद्दत है। उर्दू गज़ल को नवीन ढंग से कह कर उस मे एक नवीन धारा का संचार किया। आपके शेर में धार्मिक, राजनैतिक रंग झलकता है। स्वतंत्रता संग्राम मे भाग लेने के कारण भारत सरकार की ओर से आप की स्त्री और बच्चों को वजीफा मिलता है। सन् १९५१ ई० में इस संसार से विदा हो गये।

ग़ज़लियात

१

अब तो उठ सकता नहीं आँखो से बारे इन्तेजार।
किस तरह काटे कोई लैलो नहारे इन्तेज़ार॥

उनकी उलफ़त का यकीं हो उनके आने की उमीद।
हों ये दोनों सूरतें तब है बहारे इन्तेज़ार॥
उम्र कीजे सर्फ़ यादे गैसू व रुख़सारे पर।
यूँ बसर ले जाइये लैलो नहारे इन्तेज़ार॥

जानो दिल का हाल क्या कहिये फ़राके यार में।
जान मजरुहे अलम है दिल फ़ेगारे इन्तेज़ार॥
मेरी आहें नारसा मेरी दुआएं ना कबूल।
या एलाही क्या करूं मै शर्म सारे इन्तेज़ार॥

सब्र की ताक़त नहीं बाकी दिले मायूस में।
देखिये क्योंकर बसर हो रोजगारे इन्तेजार॥
है दिले मसरूर "हसरत" एक तरबे ज़ारे उमीद।
फूँक डाले गर न इस गुलशन को नारे इन्तेजार॥

२

निगाहे नाज़ जिसे आशनाए राज करे।
वह अपनी खूबीये किस्मत पे क्यों न नाज करे॥

तेरे सितम से मैं खुश हूँ कि गालेबन यूँ भी।
मुझे वह शामिले अरबाबे इम्तेयाज़ करे॥
ग़मे जहाँ से जिसे हो फराग़ की ख़्वाहिश।
वह इनके दर्दे मुहब्बत से साज़ बाज करे॥

दिलों को फ़िक्रे दोआलम से कर दिया आज़ाद ।
तेरे जुनूंका खुदा सिलसिला दराज करे ॥
खे़रद का नाम जुनूँ पड़ गया जुनूँ का खेरब ।
जो चाहे आपका हुस्ने करिश्मा साज करे ॥

उमीदवार है हरसिम्त आशिक़ो के गिरोह ।
तेरी निगाह को अल्लाह दिल नवाज़ करे ॥
तेरे करम का सज़ा वार तू नहीं "हसरत" ।
अब आगे तेरी ख़ुशी है जो सरफ़ेराज़ करे ॥

२

गुलशन में न दिल बुलबुले नाकाम लगाये ।
पिन्हाँ यहीं सैयाद भी है दाम लगाये ॥

ये बात अजब आदते ईनसाँ में है दाखिल ।
तक़दीर का करके खता नाम लगाये ॥
एक सिम्त कहीं बज़्मे तरब में कोई मसरूर ।
होंठों से है मये गुलफ़ाम लगाये ॥

और एक तरफ बिस्तरे ग़म पर कोई महजूर ।
छाती से पड़ा है दिले नाकाम लगाये ॥
मसजिद में कहीं महुए एबादात हैं ज़ाहिद ।
जन्नत की दिलों में तमए खाम लगाये ॥

बैठा कहीं राहे खराबात मुग़ांमें ।
दुकाने हविस कोई मए आशाम लगाये ॥
हर हाल में राजीबरजा हम हैं कि "हसरत" ।
क्या दख़्ल जो इन पर कोई इलजाम लगाये ॥

४

अपना सा शौक औरों में लायें कहाँ से हम ।
घबरा गये है बेदिलीये हमजवा से हम ॥
कुछ ऐसी दूर भी तो मंजिले मुराद ।
लेकिन ये जब कि छूट चले कारवाँ से हम ॥
मालूम सब है पूछते हो फिर भी मुद्आ ।
अब तुमसे दिल की बात कहें क्या ज़बा से हम ॥
मायूस भी तो करते नहीं तुम जेराहे नाज ।
तंग आगये है कशमकशे इम्तेहा से हम ॥
है इम्तहाये यास भी एक् इब्तेदाये शौक ।
फिर आगये वही पे चले थे जहाँ से हम ॥
"हसरत" फिर और जाके करें किसकी बंदगी ।
अच्छा जो सर उठायें भी इस आस्ता से हम ॥

५

चेहरए यार से नकाब उठा, दिल से एक शोरे इज्नेराब उठा ॥
रात पीरै मुगा की महफिज से, जो उठा मस्त उठा खराब उठा ॥
नाज बेजा उठाये थे उनके, एदिल अब नाजे इज्तराब उठा ॥
मैकशों से न मुहतसिब की चली, आखिरकार ला जवाब उठा ॥
मस्त सबहाय शौक है "हसरत", हम नशीं साग़रे शराब उठा ॥

६

मर के हम खाके राह यार हुये, सुरमये चश्मे एतबार हुये ॥
फिक्रे कौनैन से नजात मिली, कैदिये इश्क रस्तगार हुये ॥
मेरी महरूमियों की हद न रही, तेरे इहसान बेशुमार हुये ॥
न हुआ कोई सरफराज कमाल, जब हुए तेरे खाकसार हुये ॥
क्यों है बेकार जुस्तुजू "हसरत", वो न होंगे न वो दोचार हुये ॥

७

जो वह नजर ब सरे जुल्फ़े आम हो जाय।
अजब नहीं कि हमारा भी काम हो जाय॥

शरावे शौक़ की कीमत है नक़द जाने अजीज।
अगर ये बाएसे कैफ़े दोवाम हो जाय॥

रहीने यास रहें अहले आरजू कब तक।
कभी तो आप का दरबार आम हो जाय॥

जो और कुछ हो तेरी दीद के सिवा मजूर।
तो मुझ पे ख़्वाहिशे जन्नत हराम हो जाय॥

जो दूर ही से हमे देख लें यही है बहुत।
मगर क़बूल हमारा सलाम हो जाय॥

सुना है बर सरे बख़शिश है आज पीरे मुग़ां।
हमें भी काश अता कोई जाम हो जाय॥

तेरे करम पे है मौकूफ़ कामरानिये शौक़।
ये नातमाम एलाही तमाम हो जाय॥

सितम के बाद करम है जफा के बाद अता।
हमें है बस जो यही इलतेज़ाम हो जाय॥

अता हो सोज वह यारब जुनूने "हसरते" को।
कि जिस से नवता ये सौदाय ख़ाम हो जाय॥

८

हुस्ने वे पर्वा को खुद बीनो खुद आरा कर दिया।
क्या किया मैंने कि इजहारे तमन्ना, कर दिया॥

बढ़ गईं तुम से तो मिल कर और भी बेताबियां।
हम ये समझे थे कि अब दिल को शकीबा कर दिया॥
अब नही दिल को किसी सूरत किसी पहलू क़रार।
इस निगाहे नाज़ ने क्या सेहर ऐसा कर दिया॥

तेरी महफिल से उठाता ग़ैर मुझको क्या मजाल।
देखता था मै कि तूने भी इशारा कर दिया॥
सब ग़लत कहते थे लुत्फे यार को वजहे सकूँ।
दर्दे दिल उसने तो "हसरत" और दूना कर दिया॥

सीमाब अकबराबादी

जन्म १८८१ ई०　　　　मृत्यु ३० जनवरी सन् १९५१ ई०

आपका नाम आशिक हुसैन तथा उपनाम सीमाब था। पिता का नाम मौलवी मुहम्मद हुसैन सिद्दीकी था। वतन अकबराबाद (आगरा) है। आप अरबी फारसी के आलिम और उर्दू के उच्च श्रेणी के कवि थे। अरबी, फारसी के अध्ययन के बाद आपने गवर्नमेंट कालेज अजमेर में विद्याध्ययन किया। कुछ दिनों रेलवे में नौकरी की। यह वह समय था जब कि आपकी धार्मिक नज्मों ने हर एक मोमिन का हृदय गरमा दिया था। चूँकि साहित्य सेवा के लिये ही ईश्वर ने आपको पैदा किया था अतः आपने नौकरी छोड दी और आगरा में १९२१ ई० में कसरुल अदब की नींव डाली। आपने तीन मासिक पत्रिकायें भी निकाली-पैमाना, शायर, शायर आज भी बम्बई से प्रकाशित होता है। साप्ताहिक समाचार पत्र तोज निकाला जो बहुत चला। आप दाग़ देहलवी के शागिर्द हैं। आप भारतवर्ष के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कवि हैं। जिस प्रकार दाग़ के बहुत से शिष्य हर जाति हर कौम के थे वैसे ही आपके भी शिष्य हिन्द वो पाक में हैं। इनमें से बहुत उस्तादाना हैसियत रखते हैं। आगरा स्कूल आप ही का कायम किया हुआ है। आपने २५० से अधिक पुस्तकें लिखी हैं जो बहुत लोकप्रिय हैं। आपने कविता के अतिरिक्त गद्य में नाटक इत्यादि भी लिखा है। आप की पुस्तकों में से कुछ जो सबसे अधिक लोक प्रिय हैं ये हैं—कलीमें अजमकारे इमरोज, साजो आहग, वफा की देवी, हालाते हाली। अन्त में आप कराची चले गये और वहीं देहावसान ३० जनवरी सन् १९५१ ई० में हुआ।

काव्य विशेषता—

कविता में रवानी दृढता तथा सजदिगी है। आपने गजल के अतरिक्त नज़्म मे एक जान डाल दी। न्याज ने आप पर आलोचना करते हुए लिखा था कि "हजरत सीमाव दिल से नहीं दिमाग से शायरी करते है।" इसका यह अर्थ नही निकालना चाहिये कि कलाम मे प्रभाव कम है। उच्च श्रेणी की वह शायरी है जिस मे दिलो दिमाग का सन्तुलन बराबर और खुशगवार हो।

इसका अर्थ ये लगाना बहुत बड़ी गलती है कि सीमाव साहब की शायरी तअस्सुर से खाली है। इनके यहाँ ऐसे अश्आर है जिससे न्याज़ साहब की दलील गलत सिद्ध होती है। जहाँतक वर्णन की दृढता, भाषा के परिमार्जित रूप, सफाई और शायरी के सिद्धान्त का सम्बन्ध है इसमें यह माने हुये उस्तादों मे एक थे।

मेरे नक़्शे मुहब्बत कहाँ कहाँ न बने

ज़माने खलक़ पे खामोश दास्ता न बने।
कोई किसी का मुहब्बत में राजदा न बने॥

वह जादह क्या, जो न पाय तलब से हो पामाल।
वह राह क्या, जो गुज़र गाहे कारवा न बने॥

मैं खाकसार हूँ, फिर मुझ से सरगेरानी क्यों?
ज़रा ज़मीन से कहदो कि आसमाँ न बने॥

पहुँच गये सरे मंजिल ख्याल से पहले।
खुदा का शुक्र कि हम गरदे कारवाँ न बने॥

ज़मीन तंग हो यों मर्द पर, मजाल नहीं।
वहीं ह्यात का मर्कज़ बना, जहाँ न बने॥

जिसे न तजरब्बा हो रंजे नारैसाई का।
वह कारवा में मेरे मीरे कारवाँ न बने॥

मुक़ामाते नज़र

यह क्या कमाले ज़ेबे नज़र देखता हूँ मैं।
जलवा को जलवा निगर देखता हूँ मैं॥

लड़ती हुई नज़र से नज़र देखता हूँ मैं।
वह मुझ को देखते है, जिधर देखता हूँ मैं॥
बाज़िचए जहाँ मे जिधर देखता हूँ मैं।
अपने ही शोवदाते नज़र देखता हूँ मै॥

ए मेरे चाँद ए मेरी खिलवत के आफताव।
तेरी ही राह शामो सहर देखता हूँ मैं॥
अल्ला रे नशरियते पायाने इंतेजार।
हर सासं खूने यास में तर देखता हूँ मैं॥

जिस शाखपर जला था मेरा आश्याँ वहाँ।
अव तक हुजूमे वर्क़ो शरर देखता हूँ मैं॥
फ़ितरत को भी है यों नहीं आज़ादियाँ नसीव।
इसको असीरे शामो सहर देखता हूँ मैं॥

मेरे तस्व्वुरात की सिजदा गरी न पूछ।
अकसर जबीने हुस्न पे सर देखता हूँ मैं॥
अल्लाह है जो मेरी दुआएँ क़बूल हो।
इनको भी उनके ज़ेरे असर देखता हूँ मैं॥

उस वक़्त तक है ये ख़लिशे पर्दए हेजाब।
जबतक उन्हें बर्कदे नज़र देखता हूँ मै॥
लेना है इनक़लाब से फूलों का .ख़ूँ बहा।
कलियो को आज सीन सिपर देखता हूँ मै॥

होती है खत्म सरहदे इलाव ला जहाँ।
उससे परे मुक़ामे नज़र देखता हूँ मै॥
"सीमाब" बे सवब नहीं दामन कुशी मेरी।
फ़ितने ¨मियाँने राहगुज़र दखता हूँ मैं॥

अफ़क़ारे परेशाँ

आज इसकी है, कल उसकी बर बिनाये इनक़लाब।
एक मरकज़ पर कभी दुनिया ठहर सकती नहीं॥
आग दोजख़ की उन्हें लाकर पिलानी चाहिए।
जिनकी नीयत ख़ूब पीने से भी भर सकती नहीं॥
चन्द लमहे ग़ौर मुस्तकबिल पे कर उस मुल्क के।
एक साइत अम्न से जिसकी गुज़र सकती नहीं॥

अपनी कमज़ोरी पे भी तूफ़ाँ में हो जिसको ग़ुरूर।
डूब तो सकती है वह कश्ती उभर सकती नहीं॥
आलमे बालाव पस्ती पर है नाहक़ यूरिशें।
फ़ितरतन तरतीव हस्ती की विखर सकती नहीं॥

महफ़िले अहले तदब्बुर में न कर सइये फ़रेब।
लोमडी शेरों के नश्शे मे बफ़र सकती नहीं॥
क्या मिटेंगे ग़ारते अफ़राद से जजबाते क़ौम।
जिस्म हो सकते हैं फ़ानी रूह मर सकती नहीं॥

माँद कर सकती है तारों को शुआएँ महर की।
अकसरियत अक़लियत को हज़्म कर सकती नहीं॥
गर न होगी आज तो वर्बाद होगी कल वह क़ौम।
जो खुदा से खेल तो सकती है डर सकती नहीं॥

मुत्तहिद हो कर करें जबतक न सब कौमें ख़्याल।
मुल्क की हालत क़यामत तक सुधर सकती नहीं॥
कर हिफाजत ज़िन्दगी की फिर वका की जेहद कर।
छूट कर फूलों से शाखे गुल सवँर सकती नहीं॥

रोह तलब मे फ़ुरस्ते कतए सफर कहाँ।
क्या जाने अपनी शाम कहाँ हो सहर कहाँ?
हैं नार ए नक़ीबा की मंजिल है सामने।
यह एक नवेद नव है मगर मोतबर कहाँ?

परछाइयों से जो एक नजर आती है दूर से।
यह सिर्फ घर का ख्वाब है नादा घर कहाँ?
तसलीम है मजज़ की वाजीगरी मगर।
हे सुतमईन निगाहे हक़ीक़त निगर कहाँ?

दुनियाँ की वसअतें हैं फरेवे सकूँनो अमन।
हो ख़त्म भी अगर तो सरावे नज़र कहाँ?
हैं फ़िक्र मे हज़ार अन्धेरे भरे हुये।
यानी अभी हुई शबे ग़मकी सहर कहाँ?

अहले चमन है सुतमहन और ये ख़बर नहीं।
सइयाद अब विछायगा दोस दिगर कहाँ?
ज़ख्मे नजर है मारकये "इन्डोनेशिया"।
है एशिया में अम्नो अमा का गुज़र कहाँ?

बरमा के वाक़यात से घबरा रहा है दिल।
अब देखिये हो शोरिशे अरबाबे शर कहाँ?
तकसीम वैन लाल ओ गुल हो गया चमन।
लेगी पनाह फितरते वर्को शरर कहाँ?

नासाजगार सा नज़र आता है इंक़लाब।
है इंक़लावे वक्त से लेकिन मुफिकर कहाँ?
शाहंशाही से मर्दे मुजाहिद को बैर है।
अहले अम्न को फुर्सते ताजो कमर कहाँ?

उचटेगी बार बार अभी कारवाँ की नींद।
इमकान .ख्वाबे सैर, 'सरे रहगुज़र कहाँ?
मुमकिन है फिर हो दूर ग़ुलामी की बाज गश्त।
आज़ाद हो गया हूँ मगर बालों पर कहाँ?

मुमकिन है फिर जराहते कुन्ह की वा शगुफत।
तसकीन मुझको देके चला चारहगर कहाँ?
"एक उम्र चाहिये कि गवाराहो दर्दे इश्क"
रखी है आज लज्जते ज़ख्मे जिगर कहाँ?

नूह नारवी

आपका नाम मुहम्मद नूह उपनाम नूह है। आप नारा जिला इलाहाबाद के रइसे आजम है। अरबी फारसी का अधिक अध्ययन किया है। शेरो शायरी का शौक बचपन ही से है। आप वर्तमान कवियो में कोह मश्क कवि है इसीलिए उस्तादुशशोअरा कहे जाते है। आप हजरत दाग देहली के उत्तराधिकारी है। जिसकी सनद आपको हजरत साएलदेहलवी से मिली है।

काव्य विशेषता:—

आपके कलाम में रोजाना की बोल-चाल, सलासत और बन्दिश का एक विशेष आनन्द आता है। आप आतिश के इस शेरकी खूबी को समझाते हुए शायरी करते है।

बन्दिशे अलफाज़ जुड़ने से नगो के कम नही।
शायरी भी काम है आतिश मोरस्सा साज़ का॥

आपका शेर कहने का ढंग वर्तमान कवियो से बिल्कुल अलग है। कलाम उत्तम होता है मुहावरे खूब जनते है।

ग़ज़लियात

१

वाइज़ मस्ते बाद को पैमाना हो गया।
ज़ाहिर कमाल साक़ीये मेख़ाना हो गया॥
तुम को मेरे जुनूँ पे तअज्जुब फुजूल है।
दीवाना कह दिया मुझे दीवाना हो गया॥

वाइज़ का कौल है कभी रहता नहीं ये बन्द ।
तौबर का दर भी क्या देर मेख़ाना हो गया ।
उसकी निगाह उठ गई महफ़िल मे जिस तरफ ।
बेहोश हर यगाना व वेगाना हो गया ॥

क्यों कर वो हमसे मिल गये ये क्या बताएँ हम ।
आपस में उठते बैठते याराना हो गया ॥
एक एक शक्ल अपनी जगह लाजवाब थी ।
मैं बुत कदे को देख के दीवाना हो गया ॥

पहलू को देखते हैं तो ए 'नूह" दिल नही ।
क्या वह भी नजे हिम्मते मर्दाना हो गया ॥

२

वक़्त से पेशतर नही आती ।
मौत भी उम्र भर नही आती ॥
फिर गई आप की निगाह करम ।
वह नज़र अब नज़र नहीं आती ॥

रूह भी सख्त बेमुरोवत है ।
ये जो निकली तो घर नही आती ॥
किस से पूछूँ कफस में हाले चमन ।
अब हवा भी इधर नही आती ॥

बढ़ गया दर्द और दरमाँ से ।
शर्मए चारा गर नही आती ॥
मरने वाला तेरा वहाँ पहुँचा ।
जिस जगह से खबर नहीं आती ॥

तुझ में ए नूह शायरी के सिवा।
कोई खूबी नजर नहीं आती॥

२

फ़ुरकते यार में जीना है न मरना अच्छा।
यूँ गुज़रती हो तो दुनिया से गुजरना अच्छा॥

बेकसी कहते है जिसको वह बुरी होती है।
कस्मपुरसरी में न जीना है न मरना अच्छा॥
जब्ते उलफत का नतीजा कोई हम से पूछे।
नाला करना है बुरा नाला न करना अच्छा॥

खिज्र मिल जायें तो ये उक्दूए दुश्वार खुले।
मरने से जीना है न जीने से मरना अच्छा॥
अश्क आखों से निकलकर मेरे दामन में रहे।
अपनी मंजिल पे मुसाफ़िर का ठहरना अच्छा॥

सूरतें नक़्शे कदम मिट गये तो क्या हासिल।
अपने मौके से है दुनिया में उभरना अच्छा॥
जिससे दुनिया में बक़ाय अबदी हासिल हो।
वह कजा अच्छी वह मोत अच्छी वह मरना अच्छा॥

रखना अन्दाज हजारों नजर आये मुझको।
काम करने से कोई न काम करना अच्छा॥
ग़र्क़ कर देते है ये दरया में डुबो देते हैं।
"नूह" से नूह के तूफान मे डरना अच्छा॥

४

जोतेग़े नाज का विस्मिल नहीं है।
हमारी राय मे वह दिल नहीं है॥

बहुत दुश्वार है जीना शबे ग़म।
मगर मरना मुझे मुश्किल नहीं है॥
ये आसानी से हो जायेगी आसा।
मेरी मुश्किल कोई मुश्किल नहीं है॥

निगाहे शौके मजनूँ में है लैला।
मिग़ाँने पर्दए महफ़िल नहीं है॥
तहो वाला किया उल्फ़त ने ऐसा।
जहाँ था उस जगह अब दिल नहीं है॥

तकाजा है जुनूँ का हर कदम पर।
मुसाफिर ये तेरी मंजिल नहीं है॥
ओबूरे बहरे ग़म ए "नूह" क्या हो।
निशाने कश्तीयों साहिल नहीं है॥

५

बादे फ़ना मजारे सरे रहगुजर बना।
जब हम बिगड गये तो हमारा ये घर बना॥
उडने के बाद इश्क में इबरत असर बना।
मेरा ग़ुबार सुरमए अहले नजर बना॥

ज़ाहिद हरममे रह के न मिट्टी खराब कर।
बेहतर तो इस से यह है किसी दिल में घर बना॥
बर्बादिया भी होती है आबादियों के साथ।
मै रो दिया कोई जो जमाने में घर बना॥

ये शक्ल इश्क़े यार ने अब अख्तियार की।
दिल में फ़ुग़ां बना वह फ़ुगां में असर बना ॥
दिल का लगाना "नूह" कोई दिल लगी नहीं।
इस रंजो ग़म में उठाने के काबिल जिगर बना ॥

६

हसरत भी मेरी मोरिदे बेदार रहेगी।
बर्बाद थी बर्बाद है बर्बाद रहेगी ॥

पहुँचेगी मेरी आह कभी अर्शे बरीं पर।
शामिल जो दुआए दिल नाशाद रहेगी ॥
अन्दाज रहेगा जो यही बे असरी का।
फर्याद भी करती हुई फर्याद रहेगी ॥

जिस रंग मे भी हाल हो मेरा न छुपेगा।
नाशाद की तस्वीर भी नाशाद रहेगी ॥
तकलीफे मुहब्बत भी है तालीम मुहब्बत।
गुज़रेगी जो मुझ पर वह मुझे याद रहेगी ॥

यूँ उसको सुनूँगा कोई गोया न सुनेगा।
तासीर से बचती हुई फ़र्याद रहेगी ॥
ए "नूह" निबहें गे न वह शर्तें मुहब्बत।
ये याद रहे ये न उन्हें याद रहेगी ॥

७

कुछ ऐसे हो गये राजो हज़ीं हम।
कि हैं भी और दुनिया में नहीं हम ॥

तड़पना क़ब्र में भी कम न होगा।
फ़लक पर लेके पहुँचेंगे जभी हम॥
कहीं दिल भी न जल कर ख़ाक हो जाय।
करें क्या ज़ब्त आहे आतशीं हम॥

हमारी जिन्दिगी क्या और हम क्या।
बहुत कुछ हूँ मगर कुछ भी नहीं हम॥
ये दावा है हमारे दाग़े दिल का।
मिटाये कोई मिटने के नहीं हम॥

तेरी उलफ़त में वह मजबूरियां है।
कि अपना हाल कह सकते नहीं हम॥
बिगड़ कर "नूह" से कहता है कोई।
तेरे क़ाबू में आने के नहीं हम॥

मेरे नक़्शे मुहब्बत कहां कहां बने

वहा कोई ग़मे उलफ़त का राजदां न बने।
बेग़ैर बात बनाये हुये जहा न बने॥

अदब से कूचए जाना मैं काम ले उश्शाक़।
यही जमीन कहीं रश्के आस्मा न बने॥
गिरेगी बर्क़ यक़ीनन जलेंगे नख़्लो नेहाला।
इसी में ख़ैरे चमन है कि आश्या न बने॥

ब्यान दर्दे मुहब्बत का माहस्ल मालूम।
ये डर रहा हूँ कहीं दिल मेरा जबाँ न बने॥
नज़ाकत उनकी ये कहती है उनसे रुक्के ख़राम।
चलो वह चाल क़दम का कहीं निशा न बने॥

जो हमने काम किये राहे इश्क में चल कर ।
कहाँ कहाँ न वह बिगड़े कहाँ कहाँ न बने ।।
करूंगा मैं दरे महबूब पर जबीं साई ।
जो सर बना है तो क्यों जेब आस्ता न बने ।।

हजार किस्म की सर परे मुसीबत आती है ।
कोई जहा में किसीका मेजाजदां न बने ।।
ब्यानेग़म को भी वह जौर का गिला समझा ।
वहाँ बनाऊं कोई बात किया जहाँ न बने ।।

निगाहे राज को वह दिलकशी सिखाते है ।
ये बनते बनते कही तीर बे अमां न बने ।।
ब्याने ग़मके लिये कुछ हदें मुकर्रर है ।
ज़बां से बात जो निकले वह दास्ताँ न बने ।।

हुये वह इस लिये चुप मेरी इल्लतें जो सुनकर ।
कहीं नही भी निकलकर जबा से हाँ न बने ।।
जनाबे 'नूह' के तूफान से खुदा की पनाह ।
गिरे जो अश्क कहीं बहरे बेकरा न बने ।।

हसरत मोहानी

पृष्ठ १५६

बार—बोझ। लैलो नहार—रात दिन। नारे—अग्नि की। फ़राग़—कामसे छुट्टी पाना।

पृष्ठ १६०

दराज—लम्बा। सिम्त—ओर। सरफ़राज—ऊँचा करना, उत्थान प्रदान करे। सैयाद—व्याध। दाम—जाल। तरब—प्रसन्न, शौक। मसरूर—प्रसन्न। मये गुलफ़ाम—गुलाबी रंग की सुरा। जाहिद—वह व्यक्ति जो संसारिक इच्छाओं को त्यागकर ईश्वर के अतिरिक्त किसी से भी सम्बन्ध न रखे। तमए खाम—व्यर्थ इच्छा। आशाम—पीनेवाला।

पृष्ठ १६१

अस्तां—चौखट। नक़ाब-पर्दा, बुर्क़ा। बे शुमार—असंख्य। खाकसार—गरीब।

पृष्ठ १६२

कैफे दोवाम—सर्वदा रहने वाला आनन्द। अता—मिलना, प्राप्त होना। मौक़ूफ़—ठहराया, निकाला गया।

पृष्ठ १६३

शकीबा—संतोष करने वाला।

सीमाब अकबराबादी

पृष्ठ १६५

खल्क़—संसार। सरगेरानी—परेशानी।

पृष्ठ १६६

मीरे कारवां—काफ़ले का सरदार। वाजिचए—खिलौना। शोबादाते नज़र—दृष्टि की चालबाज़ी। खिलवत—अकेला, मकान का विशेष स्थान। आफ़ताब—सूर्य। बर्को शरर—बिजली और चिनगारी। फ़ितरत—स्वभाव। असीरे शामो सहर—संध्या और प्रातः का बन्दी। जबीनें हुस्न—सौंदर्य की पेशानी।

पृष्ठ १६७

सिपर—ढाल। यूरिश—आक्रमण। सइये फ़रेब—धोखा देने का प्रयत्न।

पृष्ठ १६८

शुआएँ—किरणें। महर—सूर्य। नकीब—चोबदार। तसलीम—स्वीकार।

पृष्ठ १६९

मुजाहिद—वीर, नास्तिको से लड़नेवाला, प्रयत्न करनेवाला। रहगुजर—मार्ग, पथ।

नूह नारवी

पृष्ठ १७०

वाइज—उपदेशक। साक़िये मैखाना—शराब खाने में शराब पिलाने वाला। तअज्जुब—आश्चर्य। फुजूल—व्यर्थ।

पृष्ठ १७१

यगाना—हितैषी। पेशतर—पहले। दरमाँ—इलाज, दवा।

पृष्ठ १७२

फुरकते यार—मित्र का वियोग। कस्मपुरसी—असमजस। नाला—हृदय से जो आह निकले। खिज्र—एक पैग़म्बर जो भूले हुये लोगों को मार्ग बताते है। उक़दए दुश्वार—कठिन समस्या। अश्क—अश्रु। बकाय अबदी—मोक्ष। ग़र्क़—डुबाना। नूह—कवि का नाम और एक पैगम्बर हुये है जिनके समय बहुत भीषण बाढ़ आई थी तूफ़ाने नूह के नाम से प्रसिद्ध है।

पृष्ठ १७३

तेगे नाज़—नाज की तलवार प्रेमिका की ओर सकेत है। बिस्मिल—घायल। इबरत—प्रत्यादेश, पूर्व सोचन।

पृष्ठ १७४

मोरिदे बेदार—विकसित पटल। अर्शे बरी—आकाश। नाशाद—दुखित। तासीर—प्रभाव करना, असर करना। हज़ी—गमगीन, दुखित।

पृष्ठ १७५

आहे आतशी—दर्द से भरी हुई आह जो हृदय से निकले। उश्शाक—आशिक का बहुवचन, प्रेमी। खराम—मटक कर चलना, नाज की चाल।

पृष्ठ १७६

महबूब—मित्र। बहरे बेकरा—विशाल समुद्र।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२	जवल्ली	जिबल्ली
४	ज़िन्नार	जुन्नार
५	खूबा	ख़ूत्रा
६	बझ	बूझ
७	मृत्युसन्	मृत्युमन्
८	हरगि़ज	हरगिज़
१०	सेरे	सैरे
,,	तीरे	तेरे
१२	सेहर	सहर
१३	आ।शफता	आशुफ़ता
१६	मुजल्ला	मुजल्ला हैं
२२	आस्फ़ता	आशुफ़ता
२६	फ्याम	प्याम
,,	या	या
३२	क़त्ल क्यो	क़त्ल करें क्यों
,,	याद कि	याद हो कि
३३	"मोमिन"	"मोमिने"
३५	जह	ज़ह
३६	खन्दे	खन्दै
४३	कोन जाय	कौन जाय
४४	आलम	अलम

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
४५	वगैर	वेग़ैर
,,	आनेमें होगा देर	आनेमें होगी देर
,,	फार	फिर
,,	सागरों	साग़रो
,,	चश्मे	चश्मै
,,	ज़मरै	जुमरै
,,	जाम ख़ास	जाम में ख़ास
४६	से खाने	से कारख़ाने
,,	न पूछे	न पूछ
,,	नक्श या	नक्शे या
,,	वक्त	वक्ते
,,	रुख्राब	रुख़ाब
४७	देहन	दहने
,,	खाना	खाता
,,	हलवाप	हलवाय
४८	गुमशुद्धगी	गुमशुदगी
४६	वाद रुख्रार	वाद रुख़ार
५०	व गुज़र	रंग
५१	कलाम	कलाम
,,	इन कहा	इन का कहा
५२	गोपाई	गोयायी

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
५२	बीमार	बीमर
,,	वह काफिर	वह काफिर
,,	दिल हैं	दिल है
५३	ये	ने
,,	अपना गीर	एना गीर
,,	मिला	गिला
,,	खेर	खैर
,,	आशुफह सरे	आशुफ़तह सरो
५४	गचए ओजे बनाये आलमे इनका नहो = ग़ज़ए औजे बिनाये आलमे इमकां न पूछ।	
,,	परस्ती	पस्ती
,,	धूल धापा	धूल धप्पा
,,	रुव्वाह	ख्वाह
,,	रुव्वार	ख्वार
५५	पे	ये
५८	जेमी दोश	जेंवे दोश
५८	वहार	व़हारे
,,	चश्म	चश्मे
५६	इश्क	इश्के
,,	आफत	आफते
,,	जमींथी	ज़मीं की
,,	रोशन	रौशन
५६	मिल	मिस्ले
६०	कर वे अव	कर वो अब
,,	वे खुदा	वे खुद
,,	वायदे	वादए
६३	दह	दह
६४	क़क्शे	नक्शे
,,	रा ते	रास्ता
,,	नुमा का	नुमा
,,	अनजाम	अजाम
,,	घुल	घुला
,,	इमतेहां	इम्तहा
६५	पिहा	पिंहा
,,	देर	दैर
६६	गोवियो	गोपियों
,,	अज़रते	हज़रते
,,	हंगामा है	नया हंगामा है
७०	अतेव्वा	अतिव्वा
,,	देना है	देना
,,	बाते	बात
,,	खुशियें	खुश्क ये
,,	वक़	वक्त
७१	क़ह	क़ह
७२	याद	यादे
,,	रौनक़	रौनक
,,	सययद	सय्यद

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
७२	ज़ुगराफिये	जुगर्राफ्ये
७३	सींचो	खींचो
,,	हिन्द	हिन्ट Hint
,,	वोस	बोसे
७४	शौक लाये	शौके लैग्राये
,,	रुव्वानी	ख़ानी
७४	जो अक्ल बाज़ारी है।	जो अक्ल सरकारी है॥
,,	वे होजाबी	बे हिजाबी
७५	मुतज़िम	मुंतज़िम
७६	वेगाना था	वेगाना थी
,,	शशैख़	शेख़
,,	पटी	पीटी
,,	पानीपार	पानियर
,,	बुरा उसने	बुरा हो उसने
,,	जो	जौ
७७	जिक़ग्रात	ज़कात
,,	गार	गोर
,,	ही	यही
,,	दखीला	दख़ील
७८	जानी	जात्री
,,	उँचा	ऊँचा
,,	क़ोमी सं	क़ौमी से
८०	लोलूम	ग्रोलूम
,,	होगा	होगई

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
८१	जंजीर	जंजीरे
,,	गोह	गाहे
,,	आशिक़	आशिक़ी
,,	मारेक	मारके
८२	मुग्ररा हूँ	मुग्ररीहूँ
	हनर	हुनर
,,	सरपा	सरापा
८४	विस्तर	बसर
,,	तन	तने
,,	उनको	उनका
,,	मस्ताना	दीवान
८५	ज़वानो	जवानों
,,	हुदी खवाहो	हुदी खवानों
,,	मुतरिफ	मोतरिफ़
८६	हरचन्दग्रास	हरिचन्द दास
८७	आसे	आएँ
९०	फल	फूल
९१	माली खेज़	मानी खेज़
९२	अन्दाजे	अन्दाज़
९३	जूब	जब
९४	निये	पीजिये
,,	मैकशीं	मैकशो
,,	पड़ो	पड़े
९५	ख़राने	ख़रामे
९७	ही से	ही मिस्त्रे से

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
६७	हमारे है आज़ा	हमारे आजा
,,	से आपको	को
,,	ग़ालिक़	ग़ालिब
,,	वज्रगों	बुज्रगों
,,	तख़ल्लुम	तख़ल्लस
६८	तबीयत	ज़हूरे तर्तीब
,,	अबरू	आबरू
,,	यू काग हू	यूं क़ायम हूँ
,,	पास	पासे
६६	गंचे	गु चै
१००	आलेस	आलमे
१०१	आलस	आलम
,,	आहना	आइना
,,	हजरत	हसरत
,,	इस	रस
१०२	चेहरे	चेहरै
,,	साजया	सजाया
,,	गाय पे	गाम पे
,,	चश्म	चश्मै
,,	मेर्द	मर्दें
१०३	अव्वत	अव्वल
,,	हदे सितमा	हद सितमे
,,	गोपा	गोया
१०४	पास	यास
,,	सेहहरा का	सहरा को
१०४	हन	इन
,,	किस के	किस दिन के
१०५	दस्ता	डस्ता
,,	शौकतो	शौकते
,,	थे किस	थे मुझे किस
,,	थी राह	की राह
१०६	ख़ालिक	ख़ालिके
,,	क़रीब की	करीब कि
,,	गुजर जाय	गुजर न जाय
,,	फेरो	करो
,,	मे शुक्र	मे है शुक्र
१०७	खुदा में बह	कुदा मे दह
,,	पीरा	पीरी
,,	महुन	मेहन
१०८	आता	अता
,,	हे	है
,,	वे	बैठ
,,	जागहाँ	नागहाँ
,,	पास	यास
,,	दामने दस्त	दामने दश्त
१११	ख्यालि	ख्याल
१११	मोतक़िदे	मोतक़िद
११२	मुस्फक़ा	मुस्फ़फा
,,	बढ़ी	बढ़ीं
,,	शादे	"शाद"

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
११२	जफा को है	जफ़ा का है जां गुस्ल
११४	जलेवा गर	जलवा गर
,,	जर्रे	जर्रे
,,	क़ी ज़ौत	की ज़ात
,,	अफ़सरद	अफ़सुर्द.
,,	निगहते	निकहते
११५	सौदाई	सौदाई
,,	जवानान	जवानने
,,	मनज़िर	मनाज़िर
११६	मामूए	मामूरें
,,	नसीम	नसीमे
,,	मेय	मय
,,	ख़ामोशी	ख़मोशी
,,	वगशी	वगोशी
११७	दिला	दिल
,,	कशाने	काशाने
११८	ज़ारख़ज़ार	ज़ार ज़ार
,,	तभी	भी
,,	जगल	जंगल
१२१	ज़ो	जो
१२२	जुनं	जुनूं
१२५	का जरूर	थी ज़रूर
१२६	दह	दह
,,	मेरी है	मेरी

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१२७	फ़क्त	फ़ख
,,	तज़ैत	ताडत
,,	ईन्तेही	इन्तेहा
,,	कड़ी मेरी	कड़ी है मेरी
१२८	भए	मए
,,	जस	जिस
,,	तहन्युर	तहइयुर
,,	माया	आया
,,	नेरंग	नैरंग
१३५	औ	और
१३६	सब	लब
१३७	शाला	साला
१४६	कोशिश	कशिश
१४६	ख़िमर्न तू पहले	ख़िमर्न पहले
१४८	गग़रिबी	मग़रिबी
१५०	खेरद	ख़ेरद
१५१	दफ़्तर	दफ़्तरे
,,	वजूदे	वजूदे
,,	सराया	सरापा
१५३	गुलिस्ता	गुज़िश्ता
१५५	मुब्तदा	मुब्तला
१५६	काहे को	काहे को
१५७	देरोहरम	दैरो हरम
१५८	रोशन	रौशन
१६०	खेरव	खेरद

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१६१	इम्तेहाये	इंतेहाये
,,	राह यार	राहे यार
१६१	बाद आता	बाद अता
,,	"हसरते" को	"हसरत" को
१६८	नक़ीवा	नक़ीव
१६६	मुफिकर	मुफ़िर
१७०	वारवी	नारवी
१७०	मस्ते बादको	मस्त बादए
१७१	तौबर	तौबा
,,	देर	दरे
,,	नजे	नज़रे
१७२	कस्मपुरसरी	कस्मपुरसी
१७६	सर परे	सर पर